

कवि नूरमुहम्मद कृत

इन्द्रावती ।

पहिला भाग ।

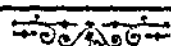
श्यामसुन्दरदास बी० ए० सम्पादित ।



मूल्य १॥)



Nagari-pracharini Granthmala Series No 12



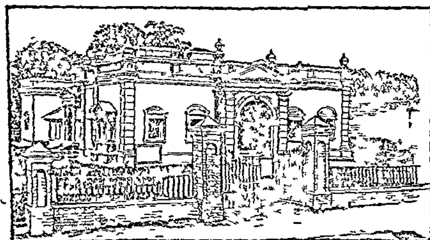
कवि नूरमुहम्मद कृत

इन्द्रावती ।

पहिला भाग ।



श्यामसुन्दरदास बी० ए० सम्पादित ।



काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित ।



BENARES
PRINTED AT THE LAHARI PRESS

1906

निवेदन।

कवि नूरमुहम्मद कृत "इन्द्रावती" का पहिला भाग छाप कर प्रकाशित किया जाता है। इसका इतना ही अंश और छपने को बाकी है। उसके छप जाने पर इस ग्रंथ की सविस्तर भूमिका प्रकाशित की जायगी। जब तक समस्त ग्रन्थ न छप जाय तब तक उसकी भूमिका लिखने का नियम नहीं है। इसी लिये इस ग्रन्थ तथा उसके कर्ता के विषय में जो कुछ मुझे वक्तव्य है वह मैं अभी नहीं निवेदन करता।

इस ग्रन्थ की प्रति मुझे मिर्जापुर निवासी मौलवी अबदुल्लाह द्वारा प्राप्त हुई है जिसके लिये उन्हें मैं अनेक धन्यवाद देता हूं। इस कवि के पोते मौलवी तसद्दुक से उक्त ग्रन्थ की प्रति मौलवी अबदुल्लाह को प्राप्त हुई है। मूल ग्रन्थ फारसी अक्षरों में लिखा था। मौलवी अबदुल्लाह ने संवत् १९५१ में इसकी नकल कैथी अक्षरों में की। इसी अन्तिम प्रति के आधार पर यह ग्रन्थ छापा गया है।

कवि नूरमुहम्मद ने अपना कुछ संक्षेप वृत्तान्त इस ग्रन्थ के पहिले खण्ड में दिया है। पाठकगण इससे ग्रन्थ बनने का समय आदि जान सकते हैं॥

श्यामसुन्दरदास।

१-५-०६

खण्ड सूची ।



इन्द्रावती।



[१] स्तुति खण्ड।

धन्य आप जग सिरजन हारा। जिन बिन खम्भ अकास सँवारा॥
होऊ जग को आपुहि राजा। राज दोऊ जग को तेहि छाजा॥
दीन्हा नैन पथ पहिचानो। दीन्हा रसना ताहि बखानो॥
बात सुनै कहँ सरवन दीन्हा। दीन्हा बुद्धि ज्ञान तेहि चीन्हा॥
गगन कि सोभा कीन्हे सितारा। धरती सोभा मनुष सँवारा॥

आप गुपुत औ परगट, आप आद औ अंत।
आप सुनै औ देखै, कीन्ह मनुष बुधवंत॥१॥

अहद अकेल सो सिरजन हारा। जानत परगट गुपुत हमारा॥
कीन्ह गगन रवि ससि महि मेरा। कोउ नाही जोरी तेही केरा॥
कीन्हा राति मिलै सुख तासो। कीन्हा दिन कारज है जासो॥
घन, सो महि पर भेजत नीरा। पलुअत सूखो भूमि सरीरा॥
सब बिलाय जाइहि एक बारा। रहै तेहि क मुख रवि उँजियारा॥

है स्रोता औ दिष्टा, तेहि सम कोउ न आहि।
जो कुछ है महि गगन महँ, सब सुमिरत है ताहि॥२॥

अरे दोऊ जग के करतारा । कित कै सकउँ बखान तुम्हारा॥
रसना होइ रोम सब मोही । तबहू बरन न पारउँ तोही ॥
है अपार सागर भौ केरा । मोहि करनी को नाव न बेरा॥
कै किरपा मोहि पार उतारो । दया दृष्टि मोहि ऊपर डारो॥
है हमकहँ आलम्ब तुम्हारी । तोहि दाया सो मुकुत हमारी॥

है मग बहुत जगत्त महँ, तिन मग की नहिं चाव।
आपन पथ देखावहु, राखौं तापर पाँव ॥३॥

सुमिरो चेत धरे मन ठाऊ । अरबी नबी मुहम्मद नाऊ ॥
जा कह करता दरस देखाएउ । कै किरपा सब भेद बताएउ ॥
जेहिक बखान अहै लौ लाका । ताहि बखानत दोउ जग थाका॥
चार यार चारिउ जस तारे । दीन गगन ऊपर उँजियारे ॥
अबूबकर औ उमर बखानौ । उसमाँ बहुरि अली कँह जानौ॥

अहदहुते अहमद भएउ, एक जोत दुइ नाउँ।
भएउ जगत के कारने, परेउ मोहम्मद नाउँ ॥४॥

कहौं मोहम्मद साह बखानू । है सूरज दिहली सुलतानू ॥
धरम पन्थ जग बीच चलावा । निबरन सबरै सौं दुख पावा॥
पहिरे सलातीन जग केरे । आए सुहाँस बने हैं चेरे ॥
उहै साह नित धरम बढावै । जेहि पहराँ मानुप सुख पावै ॥
सब काहू पर दाया धरई । धरम सहित सुलतानी करई ॥

धरम भलो सुलतान कहँ, धरम करै जो सार।
सुख पावै मानुप सबै, सबको होइ निबार ॥५॥

कवि अस्थान कीन्ह जेहि ठाऊ । सो वह ठाऊ सबरहद नाऊ ॥
पूरब दिस कइलास समाना । अहै नसीरुद्दी को थाना ॥
है प्रठ जग महँ पथिक रहना । लेहु इहाँसो आगम लहना ॥

जग औ आपुहि कस पहिचानो। तरिवर और बटोहिय जानो ॥
चला जात जस होइ बटोही। आइ छँहाइ बिरिछ तर वोही ॥
जना जुड़ाइ तरिवरतर, धरै पन्थ पर पाँव ।
वास हमार जगत महँ, बूझो तेही सुभाव ॥६॥
आज रइन यह चाँद न ऊआ। आनन्द हरन जगत कर हूआ ॥
साह करबला को दुख सोगू। समुझि समुझि रोवै सब लोगू ॥
रोएउ गगन सेंदुरी नाहीं । रकत आँस है मुख उपराहीं ॥
रोवै बादशाह जग साईं । हम ना रहे करबला ठाईं ॥
देतेउँ सीस दीनपति कारन। करतेउँ जिउ तनमन सब वारन॥
रोवै अच्छर सीस धुनि, सल्स सबिल भाखार।
आज छिपान जगतरवि, जगत भएउ अँधियार॥७॥
वावैला प्यारा गा मारा । आल रसूल बतूल पियारा ॥
उठा चहू दिस ते वावैला । महि सिर परेउ सोग को सैला ॥
पहिरेउ गगन मातमी बागा। परेउ चन्द के हियरे दागा ॥
औ ससि कहु दुख राहु गराहा। सूरज कहँ उपनेउ उर दाहा ॥
इनके बीच हसन का प्यारा। सेहरा लीन्ह रकत के धारा ॥
नूर मोहम्मद जोभतें, कहँ न मातम होइ ।
जिय सो कहु मातम कथा, मन आँखिन सो रोइ ॥८॥
मन दूगसो एक रात मझारा । सूझि परा मोहि सब ससारा ॥
देखेउँ एक नीक फुलवारी । देखेउँ तहाँ पुरुष अउ नारी ॥
दोउ मुख सोभा बरनि न जाई। चन्द सुरुज उतरेउ भुइं आई ॥
तपी एक देखेउँ तेहि ठाऊ । पूछेउँ तासो तिन कर नाऊ ॥
कहा अहै राजा अउ रानी। इन्द्रवति औ कुवर गेयानी॥
आगमपुर इन्द्रावती, कुवर कलिञ्जर राय ।
प्रेम हुते दोऊ कहँ, दीन्हा अलख मिलाय ॥९॥

सरव कहानी दीन्ह सुनाई । कहा दया सेती हो भाई ॥
इन्द्रावति औ कुवर कहानी । कहु भाषा मो हो कवि ज्ञानी ॥
गाढी गाठ परे जहा तोही । छुटि जाय सुमिरेहु तुम मोहीं ॥
आज्ञा दीन्हा तपिय सेयाना । मन जिउ सो आज्ञा मैं माना ॥
होत भोर लिखनी मैं लीन्हा । कहे लिखे ऊपर चित दीन्हा ॥

सन इगयारह सौ रहेउ, सत्तावन उपराह ।
कहे लगेउ पोथी तबै, पाय तपी कर बांह ॥१०॥

कवि है नूर मोहम्मद नाऊ । है पछलग सबको जग ठाऊ ॥
सुनि कविजन खेलत सो बाला । करे चहत खरिहान विसाला ॥
है कवि समै नई तरुनाई । छूट न अबहीं कवि लरिकाई ॥
जाके हिए लरिक बुधि होई । बहुतै चूक कहत है सोई ॥
बिनवत कविजन कहकरजोरी । है थोरी बुधि पूजिय मेरी ॥

चूका देखि सम्हारि के, जोरेहु अच्छर टूट ।
दाया कर मोहि दीन पर, दोस न लाएहु कूट ॥११॥

हो हीना विद्या बुधि सेती । गरब गुमान करौं केहि नेतीं ॥
हो मैं लरिकाई को चेला । कहो न पोथी खेलउ खेला ॥
गुरुजन सो यह बिनतिय मोरी । कोप न मानहि भौंह सिकोरी ॥
दोस बहुत खेलत महं होई । दाया करेहु न कोपेहु कोई ॥
दोस करै जो छोटा आही । मया करै गुरजन कह चाही ॥

• मोहि विवेक कछु नाहीं, नहिं विद्या बल आहि ।
खेलत हैां यह खेल एक, दिष्टा देइ निबाहि ॥१२॥

एक रात सपना मैं देखा । सिन्धु तीर वह तपिय सरेखा ॥
अहे ठाढ मोहि लीन्ह बलाई । कहेसि कि सिन्धु मे बूडहु भाई ॥
मसा छाड पोढा कै हीया । मोती काढहु होइ मरजीया ॥

ससि मोती को हार सवराहु । इन्द्रावति की गीउ मह डारहु ॥
लै मोती दोउ हाथन माहा । भ्रारू रतन सीर चपराहा ॥
अस सपना मैं देखेउँ, जागि उठेउँ अकुलाइ ।
बहुत बूझ संचारेउँ, सपन न बूझा जाइ ॥१३॥
चित औ चेत बहुत मे धरा । तब वह सपन बूझि मोहि परा ॥
सिन्धु समा मनको पहिचानेउ । मोती समा बचन कह जानेउ ॥
हार गुहन बूझेउ चउपाई । रतन ग्रीव कह रतन बडाई ॥
मनुप सुबचन कहे सो लहई । बचन नरस मोती सो अहई ॥
बचन एक करतार निसारा । भा तेहि बचनहुते ससारा ॥
बचन हसावै मनुष्य कहँ, बचन रोवावै ताहि ।
बचनहु तें यह जगत मो, कीरत परगट आहि ॥१४॥
है मन फुलवारी हो भाई । फूल समाँ यह बचन सोहाई ॥
बचन अरथ है वास समाना । कवि स्रोता है भवर सयाना ॥
अचरज ऐस फूल पर अहई । चारी माँह कली नित रहई ॥
जब वह फूल तजत फुलवारी । विक्रमत वास देत अधिकारी ॥
जुगजुग रहत न ततु कुम्हिलाई । दिन दिन वास बढत अधिकाई ॥
मन चाहत सो अस पुहुप, आज चुनौं भरि गोद ।
हार गूंथि कै पहिरेउँ, मनमों बाढ़ै मोद ॥१५॥
हिया कहा दुइ हार सवारहु । रवि औ कमल गले मह डारहु ॥
बुद्धि कहा दुइ हार बनावहु । मालति मधुकर कह पहिरावहु ॥
तेहि पल तपसीं दरस देखाएउ । मोहि सग एहि बात सुनाएउ ॥
राजकुअर रानी इन्द्रावती । हैं रवि कमल औ भवर मालती ॥
चुनि परसुन दुइ हार सवारहु । तिनके ग्रीव बीच लै डारहु ॥
अज्ञा मान तपी कर, चलेउँ जहां फुलवार ।
खुला न पायउँ द्वार को, मालिहि दिएउँ पुकार ॥१६॥

आएउ माली सुनत पुकारा। खोलेउ फुलवारी का द्वारा ॥
पैठेउ फुलवारी मह जाई। रहसेउ देखत फूल निकाई ॥
तन पलुहा बारी की नाईं। मन भा फुलवारी तेहि ठाईं ॥
माली कहा जएन मन होई। लेहु फूल नहि बरजत कोई ॥
जब आज्ञा मालिहि सो पाएउ। तब मैं फूल चुनै पर आएउ ॥

किरपा सो बारी मह, माली दीन्हा साथ।
आडे कोउ न आएउ, मैं फुलवारी हाथ ॥१७॥

रहल न आगर रूप छिपाना। आपुहि परगट करै निदाना ॥
जो रम रूप सो बाधहु द्वारा। जाइ झरोखे चितवै प्यारा ॥
सिरजनहार छिपा ना रहा। आपुहि फेर चिन्हावै चहा ॥
तब यह जग करतार सवारा। चीन्ह पडा वह सिरजन हारा ॥
मानुष फूल सुरस सी नाऊ। धरि धरि भा परगट सब ठाऊ ॥

आपुहि भोगि रूप धरि,जगमो मानत भोग।
आपुहि जोगी भेस होइ,निसदिन साधत जोग॥१८॥

अलप प्रेम कारन जग कीन्हा। धन जो सीस प्रेम मह दीन्हा ॥
जाना जेहिक प्रेम मह हीया। मरै न कबहू सो मर जीया ॥
प्रेम खेत है यह दुनियाई। प्रेमी पुरुष करत बोवाई ॥
जीवन जाग प्रेम को अहई। सोवन मीचु वो प्रेमी कहई ॥
आग तपन जल चाल समूझो। पुनि टिकाव माटी कह बूझो ॥

हो प्रेमी है प्रेम को, चचलताइ बाय।
जा मन जामां प्रेम रस,भा दोउ जग को राय॥१९॥



[२] जन्म खण्ड।

राजा एक कलिञ्जर ठाऊ । रहा सो निर्प को भूपति नाऊ॥
तेहि घर पुत्र लीन्ह अवतारा। दीपक सोभा घर उजियारा॥
धन औ पुत्र पियारा होई। दोऊ कहँ चाहै सब कोई॥
भा आनँद सो मङ्गलचारा। बाहर भीतर भा झनकारा॥
राजैं पण्डित वेग हँकारेउ। पडित आइ सुजनम बिचारेउ॥

कहा पुत्र के हीयरे, बाढै प्रेम वियोग।
रूप एक पर रीझै, तेहि नित साधै योग॥१॥

राजकुअर तेहि राखा नाऊँ। जनम नछत्र घड़ी के भाऊँ॥
भा सेयान जब राजकुमारा। मात तेहिक जगछाडि सिधारा॥
पढि विद्या भा पण्डित स्याना। भूपति के मन माह समाना॥
गुरु औ पिता अनन्द मनावैं। चेला सुत जो पण्डित पावैं॥
राजा हिये अनन्द बढावा। पुत्र सरेखा पण्डित पावा॥

राजैं पुत्र बिआहा, सुन्दर रानी साथ।
चढ़ी जोत आनन्द की, सूर चन्द के हाथ॥२॥

भूपति राय जगत तजि गयेऊ। कुअर राज पर राजा भयेऊ॥
जगत रीत जानै सब कोई। मरै पिता सुत राजा होई॥
पिता होइ जब माटी माहाँ। तब सुत होइ पाट उपराहाँ॥
पिता राज पर भा वह राजा। धरम दमामा चहुदिसि बाजा॥
धरमी रीत धरम की राखा। अधरम बचन न काहू भाखा॥

करै कर्म जो राज को, बसै ग्राम उज्जार।
ग्रामा नित्त असीसहीं, अचल करै करतार॥३॥

कालिञ्जर गढ वरनि न पारो । ऊच बहुत किमि चित्त सँचारो ॥
कवि चित गगन पाव तर डारै ।तब गढ ऊच बखानै पारै ॥
भूधर पर भूधर गढ घेरा । दीप भयेउ भूधर तेहि केरा ॥
देवतन की मूरत छबि धारी । सोहै गढ पर औ फुलवारी ॥
बुद्धि ज्ञान दुइ पहरू तहाँ । जागहि चोर सचरै कहाँ ॥

गढ पर चढी कमानै, दुरजन देखि डेराय ।
कुअर त्रास ते निबल को, सबल न सकै सताय ॥४॥

बरनैा राज मँदिर की सोभा । सोभा रूप आइ तेहि लोभा ॥
मदिर मो छबि अधिक सोहाही। राजा रहे आप तेहि माहीं ॥
बरनि न सकैा भीत निर्मलाई । चितवत दृष्टि पार होइ जाई ॥
खम्भा चार कनक के लागे । चारो कहँ देखैं अनुरागे ॥
चितवत पावै ऐसि भताई । भूलै एक तीन रह जाई ॥

पुनि दुइ भूले दुइ रहे, पुनि एकै रहि जाइ ।
एकहि खम्भ विलोकत, निर्पनहार अघाइ ॥५॥

कटक बहुत राजा के रहई । अनगिनती गिनती को कहई ॥
एक दिस बाघे तुरै बिराजैं । पवन बाधि जनु राखा राजै ॥
भूधर के भूधर गढ ऊपर । भूधर ऊपर सोहै भूधर ॥
राजा आप धनी औ बली । कीरत भली लता सी चली ॥
सब पर धरै दया की दीठी । राखै सब काहू पर ईठी ॥

राजा के भण्डार महँ, धन औ दरब सपूर ।
पूरन रतन पदारथ, गुलिक कनक खर चूर ॥६॥

बरनो राजा की फुलवारी । फूलनहू ते सोहनवारी ॥
सुमन सुरङ्ग सुगन्ध सोहाही । चहुदिस तिनपर भँवर भवाही॥
तोरै राजा चाहै जाहीं । चाहै जा कहँ राखै ताहीं ॥

नित अनेक परसुन झरि जाहीं। नित अनेक फूलहि तेहि माहीं॥
सुगँध सुरङ्ग पुहुप तह फूलैं। सुमन सुमन मधुकर होइ भूलै॥
अपने अपने मानहीं, सब परसुन मों बास।
बास लेइ के कारनहि, भँवर फिरै तिन पास॥७॥

बरनौ हाट महीपति केरी। ता महँ लाख वस्तु की ढेरी॥
जो कोऊ कछु लेवै चाहै। जस पूंजी तस मोल बेसाहै॥
हाट आइ छूछे कर जाना। मन पछतावा रहइ निदाना॥
जो आगम को लाभा चाहै। हाट आइ सो वस्तु बेसाहै॥
मन सो जेतिक वस्तु रचाहीं। लेहि धनी निधनी पछताहीं॥
नित राजा के हाट मों, एक आवै एक जाइ।
अपनी अपनी ओंट तें, वस्तु बेसाहै आइ॥८॥

बरनौ राज कुअर की बानी। धर्मिष्टी औ पण्डित ज्ञानी॥
दान दरब की रीत सँवारा। अधरम को जर मूल उखारा॥
पर त्रीया पर दृष्टि न देई। मनसा बाचा पाप न लेई॥
ऐस धरम को पन्थ चलावा। बाघ गाय सो प्रीत लगावा॥
सब कहँ सूधी बाट चलावै। निबळ न सबले सो दुख पावै॥
सबै असीसैं राजही, रहै सुखी सब कोइ।
राजकुंअर के नगर मों, धरम पुन्न नित होइ॥९॥

अति सरूप रानी सुन्दरी। धरती पर अपछर औतरी॥
छबि सो धन रिझवारिन भई। पियहि रिझाइ जीउ बसि गई॥
पीउ पियारी सुन्दर नारी। भइउ पीउ की प्रान पियारी॥
देखी पिउ धन की सुघराई। मन सो मया करै अधिकाई॥
सोवै कुअर लिहे धन कोरा। कबहु न पीठ दीन्ह तेहि ओरा॥
पिय की प्रीत बखानै, एक न राखै गोइ।
रूप गरबता सुन्दरी, प्रेम गरबता होइ॥१०॥

सो अन्तर पट आगे लाँए । सुन्दर रूप न छिपत छिपाए ॥
परगट होइ तहा से सोई । जेहि अस्थान छिपाना होई ॥
जब प्रेमी पर चाहुन देई । एकै दृष्टि मैन कइ लेई ॥
जेहि सोए पर चित्त चलावै । नैन बान हनि ताहि जगावै ॥
प्रेम बढावत प्रेमी हियरें । पुनि आनत तेहि अपनेनियरें॥

प्रेम बढै जो दुइ मन, दोऊ एकै होय ।
बिछुरे तें बाढत अधिक, बूझैं प्रेमी होय ॥११॥



[२] स्वप्न खण्ड, कुँअर ।

एक रात महँ कुअर सरेखा । सपन बीच दर्पन एक देखा ॥
रहा अमल दरपन उँजियारा । जिउ मुख को निरखोवन हारा ॥
दरपन मो एक सुन्दर नारी । देखेहु चन्दहु ते उँजियारी ॥
रही तइस सुन्दर जस चही । दरपन देह बीच जिउ रही ॥
रही न तेहि सँग सखीय सहेली । रहिउ मुकुर महँ आप अकेली ॥

ससि बदनी मनु रबि रही, रहा मुकुर जिमि धूप ।
तेहि रूपवन्ती रूप सों, दरपन पाएउ रूप ॥१॥

जागा कुअर भोर कहँ पावा । सपन चिन्त मो देवस गँवावा ॥
दुसर रात कस्तूरीय भारा । तासो सुगँध कीन्ह ससारा ॥
तेही त्रिजमा राय सरेखा । पहिली रात कि सूरत देखा ॥
रहेउ न सूरत दरपन माही । दरपन बहुत रहे अगुवाही ॥
कालिजरी निर्प नर नाहा । तासो बदन देखा सप माहा ॥

जस दरपन निर्मल रहै, तस देखा अधिकार ।
दरसन एकै नारि को, सब आदरस मझार ॥२॥

पहिली रात महीप सरेखा। मुख पर लट बिथुरी नहि देखा॥
दूसर रात महीपति ज्ञानी। देखा मुख पर लट छितरानी॥
देखि बदन लट सुन्दरताई। सपने बीच परा मुरछाई॥
मोहि अचरज हिरदयमे आही। कैसे मुकुर न देखा ताही॥
यह सपने को को पतिआई। मुकुर सोह बिनु देखि न जाई॥

यह सपने की बात पर, अचरज करै न कोइ।
सपने मों सो होत है, जौ सोतुकै न होइ॥३॥

राजा देखि सपन अस जागा। लागा ग्रीव प्रेम को तागा॥
तागा पाइ प्रेम को राजा। भा प्रेमी छाडा सुख काजा॥
का जानै सुख भोग भुलाना। प्रेम मरम जब लग अनजाना॥
जाना जात प्रेम तब भाई। जब मन भीतर प्रेम समाई॥
कालिंजर को राय सयाना। वह नारी के रूप भुलाना॥

दृग सों बिछुरी मूरत, हिदैं आइ समान।
जब हिय बीच समानी, हरिगै चिन्ता आन॥४॥

राजै राज काज तजि दीन्हा। चिन्ता वह मूरत की लीन्हा॥
कहै कहा वह चन्द लिलाटी। वरु तेहि आगे है ससि घाटी॥
कहा धनुक भैाहीं वह नारी। बरुनी बान चोख जेई मारी॥
कहवा मृग नैनी वह बाला। प्रेमद दीन्ह कीन्ह मतवाला॥
होतेउँ दरपन ता मुख केरा। मो महँ तो मुख लेत बसेरा॥

राजकुँअर भा बाउर, छाडेउ सुख रस भोग।
परे सकल संसै मों, कालिंजर के लोग॥५॥

राज कुअर छाडा सुख भोगू। असुखी भए नगर के लोगू॥
दस सघातिय राजा केरे। रहे सो रहे आठ जस चेरे॥
परे चिन्त मो आठ सँघाती। आठो कहँ दिन भा जस राती॥

काहु बात सुनवत जी दीन्हा । कोउ कौतुक पर दिष्ट न कीन्हा ॥
रस सुगन्ध कहँ छाड़ा काहू । आठो परे बहुत दुख माहू ॥
राजा के अनमन भए, अनमन भा सब कोइ ।
मांगहिं सब करतार सों, मोद कुंअर कहँ होइ ॥६॥

आठो मों मन्त्री एक रहा । राजा मानै ताकर कहा ॥
बुद्धसेन रहु ताको नाऊँ । जन्मभूमि तेहि मनपुर ठाऊँ ॥
तेहि बिनु सात मित्र अवटाही । ताहि मिले सातो सुघराही ॥
सुख छाड़ा सब राय सयाना । बुद्धसेन मन सबै माना ॥
कहा कुअर सो अहो नरेसू । दिवस चार सो कस तोहि भेसू ॥
औरै तन मन देखऊ, औरै चिन्ता चाव ।
सुख अनंद को छाड़ेऊ, कहो कुँअर केहि भाव ॥७॥

कहा बुद्ध सो राय सरेखा । नारी एक सपन मैं देखा ॥
पहिल रात अस देखेउँ ज्ञानी । दरपन बीच रही वह रानी ॥
दूसर निस वहु दरपन देखेउँ । सब दरपन ता रूप परेखेउँ ॥
सोवत रहिउ नयन के नियरें । जागत आइ समानिउ हियरें ॥
अमल रूप वह नारी केरा । मन हरि लीन्ह कीन्ह मोहि चेरा ॥
तामुख दुति के आगें, अहै सूर ससि छाँह ।
काहु निपै की है सुता, जेहि देखेउँ निस माँह ॥८॥

सुनि बुध राजा कहँ समुझावा । तोहि सपने महँ कौतुक आवा ॥
सपन रूप पर का बिसवासू । तज मन चिन्त बढाव हुलासू ॥
कुअर कहा यह सपन न होई । मोहि लेखे मैतुक है सोई ॥
दरपन मो दरपन मुख ताको । भा जिउ लाग मुकुर सोभा को ॥
मोहि निपै वह प्रान पियारी । करै चहत है दरस भिखारी ॥
बिछुरी प्यारी नैन सों, हियरें आइ समान ।
हिया हाथ मो कीन्हा, भएउ परान परान ॥९॥

मन्त्री मरम कुअर को पाएउ। गुनी चितेरा एक बोलाएउ॥
अस गुनवन्त चितेरा रहा। जल पर चित्र बनावै चहा॥
बुद्ध कहा लिखि आनु चितेरा। सुघर रूप इस्तिरीन केरा॥
निर्प सपने एक नारिय देखा। रीझा तापर निर्प सरेखा॥
होइ अहेर फाद मो आवै। देखै कुअर बोध मन पावै॥

बहु नारिन की मूरतें, लिखा चितेरा जाइ।
बुद्ध बांह सो राजही, सकल देखाएउ आइ॥१०॥

देखि सकल राजैं मुख फेरा। कहा कहा वह अरे चितेरा॥
कहा लिखै आवै वह प्यारी। सपने बीच बान जेइं मारी॥
ताको मूरत को लिखि पारै। दिर्ग बान बरुनी को मारै॥
अधर तेहिक जो लिखै चितेरा। मीठ होइ लिखनी नहिं केरा॥
सुनि अस बात चितेरा हँसा। कहा प्रेम महिपति मन बसा॥

कहि बुध साथ चितेरा, गएउ सदन कहँ सोइ।
पहिले प्रेम न गाढा, अन्त गाढ़ पुनि होइ॥११॥

आना बुद्ध मनुष दस ज्ञानी। राजा नियरें कहे कहानी॥
रूप बखान करें बहुतेरा। होइ फिरै मन राजा केरा॥
राजा के मन बोध न होई। सपन कहानी कहेउ न कोई॥
जा दृग लागेउ जो रँग नीका। नीको वही आन रँग फीका॥
जा मन आइ बसै जो कोई। ता कहँ प्रान पियारा सोई॥

रंचिक ताहि न भावै, कहै कहानी जेत।
परम दवात कहै जत, दुखद होइ तेहि तेत॥१२॥

राजा की फुलवारिय जहा। लीन्ह बसेरा तपी एक तहा॥
मौन रहा गहि तपिय सयाना। सकन तिहिकसब काहुबजान॥
रात होत मन मो धरि आसा। गएउ कुअर तापस के पासा॥

कहु जौहरिये कतहु चितेरा। कतहु कुँदेरा कतहुं ठठेरा॥
सब भूले अपने जग धन्धा। का हिठियारू का जो अन्धा॥
सब तो अहै बटाऊ, पै पावं सुख भोग।
आपुहिं कोइ न जानत, है पन्थिक हमलोग॥२०॥

पुनि बखान सुनु मन तारा को। बसुधा बीच सुधा जल ताको॥
जो मनतारा सम्बर पीजै। सुख जीवन पावै मन जीजै॥
आवै नीर भरै पनिहारी। सुन्दर आगमपुर की नारी॥
औउर नदी नीर जस छीरू। मद अस भेद सरोवर नीरू॥
मधु अस मीठ जीउ सर पानी। यह बखान समझै नर ज्ञानी॥
जो मानुष अनुरागजल, अचवै चारो नीर।
निर्मल होइ सरीर तेहि, व्याध न रहै सरीर॥२१॥

पुनि बखान सुनु मत के चेरा। आगमपुर के जोगिन केरा।
बैरागी सन्यासिय जोगी। साधू सजम तपिय बियोगी॥
कोउ ठाढा है ध्यान लगाए। कोउ धरती पर सीस नवाए॥
कोउ महिपर माथा धरि रहा। जोग लाग सुख भोग न चहा॥
बहुतन कह जगसो सुधि नाहीं। रीझि रहे करता उपराहीं॥
रसना एक न कहि सको, आगमपुर की बात।
धरम धनी है राजा, सुखी छतीसो जात॥२२॥

रहा महीपति घर उँजियारा। बालक दीपक बिनु अँधियारा॥
जाइ ग्रीस मडप मँह पूजा। बहुत कीन्ह सँग लीन्ह न दूजा॥
सिव सपने सो दरस देखावा। दरस दान देइ बात सुनावा॥
बालक एको लिखा न राजा। देइ न बालक अपचित काजा॥
राजैं कहा पुत्र जो नाहीं। होइ सुता तो मन अनदाहीं॥
आतमजा जो होत एक, होत सदन उँजियार।
कन्यादान दिहे सो, होते मुकुत हमार॥२३॥

कहा महेस काज एक करहू । रतन एक मण्डप मों धरहू ॥
निसमो राखहु भोरैं आएहु । धिर्जे धरेहु जैसे फल पाएहु ॥
जैसे ईस्वर अज्ञा दीन्हा । तैसे मानि महीपति कीन्हा ॥
सिव दाता कह बहुत मनावा । तुम करता त्रीलोक बनावा ॥
धरती गगन पवन जल आगी, । सिर्जेउ सिर्जेत बेर न लागी ॥

होइ रतन सों कन्या, यह मनसा है मोर ।
राज सदन अँधियारो, तासों होइ अँधजोर ॥२४॥

सिवा अलखसे बिनती कीया । जस है रतन जोत सो दीया ॥
दीप रतन सम कन्या होई । करइ निकेत अजारो सोई ॥
भा दयाल दाता तेहि घरी । वोहि रतन कन्या अवतरी ॥
भै महेस मण्डप उँजियारी । उतरी मनहु इन्द्रपुर नारी ॥
भोर होत राजा चलि आएउ । मण्डप बीच चन्द्र सम पाएउ ॥

परमद सों मंडप मों, पुलकेउ राजा देह ।
कन्या कहं अति आदरें, आनेउ अपने गेह ॥२५॥

पुन सिवरात होत सपनावा । गौरिहु आपहु दरस देखावा ॥
कहा धरेहु अवतार सुभाऊ । रतन जोत कन्या कर नाऊ ॥
मोती एक बँटामो कीजे । जलधिम भार हार तेहि दीजे ॥
वह मोती काढ़े जो राजा । सोई वर कन्या कर छाजा ॥
मोती काढ़ न पारै कोई । काढ़े सोई वर जो होई ॥

सिव भाषित के पाछें, सिवा कहा तेहि ठाउं ।
होत भलो इन्द्रावति, वह कन्या को नाउं ॥२६॥

राजे दोऊ नाम तेहि राखा । रतन जोत इन्द्रावति भाखा ॥
रूपम्मा धाई तेहि पाला । लाग चलै महि ऊपर चाला ॥
भइ जो सयान भई चितगरी । पढ़ि बिद्या भई विद्याधरी ॥

लागी साथ अगमपुर वारी । जोरेउ स्यामा राज दुलारी ॥
जगपति मरम सुता कर पावा । कीन्हा परन जो दैव बतावा ॥

बूडे बहुत समुद्र मों, मोती चढेउ न हाथ।
नहिं जानौ को देह है, सेंदुर ताकी माथ ॥२७॥

मण्डप मो जाते जब भागी । बरसदेवस पर तीरथ लागी ॥
जब आगमपुर कहं मैं गएऊ । पूजा नित मण्डप महं भएऊ ॥
तेहि छन भै बहु ओर पुकारी। आवत है जगपति की बारी ॥
पन्थ देउ कोउ रहइ न आगें । जात मँडप कहं पूजा लागें ॥
पन्थ छाड़ भा सब कोउ ठाढ़ा। सबके हियें प्रेम रस बाढ़ा ॥

पंथ छाड सब ठाढ भा, नैन भएउ सब देह।
इन्द्रावति दरसन नित, सब मन बढेउ सनेह ॥२८॥

सब मानुस मन प्रीत घनेरी । उपजी इन्द्रावति मुख केरी ॥
मुकुर बने चाहा सब कोई । जामो आइ परै मुख सोई ॥
सखिन साथ इन्द्रावति आई । बरनि न पारौ सुन्दरताई ॥
रहि न सखी सुन्दर जहा ताईं । जिउअस लिहें रतन कहं आई ॥
देह भईं सब आगम वारी । जीउ रही इन्द्रावति प्यारी ॥

सखी रहीं अन्तर पट, देखा बिरलै कोइ ।
मंडप बीच गई वह, सब को मति नग खोइ ॥२९॥

रचिक तेहि देखा जो कोई । कीन्ह बखान आप मो सोई ॥
कहुब कहा अहै अपछरा । नहि चितएउ ऐसें मन हरा ॥
काहुब कहा दिष्ट जो देती । मन औ प्रान दोऊ हर लेती ॥
रूप गगन जग काया वारी । है जिउ है जिउ है जिउ प्यारी ॥
जो वहि मुख को परगट देखा। गूग भएउ भा बावर भेखा ॥

तेहि अस आपुहि होइ रहा, रहा न ताहि विवेक।
जातें जानैं एक मै, औ इन्द्रावति एक ॥३०॥

इन्द्रावति घर कीन्ह बहोरा । ससि होइ लै नछत्र चहु ओरा॥
आप गई मन्दिर कह प्यारी । बहुतन को कइ गई भिखारी॥
जो रखिक ता दरसन पावा । हाथ मलेउ मानेव पछतावा॥
कहा सहेलिन बैरिन भई । बोटै बोट किहे ले गई॥
आज आइ वह परगट भई । मिला न दरस गुपुत होइ गई॥

सुमिरेउं सिरजनहारही, जन देखेउं असरूप।
ऐसो रूप संवारहु, धन्य त्रिविष्टपभूप ॥३१॥

है पदुमिनि इन्द्रावति प्यारी । ताको वदन रूप फुलवारी॥
कोमलताइ सुन्दरताई । वै रचना सो बरनि न जाई॥
दिर्गन हरा मान मृग केरा । मन लजाइ बन लीन्ह बसेरा॥
ना अति लाव न छोटी आही । है तस इन्द्रावति जस चाही॥
यह बखान का बरने होई । जो देखा जानहि पइ सोई॥

कै बखान जोगी कहा, मोहि जाने होराय।
चन्द्र वदन इन्द्रावति, तोहि सपनाएउ आय॥३२॥

पहिले इन्द्रावति सुकुमारी । रहिउ रतन दरपन मो प्यारी॥
जब जगमो अवतरी नवेली । ताको दरपन भई सहेली॥
है वह दीप सिखा उँजियारी । आपन जोत सखिन मो डारी॥
है वह रतन खान आभा को । जोत सुरूप रूप है ताको॥
है आनन्द वदन वह प्यारी । छवि तापर है लट सटकारी॥

इन्द्रावति है पदुमिनी, रम्भा तुलै न ताहि।
एक जीभ सों कित मैं ताको सको सराहि॥३३॥

सुनत बखान कलिंजर ईसू । तपिय चरन पर डारेउ सीसू॥
कहा कुवर हो सिद्ध सरीरा । ओषद दै काटेहु मन पीरा॥
सपन विचारेहु मोर गुसाईं । पीरा हरेहु रही जह ताईं॥

जेहि रानी कर करहु बखानू । निसचै हरा सोई मन जानू ॥
तजि कइ राज होय मैं जोगी । इन्द्रावति पर होवँ वियोगी ॥
हैं। मैं चेला तुम गुरू, विनै करत हैं। तोहिं।
आगम पन्थ देखावहु, लै पहुचावहु मोहिं ॥३४॥
तपिय कहा तोहि जोग न छाजा। बैठे राज करीजे राजा ॥
अहै कठिन आगम को बाटा । गहिर समुद्र न थाह न घाटा ॥
औ है गुलिक काढिबो गाढा । सिन्धु न जानै तट जो ठाढा ॥
है हम कहँ तीरथ बहु करना । कासिय पन्थ उपर पग धरना ॥
जाय पयाग करउ असनानो । पुनि महेस को देखउ थानो ॥
तपी भेस मैं मानुष, नाम मोर गुरुनाथ।
तब गुरुनाथ कहावउं, जब आनउं तप हाथ ॥३५॥
कुवर कहा गुरू नाथ गोसाईं । राज रहा मीठा अवताईं ॥
अब निसचै मैं होय भिखारी । तहा चलिजाउ जहा वह प्यारी॥
जिव को लोभ कछुहु मोहि नाहीं। ता नित पैठउ पावक माहीं ॥
अगुवाई जो कीजे नाथा । तो वह मूल होइ मोहि हाथा ॥
ना तो सुमिरत दया तुम्हारी । जाउ तहा होइ तपसि भिखारी॥
राज पाट सब छाड़उँ, लेउँ अगम को पन्थ।
पन्थिक होऊँ अगम को, पहिर जोग को कन्थ ॥३६॥
जाना तपी तजहि सुख पाटा । हियँ सुधान अगम की बाटा ॥
सकत आपनो परगट कीन्हा । देव दिष्टि राजा कह दीन्हा ॥
माया रहित कीन्ह मनुसाई । उपवन सो कीन्हा अगुवाई ॥
फुलवारी मो राय सरेखा । पन्थ सहित आगमपुर देखा ॥
देखा देस अगमपुर केरा । रीझि रहा राजा भा चेरा ॥
अगम पन्थ मन मों बसेउ, भूली दूसर बाट।
हिर्दे चिन्त सोउ तरिगा, राज मुकुट औ पाट ॥३७॥

तपिय कहा राजा कुछ सूझा । राजा सुनत मरम सब बूझा ॥
कहा भएउ कृपाल गोसाईं । सूझी बाट रही जहा ताईं ॥
सूझा इन्द्रावती कर देसू । होएउ निसचै जोगिय भेसू ॥
सुनि गुरनाथ अपेश्वर जाना । पन्थ अगम राजहि पहिचाना ॥
गुपुत भएउ पुनि कुवर न देखा । आएउ मन्दिर राय सरेखा ॥

गुरू जानि गुरनाथहीं, चेला आपुहिं जानि ।
आगम जोग धरा चित, मन परान सों मानि ॥३८॥

कालिंजर सो भएउ उदासा । भएउ नरक मन्दिर-कविलासा ॥
सुन्दर कहा कन्त कस जीऊ । कस उदास तेहि देखउ पीऊ ॥
परेउ सीस ऊपर कछु भारा । कदासें है जीउ तुम्हारा ॥
दीन्हा ऊतर सुन्दर केरा । सैतुक बीच सपन भा मेरा ॥
सुनेउ आज मैं तेहिक बखानू । सपन देखाइ हरा जेइ ज्ञानू ॥

राजपाट धन भोग सुख,सब तजि साधौं जोग ।
जाउँ वोही के देस कहं, होइ संजोग वियोग ॥३९॥

सुनि कै कहा सुन्दरी राजा । तुम्हें भोग तजि जोग न छाजा ॥
सुख सम्पत सब दीन्हा दाता । मारु न छीर भात मो लाता ॥
कहा रहेउ अबलग मैं भोगी । अब मैं होउ अगम को जोगी ॥
जोगी होउ अगमपुर केरा । लेउ जाइ तेहि गलिय बसेरा ॥
भोगै बीच रहउ जउ भूला । कित मोहि हाथचढइबहमूला ॥

तुम कामिनी मत हीनो, भोग सुपावहु मोहि ।
प्रेम खींच है मो कहं, सूझबूझ नहिं तोहि ॥४०॥

राजैं राजपाट सुख तजा । प्रेम आइ मति सो अरबजा ॥
मनमो प्रेम बसेरा लीन्हा । बरबस राजा प्रेमिय कीन्हा ॥
प्रेम अगिन मनमो उदगरी । तासो दारु बुद्धि कर जरी ॥

भार वोही राजा सिर परा । जो नभ औ महि को बल हरा ॥
निबर मनुष को धन मनुसाई । जो अस भारिय भार उठाई ॥

प्रेम आग के बाढ़े, मेधा भयो मलीन ।
सूर किरिन के आगें, है मयंक दुति हीन ॥४१॥

रे कलवार आव चलि बेगें । हो मैं ठाढ़ सिन्धुवा नेगें ॥
है निर्मल मद सदा तुम्हारा । मोहि लेखें सत ठाकुर द्वारा ॥
दे मदिरा भर प्याला पीवो । होइ मतवार कापरा सीवो ॥
सो कापर काधे पर डारउ । जोगी होइ जग चाहत मारउ ॥
होइ जोगी तेहि देसहि जाऊ । है जेहि देस सुप्रीतम ठाऊ ॥

मोहि यह देस न भावत, छन है बरष समान ।
अब तेहि देस सिधारउं, जहा रहत वह प्रान ॥४२॥



[४] जोगी खण्ड।

छाडेउ कुअर राज सुख भोगू । साधेउ आगमपुर को जोगू ॥
भा जोगी इन्द्रावति लागी । लीन्हा सारङ्गी अनुरागी ॥
राज दुकुल सब तुरत उतारा । जोग कापरा काधे डारा ॥
राखा जटा चढाएउ खेहा । कीन्ह सनेह सनेहिय देहा ॥
जावत जोगी रहा समाजा । तावत कीन्हा प्रेमिय राजा ॥

आठ मित्र राजा के, पहिरा जोग दुकूल ।
सुख सवाद को चिन्ता, गएउ चेत सो भूल ॥१॥

चन्दन चढत रहा जेहि काया । सो तेहि काया भसम चढाया ॥
नित जेहि सीस फुलेल चढाएउ । भसम चढाएउ जटा बढाएउ ॥

जेहि कर खरग बीज सम रहेऊ। तेहि कर सारङ्गी लै गहेऊ ॥
चरन धरनि जेहि पाय न ठाऊ। तेहिपगु राजहि लीन्ह खराऊ॥
प्रेम पाय वह राजा भोगी । भा तजि भोग आगमिय जोगी॥

राज काज तजि राजा, लीन्ह अगम को जोग।
परेउ नगर कालिजर, राजा कारन सोग ॥२॥

समुझावैं कालिजर वासी । राजा मन की तजहु उदासी ॥
जाको रूप न देखेहु राजा । तेहि कारन यह जोग न छाजा॥
औा नहि जानत हो वह नारी। है वह गोर कि सावर कारी ॥
देस बहुत जेहँ कीन्हेउ फेरा । सो जन झूठ कहइ बहुतेरा ॥
तपसी बहुत देस फिरि आएउ। झूठ कहानी तुमहि सुनाएउ ॥

राज न झाडहु राजा, होहु न जोगी भेस।
ना होइहि इन्द्रावती, ना आगमपुर देस ॥३॥

कहा प्रेम है जाकर नाऊ । सुनि बखान उपनत मन ठाऊ॥
तपिय न भाषा झूठ कहानी । साच रही तब हियँ समानी ॥
इन्द्रावति दाया पर आएउ । मोहि नित प्रेम बसीठ पठाएउ॥
तव न बसीठ अहै बरियारा । फादा आइ ग्रीव महँ डारा ॥
आगमपुर दिस खावत सोई । कैसें रहन कलिजर होई ॥

सावर गोर रङ्ग को, अहै न हम कहँ खोज ।
नैन भवर सम होइ रहे, चाहे दरस सरोज ॥४॥

पुनि बोले कालिजर लोगू । राज छाड कित छाजइ जोगू॥
गगन समान ऊ चगढ आही । अस गढ उन्नत तजइ न चाही॥
दूसर ऐसो है नहि कोई । पाछें राज सम्हारइ सोई ॥
नहि जानहु परदेखिय साझा । परबत सो भारी बन माझा ॥
औा राजा अस कहइ न कोई । आगमपुर को अगुवा होई ॥

अगुवा बिना न पावहु, आगमपुर को पन्थ ।
जनि दुख वस्तु बेसाहहु, पहिरि जोग को कन्थ ॥५॥

कहा राज आवइ केहि काजू । जोग बीच पाएउँ मैं राजू ॥
दोऊ जगत देइ जउ कोऊ । एक रती पर लेउँ न दोऊ ॥
यह गढ सो का करउँ हिताई । है गढ दहन हार ढहि जाई ॥
आगमदेस सूझि मोहि आएउ । गुरु नाथ मोहि पन्थ देखाएउ ॥
मोर मन बसा प्रेम तेहि केरा । वहइ प्रेम अगुवा है मेरा ॥

मैं जोगी हउँ बावरो, जाउँ सो आगमपूर ।
बात समेटहु आपुन, है जाना मोहि दूर ॥६॥

कहेन छियर अस चलन न छाजा । गवनउ सुदिन साधिकइ राजा ॥
जातें जोग लाभ कर होई । सुदिन साधि गवनत सब कोई ॥
कहा मोहि प्रेम घरी नहि देई । कैसें गवनउ सुधि नहि लेई ॥
ता दिन गवन सुदिन मैं पावा । जा दिन प्रेम हकारइ आवा ॥
आई प्रेम तुरतैं गोहराई । चलहु चलहु दिन बीना जाई ॥

प्रेम न देत घरी मोहि, देवस कहां से लेउँ ।
भलो देव सहै यह दिवस, आगमपुर पग देउँ ॥७॥

कालिंजर के लोग जो रहा । राजा साथ चले सब कहा ॥
बिनय कीन्ह सबसो तब राजा । प्रेम के पन्थ बटोर न छाजा ॥
कठिन अगम सचर है भाई । हलुक रहउ तो पहुचउ जाई ॥
दुखित रहउ तुम नित मन ठाऊ । सुमिरि न सकऊ प्रीतम नाऊ ॥
बाढै गरब देखि कै सैना । मद तें कहउ गरब की बैना ॥

होउँ अधीन अकेला, कटक न लावउँ साथ ।
मकु अधीनता सो चढै, आइ बलम्भा हाथ ॥८॥

कहे न अकेल न साधहु जेगू । का बोलहि आगम के लोगू ॥

नृप नहि कोऊ अहइ भिखारी । कित तेहि माँगें राजकुमारी ॥
ठाकुर गरुअ अगु सो होई । जेहि सँग अगु गरुव है सोई ॥
लोग कहैं अह लेहु बसेरा । है राजा कालिंजर केरा ॥
ससि तारन को सेवक पावा । निसिपति तारापति कहवावा॥

जानि परत राजा स्रवन, परी न है यह बोल ।
टीडी दल के त्रास तें, होत दमामो ढोल ॥९॥

दीन्हा उतर महीप वियोगी । हौ अस भीख लाग मैं जोगी ॥
भेष किहें वह भीख न पावउ । तब पावउ जब भेष नसावउ ॥
उवत अकेल सूर उँजियारा । होत अलोप चन्द अवतारा ॥
प्रेम मगन होइ बदन देखाएउ । मोहीं ससि की प्रभुत नमायउ ॥
गइ अब हाथ सो आपा मोरी । प्रेम करइ दुति लीन्हेउ छोरी ॥

चन्द्र हाथ भा छूछा, रहा न मन को गर्ब ।
तारा सङ्ग लेइ कित, लूटि दर्ब गा सर्ब ॥१०॥

प्रेम भान जो दया करी है । फिर जो तामो ससि कह दीहै ॥
तजिकै चलेउ जो नामको ठाऊ । जोगी भएउ न चाहौ नाऊँ ॥
जब मैं आपन नाम भुलावउ । तब वह नाम अमृत रस पावउ ॥
जो मैं चहतेउ आपन नाऊ । करतेउ राज कलिंजर ठाऊ ॥
बिरहु सबै मै होउ बटोही । साथी आउ बहुत है मोही ॥

राजा आयसु मानि सब, फिरे कलिंजर माहिं ।
अगम पंथ पगु राखा, कुवर जोग को नाहिं ॥११॥

सुन्दरीहु तें उठेउ पुकारा । हम केहि कारन करब सिंगारा ॥
चिनगी भएउ सोग सो चूनी । प्रीतम चला सेज भइ सूनी ॥
केइ सोनार हथफेरा कीन्हा । कनक सोहाग मोर हरि लीन्हा ॥
बहत सदन केइ सत्रु उजारा । हरि लेइ चला परान, हमारा ॥

धन के रोवत रोवइ चेरो । फोरेन वलिया लागेउ ढेरी ॥
लाजवन्ति सुन्दर रही, पियहिं न बरजा जात ।
धीरज हिदैं मों धरा, कछु न सुनाएउ बात ॥१२॥

सुन्दर कह समुझावइ लोगू । राजै लीन्ह अगम कर जोगू ॥
राजा पन्थ अगम पर चला । रोए ताहि न होइहै भला ॥
जो रोए सो राजहि पावहि । अस रोवहि त्रीलोक रोवावहि॥
रोए सो पिय फेरि न आवहि । करु सोई जासो सुख पावहि ॥
दिन दिन अहइ रोइब्रो रानी । अब यह सामै समुझि सयानी॥
चहु दिस सब समुझावैं, गई जनहु ठग मार ।
बसा मँदिर कविलास सम, प्रीतम कीन्ह उजार ॥१३॥

जोग खेल आगमपुर खेला । गुरुअ अकेल आठ सम चेला ॥
छोरेन कालिंजर गढ ठाऊ । सुमिरेन इन्द्रावति कर नाऊ॥
पूछइ चेला करइ निहोरा । आगमपुर अहइ केहि ओरा ॥
जेहि मगु लाग लीन्ह तुम कन्था । है राजा केहि दिस वह पंथा ॥
कहा चले आवहु मोहि पाछें । जेहि दिस चलहु चलहु कटि काछें॥
जब हम तजा कलिंजर, लीन्ह जोग को कन्थ ।
मन मो बूझहु चेत कै, इहइ अगम को पन्थ ॥१४॥

करत पयान जपत वह नाऊ । लिहे न बसेर देहपुर गाऊ ॥
भजन जीभ की राजै साधा । खाय अहार प्रेम सो आधा ॥
जोगिह आपन उदर न भरई । मन मो जोग अस तब परई ॥
उदर भरे घट जोत न होई । खाय मनाक जोगेमर सोई ॥
जपत कुवर इन्द्रावति नाऊ । काटेउ रैन देहपुर ठाऊ ॥
भोर होत भा पन्थिक, सातों बन नियरान ।
पहिले बन मों आएउ, देखत चित्त हेरान ॥१५॥

पहिले बन मो राज बरेखा । भ्रातहि भ्रात कि पच्छिय देखा ॥
एक कहा बन फेरा कीजे । पत्री भ्रात भ्रात लखि लीजे ॥
राजैं कहा जोग हम लोन्हा । आगम पहुचै पर चित दीन्हा ॥
बीचहि मो रङ्ग देखि भुलाऊँ । कैसे आगमपुर कह जाऊ ॥
एकै रूप इन्द्रावति केरा । मोहि आखिन मो लीन्हबसेरा ॥

जो मैं फीरैं दुर्ग मों, तजि कै सुधो पन्थ।
बाउर फिरैं भुलाना, काटैं बाभै कन्थ ॥१६॥

दुसरे बन मो राजा आएउ । मधुर सबद पच्छिन सो पाएउ ॥
एक कहा यह सबद सोहावन । थिरकै सुनि लीजै मन भावन ॥
राजैं कहा थिरवँ तेहि ठाऊ । जहा सुनवँ इन्द्रावति नाऊ ॥
सरवन वोही सबद पर लावँ । जामो नाम रतन कर पावँ ॥
आन सबद है मोहि विषबानू । सरवन परत लेत है प्रानू ॥

जो सुरपुर की अपछरा, राग सुनावै आइ।
मोहिं न भावै रंचि कै, बरु मोहि धै धै खाइ ॥१७॥

तिसरे बन आएउ नरनाहा । मिलेउ सुगन्ध तहा बन माहा ॥
साथिय एक कहा हो राजा । यह बन लेत बसेरा छाजा ॥
प्रान अहार सुगन्ध बसाई । लेहु प्रान को प्रान अछाई ॥
कहा प्रीतम लट कर बासा । चाहत हो राखवँ नित आसा ॥
है इन्द्रावति आप अकेली । कमल चमेली मालत बेली ॥

तेहि मालत की बास पर, हैं मैं मधुकर भेस।
कबहुँ पावउ बास मैं, जाइ अगमपुर देस ॥१८॥

जब आये चैाथे बन जहा । फले बहुत फल देखा तहा ॥
साथिय एक कुवर सो बोला । फलहि बिलोकि सो रसना सोला ॥
आज करहु बन बीच बसेरा । तोरि अहार करहु फल केरा ॥

राजैं कहा भूख मोहि नाही । खाउँ कहा फल यह बन माहीं॥
है। अनरुध चाहन रै जस। । यहि दरसन का है। मैं भूखा ॥
हैं। बरती तेहि पन्थ को, इन्द्रावति जेहि नाउँ।
फल अहार तेहि दरस को, चाहौं तेहि दिस जाउँ॥१९॥
काटत पन्थ महीप सयाना । पचएँ बन मो आइ तुलाना ॥
छोटहि छोटे कोमल घासा । महि पर लागि रहा चहुं पासा॥
साथी एक कहा मन भावन । है अति कोमल घास बिछावन॥
पन्थ बहुत काटा तुम भूधर । दर बिसराम करहु तेहि ऊपर ॥
कह की कोमल सेज जो चहतेउँ। राजहि देम कलिंजर रहतेउँ ॥
मोहि बिसराम कहां है, जब लग दरस न होइ।
चलेउं हिदैं पाटिसों, सुख को अच्छर धोइ॥२०॥
छठएँ बन मो राजन आएउ । सो बन नाघत बेर न लाएउ ॥
नाम जपत इन्द्रावति केरा । सतएँ बन मो लीन्ह बसेरा ॥
साथिय एक कुंवर सो कहा । बन बिगहरि सो छूछो अहा ॥
राजैं साथी को समुझावा । जेहि दरसन पर मै चित लावा॥
अहइ हमार सवातिय सोई । काहेक भेंट बाघ सो होई ॥
काम क्रोध तिसना भया, जो नहिं जात नेवारि।
नरक होत बन सातो, हम कहं पन्थ मझार॥२१॥
जब राखत है। मगु पर पाऊ । बाढत मानस आगम चाऊ ॥
जोत एक तारा सम आगें । दिष्टि परत देखवँ अनुरागे ॥
जो अब दाउँ छाडि कइ पन्था। भूलवँ काटे बाझै कन्था ॥
तिरछा मारि पन्थ जो चला । ताकर होइ पन्थ मह भला ॥
चाही जो चाहै भल होना । थोरा सोना थोरा सोना ॥
नूर मुहम्मद सो मनुप, जिऔ सदा सुख चैन।
प्रेम पन्थ मो जा मन, जागा दिन अउ रैन॥२२॥

जब साती बन पाछैंय डारा । पहुचे तब देहन्त मझारा ॥
सात सखा सो राजन बोला । बात विनै रस पागिय खोला ॥
हो मै तासु गलिय कर जोगी । जा सुमिरन सो जगत सजोगी ॥
हो मै जोग पन्थ कह कावा । एकौ जोग भेद नहि बोचा ॥
तुम सब कह मै साथ लगाएउँ । जाइ न सकउँ लाज मैं पाएउँ ॥

थिरहु सबै देहन्तपुर, तब मेलेउँ बोलाइ ।
जब मोहिं अलख दयालहोइ, जिउकों देइ मिलाइ ॥२३॥

साथिन को बिछुरन की बाता । चोए बान होइ बेधेसि गाता ॥
कहा न मेटेन राजहि केरा । रोइ लिहेन देहन्त बसेरा ॥
आज बिमुख भा प्रान हमारा । हम कह मङ्ग सो कीन्ह निनारा ॥
जो आपन सँग तजि कै जाई । प्रीत किहे सो कौन भलाई ॥
सुख है जब लगि रहै मेराऊ । बिछुरत जिय पर मारइ घाऊ ॥

ता सँग प्रीत करीजे, जियत न छाड़ै साथ ।
ना तौ बिछुरे धावई, पछतावन निज हाथ ॥२४॥

बुद्ध सेन सँग लै हित स्वाती । नाघा बन औ परबत पाती ॥
आगे आइ सिन्धु नियराना । पार जाइ कह गाढ अटाना ॥
तत खन काया पति बनि जारा । आइ चहा उतरइ कह पारा ॥
पूछा मरम जोग कर सोई । राजैं कहा न राखेउ गोई ॥
प्रीत बीज काया पति बोवा । आपन बिपति कुवर सो रोवा ॥

जो कानन तुम नाघि कै, आएहु तप के जोर ।
तेहि कानन एक सामै, दरब लूटि गा मोर ॥२५॥

बनिज लाग आगपुर गएऊ । आगम हाट बीच मैं भएऊ ॥
हाट जहा आगमपुर केरी । देखेउँ बहुत वस्तु कइ ढेरी ॥
मोही तहा छतीसउ जाती । लेनो देन करहि दिन राती ॥

आवा गवन काइ सब कोई । बस्तु लेहि जस पूंजिय होई ॥
पूंजी रही तपस मैं लीन्हा । बन मे अलख अदरखी कीन्हा॥
पुनि दयाल भा दाता, सुमिरत ताको नाउँ ।
आगमपुर की हाट कहं, बस्तु बेसाहन जाउँ ॥२५॥
बोहित चढ़े दोऊ धीमानू । कायापति और कुंवर सुजानू ॥
पल पल उठे लहर हलकोरा । सेवक सेवत सुख नहि मोरा ॥
लखि समुद्र की उरमी गाढी । सेवक बात बोध कर काढी ॥
मनते साहस तजहु न राजा । लाइ अलखलटपुर इहि काजा ॥
लहर देखि जो धीरज तजा । तीर न मिल सिंधु महं भजा ॥
धीरज धरे रहहु मन, सुमिरहु एकहि नाउँ ।
बेगि तीर तुम पावहु, धीरज के बड़ साउँ ॥२६॥
हो सेवक मापा तुम भला । ज्ञान सरोत भएउ निर्मला ॥
ताहि समुद्र मो है मैं परा । जेहि आगे यह बुन्देक धरा ॥
अम्बु सीस ते नीचेहु नाहीं । सात समुद्र होव उपराहीं ॥
प्रेम समुद्र की लहरैं गाढी । तन सो जीउ लेत हैं काढी ॥
सुमिरन प्रान पियारी केरा । जिउ कह तन मो देत बसेरा ॥
प्रेम समुद्र अथाह है, बूडे मिले न अन्त ।
तेहि समुद्र मैं हौं परा, तीर न मिलत तुरन्त ॥२७॥
सेवक गुनी तीर लेइ आवा । सिन्धु तीर सब काहू पावा ॥
अवध पार होइ राजा जोगी । जाइ बसा जिउपूर वियोगी ॥
जिउपुर माह प्रेमिय राजा । गुपुत आप घटमो उप राजा ॥
जेइ मूरत तेहि प्रेम बढाएउ । स्वात पत्र पर ताहि बनाएउ ॥
तेहि ऊपर अस लाएउ ध्याना । रहि गइ मूरत आप हेराना ॥
तेहि पल एक चितेरा, आएउ राजा पास।
जोग फूल को मधुकर, भएउ पास रस आस ॥२८॥

जोगी मरम चितेरहि पावा । रहसि कुअर को बात सुनावा॥
जो चाहसि लखु नेहिय देहा । इन्द्रावति को मूरत ग्रेहा ॥
राजै सुनि कै बदन न फेरा । पछि लगि भएउ चितेरा केरा॥
जाइ चितेरैं सदन उघारा । भा मन्दिर मों राज कुमारा ॥
सहस अठारह मूरत देखा । देखा रानिय रूप सरेखा ॥

भएउ विचित वियोगी, चित्र संवारन हार।
मन्दिर बाहर कीन्हा, दीन्हा फेर केवार ॥२९॥

जब जागा मोहा अनुरागी । अधिको प्रेम अगिन मन लागी॥
मेधा दारु हितानल पावा । छवर बढावा ताहि जरावा ॥
जब जिअन्तपुर पहुचा राजा । बुदुहि छाड तहा सो भाजा ॥
बुद्ध सेन बिछुरन दुख भेंटा । पै राजा को कहा न भेटा ॥
आप जिअन्तपूर महँ रहा । धीजे गहा बिछुरन दुख सहा॥

कुंवर अकेला होइ चला, लै सारङ्गी हाथ।
जेहि कारन भा जोगी, तेहि क प्रेम तेहि साथ॥३०॥

आगमपूर आइ नियराना । राजा को जिव मन रह साना॥
दिष्टि परा जबहीं कविलासा । मिलेउ सुगन्ध मीत को बासा॥
जतिय एक राजा सँग लागा । जोगी जाय कि रस मह पागा॥
कहेसि कहा लग गवन गोसाईं। लेब बसेरा निसि केहि ठाईं ॥
हम तापसी अगमपुर आहीं । कवन देस तुम हिरदै माहीं ॥

कहा जती सों राजा, आगमपुर मैं जाउं।
रात बसेरा लेइं मैं, एहि आगमपुर ठाउं॥३१॥

अहो बहुत ठाऊ है तहा । रात बसेरा लेइ हो कहा ॥
जो देखै चाहउँ भल नारी । मनतारा पर जाहु भिखारी ॥
ससि बदनी पनिहारिन आवैं । परगट आपन रूप देखावैं ॥

जो चाहसि कछु वस्तु बेसाहै । हाठ बसेरा नीको आहै ॥
जो तुम होहु भीख कर चेरा । राज दुवारैं लेहु बसेरा ॥
जो विद्या तुम चाहौ, पहुचहु विद्या ठौर।
नां तो इस्सर मंडपै, भलो नाथ ना और ॥३२॥
कहा कुवर मैं लेब बसेरा । जहा थान गौरीपति केरा ॥
जा दिन से गुरमुख फल पावा । रूप एक मोहि गुरुअ देखावा ॥
वही रूप है हिर्दे समाना । आन रूप मै हिये न आना ॥
छूछ दरब सो हाथ हमारा । बस्तु लेन की नाहिय् पारा ॥
आपन भीख ताहि मैं चीन्हा । जोग भेष जेहि कारन लीन्हा॥
हौं जोगी जेहि दरस नित, आपन दहौं सरीर।
विद्या है तेहि रूप को, अन्तप पद गम्भीर ॥३३॥
भा आगमपुर कुवर बिवोगी । मानहु मरग बीच भा जोगी ॥
महि निर्मल देखा तपधनी । धरतो मनहु रूप की बनी ॥
रहेउ आप माटी एक मुठी । भैंएउ प्रेम बल सो बैकुठी ॥
करता हित मॉटी सङ्ग हेरा । नासा गरब पाव किय केरा ॥
मॉटी भीतर रतन छिपावा । या नित आदर तेहिक बढ़ावा॥
सब ऊपर उत्तम जनम, अलख मानवहिं दीन्ह।
आपन थाती ताहि है, थाती हारा कीन्ह ॥३४॥
महा देव के मण्डप पासा । राजा बसा मनोरथ आसा ॥
जाइ सनेही निस जब पावा । इस्सर के आगें सिर नावा ॥
महादेव देवन के देवा । होहु दयाल करब मैं सेवा ॥
नहि नहि चूक कहेउँ प्रभूना । सेवा जोग कहा मोहि बूता ॥
हहु अन्तर जामी तुम देवा । जानन हहु सब मन कर भेवा ॥
होइ दयाल गौरी पती, पुरवहु काज हमार।
मनसा पूजै कारने, लीन्हा सरन तोहार ॥३५॥

जब महेस कह बहुत मनावा । सबद एक मरहम सो आवा ॥
प्रेम पूर पूरा है जहा । रानी की फुलवारिय तहा ॥
तेहिक नाम है मन फुलवारी । पिरहु जाइतेहि बीचभिखारी॥
वोहि फुलवारि लेहु बसेरा । मिलै दरस इन्द्रावति केरा ॥
सबद पाइ राजा रहसाना । सुमिरिसुमिरिहरसरहि बखाना॥

रैन गवाएउ जाप मों, भोर होत तपि नांह।
प्रेमपुरा मों होइ कै, भा फुलवारी माह ॥३६॥

जब राजा फुलवारिय आएउ । बास सुगन्ध प्रीत कर पाएउ ॥
मन फुलवारी मन फुलवारी । भएउ भएउमनमुदित भिखारी॥
फूलन सो दरसन कर चेरा । पाएउ रँग इन्द्रावति केरा ॥
पर चिन्ता कह छाड़ेउ जोगी । एकै चिन्त मो परा वियोगी ॥
मन बारी मन बारिय पावा । बीरो प्रेम प्रीत को लावा ॥

प्रीत बीज मन खेत मों, बोएउ राज कुमार।
इन्द्रावति को दरस हित, बैठा आसन मार ॥३७॥

जेहि दरसन ऊपर चित रहई । बचन देखाव दरस को कहई ॥
देख न सको होइ सदेसा । अन्तो प्रगटै किरपा भेसा ॥
जोत सैल के ऊपर हारइ । दरस देइ अन्तर पट जारइ ॥
गिरइ बुद्ध बैसाखिय करसो । होइ सरप तेहि धरइन डरसो॥
आय सुपाय परइ तब सोई । जैसो रहै तयस पुनि होई ॥

दरस पाइ कै मुरुझै, रहइ न चेत गेयान।
प्रेम अरथ यह भापित, बूझै चतुर सुजान ॥३८॥

अरे मित्रनी प्रेम पियारी । तोहि सम नहि दूसर उजियारी॥
फागुन मास बीच जस लीजे । खेलउँ फाग बालमिय संगे ॥
एक पियाला हाला पावउँ । त्रासहि छाड़ि देउँ दिखावउँ॥

जेतिक अहैं काय रुद अगू । तेतिक करहु ताछ सिरदँगू ॥
सुख के पाव तरें सिर नावँ । दुख के सिर पर होलिक लावँ॥

विना कदम्बरि के पिएँ, ग्राम न मन सों जात ।
दयावती होइ दीजिये, होलिक लागी प्रात ॥२९॥



[५] फाग खण्ड ।

आगमपुर कविलास मझारा । फागुन आइ अनन्द पसारा ॥
एक दिस पुरुखे एक दिस गोरी। झिलमिलगावहिं चाचर जोरी॥
डँफ बजावहिं औ सिरदँगू । पिचकारिन सों भरइ सुरँगू ॥
धन के ऊपर डारहिं नाहा । धन डारहिं पूरुष उपराहा ॥
रङ्ग अबीर भरा सब कोई । जो जहा रहा भरा तहा सोई ॥

गली गली घर घर सकल, मानहिं फाग अनन्द ।
भांति सब आनन्द सो, भा फागुन सुख कन्द ॥१॥

कैस आनद मानइ कोई । जै चिन्ता पाछें सवँ होई ॥
औ फिर आएउ कहा अजोरा । रोवहु बहुत हँसहु तुम थोरा ॥
मन पर घटा बुन्द बरसावा । एक बुन्द पर मद को आवा ॥
औरन सो मानुष नियराना । नियरे सो डर बीच समाना ॥
राजा नियर रहइ जउ कोई । ता कहँ बहुतै चिन्ता होई ॥

राजा के अस्थान सों, दूर बसै जो कोइ ।
तेहि मन निप किठोर सो, चिन्ता बहुत न होइ ॥२॥

इन्द्रावति राजा कर बारी । आगमपुर की प्रान पियारी ॥
सखिन साथ भूली सुख केला । औ भूली फागुन की खेलो ॥
धन के अङ्गन बल तरुनाई । आई छवि अधिकार बढाई ॥

जोबन लाज नयन मो दीन्हा । मुगधा सो मध्या तेहि कीन्हा ॥
गइ चचलताई थिरताई । आई लाज निकाइय पाई ॥

धन सूधें चितवत रहीं, निस दिन जेहि अँखियान।
सो तीछे चितवन लगीं, जोबन के अभिमान ॥३॥

इन्द्रावति सँग सखी महेली । गावहि गीत मनावहि केली ॥
सखिन माथ इन्द्रावति ठावँ । सजनी रही बिरहनिय भावँ ॥
सोवत मन बिरहिन को जागा । रही कमल अलि सङ्ग न लागा ॥
गाएउ होरिय बिरहिनि गोरी । तरुनाई सामय हइ थोरी ॥
जात अकारथ है पछताना । कान्हा कुवरिहि मङ्ग लोभाना ॥

है अथाह जोबन उदधि, थाकी नाव हमार।
खेवक कान्ह कहा है, खेइ लगावइ पार ॥४॥

लाभा कैान मिलै जग माहीं । जो प्रीतम अपने घर नाहीं ॥
धन पिय कोरैं पिय धन कोरा । सोवहि है दुख हम धन बोरा ॥
है जोबन हस्ती मतवारी । कहा महाउत आकुस धारी ॥
बिर्थ खाब सोइब औ जीवन । पिउना जिवना लोहुव पीवन ॥
बिरह आग नित जारत देहा । अन्त एक दिन होयइ खेहा ॥

जाइ बसाएउ मधु बनै, निदैं नन्द कुमार।
हम धन झूरैं रात दिन, गोकुल भएउ उजार ॥५॥

होरी प्यारी होरिय प्यारी । है नाही है मारन हारी ॥
गोरिन जोरिन के सँग होरी । गावहि होरिय बैरिन मोरी ॥
बना नहीं आएउ जोबना । गा सुख दुख आएउ अँगना ॥
फाग राग अनुराग बढावै । बिरह आग मनदाग लगावै ॥
बिनु प्रीतम बिछुरन बन माही । अहउ परी बन आवत नाही ॥

करता जो किरपा करै, मीलै प्रीतम प्रान।
नाहीं तौ जिउ जात है, फागुन होत निदान ॥६॥

सुनि होरी इन्द्रावति रानी । भइलि आपसो आतुर स्यानी॥
जोबन सिन्धु अगाध औगाहा । ना तो पार होइ कह थाहा ॥
खोज हिये सेवक कर कीन्हा । तजि आनँद तापर चित दीन्हा॥
होइ उदास रानि अमुहानी । बुझे न जानी सखिय सयानी॥
कहे न ध्यान धन का पर दीन्हें । धनुके बीच चन्द्रमा कीन्हे ॥

इन्द्रावति सखियन सों, राखा मरम छिपाइ।
दिन भर धन व्याकुल रही, गौ निस नींद पराइ ॥७॥

बीती रात भएउ जब भोरा । एक सखी आएउ धन ओरा ॥
बैठिय बोलिय बाल रसीली । तुम प्यारी सुकुवार छबीली ॥
सोभा रूप बहुत तोहि माहीं । ऐसी रूपवती कोउ नाहीं ॥
केहि लाहै यह छवि अधिकारी । आवन बदन न देखइ प्यारी॥
दरपन देउँ देखु मुख सोभा । एतो दिन लग जो भा सोभा॥

पहिले अंजन नैन मो, दै लीजे हो प्रान।
तब दरपन लै देखहु, बदन कनक को बान ॥८॥

सखी बात धन सरवन कीन्हा । अजन स्याम सखी तेहि दीन्हा।
दीन्हा अजन आखिन माहीं । दरपन लै देखा परछाहीं ॥
देखि बदन कर मजुल सोभा । धन मन अपने रूपहि लोभा॥
आपुहि पर रीझी वह प्यारी । रहिल अचेत भइल सुधवारी॥
पाएउ चन्द्र बदन उजियारा । कहा कहा है देखन हारा ॥

भएउ बेकल इन्द्रावति, चित गाँहक पर दान्ह।
हीरा मनि बिनु जौहरी, कैसेहु जाई न चीन्ह ॥९॥

भइ व्याकुल इन्द्रावति रानी । मन मो गाँहक सोच समानी ॥
लाग दोहाग सरीर मझारा । दगध दोहा को अहै अपारा ॥
भइ बिथहल इन्द्रावति बाला । भयो कपोल इँगुर हरताला ॥

इंगुर अधर दसन वह पारा । प्रेम क ..ाग दोऊ कह जारा ॥
अधर न हँसा न रद विहसाना । भा सँकेत मन कलिय समाना ॥
धन मन प्रेम आग पर, भा पारा के मान ।
चंचल औ व्याकुल भा, सुख औ नींद हिरान ॥१०॥
ताको कहा नीद सुख भोगू । जाको प्रीतम लाग वियोगू ॥
खाय तबै जब भूख सतावै । बोलै तब जब कोउ बोलावै ॥
देखै जोत रयन अधियारी । पियरो सेत अउर रतनारी ॥
सेत पियर मन जोत बिलोकै । और चँदर सम त्रास न रोकै ॥
जिठ की जोत बहुत है सेता । औ परघट है सूरज जेता ॥
महा जोत यह नैन सों, कहां बिलोकै कोइ ।
चखु सरवन औ नासिका, तेहि पल एकै होइ ॥११॥
प्रेम समुद्र बीच धन परी । लहरै खाय घरी औ घरी ॥
हिरदैं भीतर करइ पुकारा । कहा हमारो खेवन हारा ॥
दिन व्याकुल निस नीद न सोवै । व्याकुल होइ मनआखिन रोवै ॥
काम के बान को बेझा भई । बैरी ताहि भई तरुनई ॥
रहीलि एक तो अलप अहारी । औरैा तजा अहार पियारी ॥
छूट गएउ प्यारी सों, सुख सोइब औ खाव ।
चिन्त झकोरा सो पियर, भएउ सो ललति गुलाव ॥१२॥
मरमी नाम सखी धन केरी । पूछा कस धन है गति तेरी ॥
तोहि मन मो कछु चिन्ता अहई । तेरो बदन मरम सब कहई ॥
काहे बिना झकोर बयारा । पियरो ललित गुलाब तोम्हारा ॥
है बिस मो प्यारी मन माही । परमद छवि मुख ऊपर नाही ॥
फागुन भई मोद को मासा । तोहि अनन्द मनसो कह नासा ॥
दिवस चार सो देखउं, और बदन तोहार ।
अहै सीस के ऊपर, कछु चिन्ता को भार ॥१३॥

हो मरमी चिन्ता कछु नाहीं । अन्त सुरङ्ग फूल कुम्हिलाहीं ॥
फूल रहत पहिले दिन नीका । दुसेर देवस होत रँग फीका ॥
पुरन चन्द्र जो निर्मल होई । पुनि दिन दिन छीजत है सोई ॥
औ सब विरछ देखु धन हेरी । लागइ झरइ पात ना केरी ॥
हरियर रहइँ विरछे कइ डारा । देखहु होन चहइँ पतिझारा ॥

रहै न एकौ अन्त कहं, नारँग दाडिम दाख ।
देवस चार की चादनी फिर अँधियारो पाख ॥१४॥

कहेउ साव धन प्रान पियारी । पै नवीन है समै तुम्हारी ॥
तुम धन अहो दुइज कै चादू । पूरनचन्द्र परैउ तोहि फादू ॥
दिन दिन गो दूनी तोहि चाही । अबहि घटन की समैं न आही ॥
मैं मरमी मरमी हउँ तोरी । हमतें मरम न गोवहु गोरी ॥
मित्र बयद सो राखहि गोई । ताको भला न कबहू होई ॥

नव पत्री तुम रानी, जिउ फुलवारी माह ।
सामय पत्र झरै की, नाही तोहि उपराह ॥१५॥

धन मरमी को मरमी पाएउ । दाया सो तेहि कठ लगाएउ ।
कठ लाइ धन कहँ धन रोई । नरगिस नीर गुलाबहि धोई ॥
रोई कहा मा जोबन बैरी । का कीजे री देह दहै री ॥
जोबन गजरिपु मारी भारी । कहा महाउत राखइ मारी ॥
जिसको नीद दिवस को सेला । हरा दोऊ होइ सत्रु नवेला ॥

जोबन सिन्धु मां रतन, भाजल कली समान ।
खिन विलात खिन प्रगटत, व्याकुल रहत परान ॥१६॥

अहो रानी यह जग माहू । है यह गजक महाउत नाहू ॥
जब लग गजी पाउस ताही । तब लग ज्ञान महावत आही ॥
काम क्रोध मन मारे रहऊ । रहउ न व्याकुल धीरज गहऊ ॥

यह जोबन के काह करैरी　। एक समै सब को है बैरी　॥
तोहि मन भीतर चिन्त समानी। नींद कहा सो आवइ रानी ॥
नाव तोर रानी अहै, जोबन जलधि मझार।
करता खेवक मेरइहि, खेइ करइ तोहि पार ॥१७॥
इच्छा पूजै कहा हमारी　। भइउ जगत सो मैं हत्यारी ॥
निर्प बहुत मोहि कारन आए । जलज जलधि सो जीव गँवाए ॥
हत्या बहुत चढो है मा का　। कित भल मोर होइ सुर लोका॥
जानत हो जस आनब चाही । रहउ अकेली बिना बियाही ॥
सोतिब बर इन काहुब हाथा । सेंदुर चढइ न मोरेह माथा ॥
अर्जुन धनुधारी कहा, राहु सो बेधै आइ ।
मीटै पन अति गाढा, द्रोपद ब्याही जाइ ॥१८॥
आस न छाडहु होइह काजा । अरजुन सम होइ कोइ राजा ॥
जैसैं कविधुज बेधेउ राहू　। भएउ द्रौपदी सङ्ग बियाहू　॥
तस वह मोती आइ निमारे । तोहि सँग परमद बिते मवारै ॥
सिवहिं सुमिरु जेइँ परम बतावा॥ तस मनाउ जस आइ मनावा॥
है सब काज घरी कर बाधा　। आइ घरी हलुकाइहि काधा ॥
देह दुर्म पलुहावहु, न तो जाहि कुम्हिलाइ।
पूजै इच्छा रानिया, जा दिन घरी तुलाइ ॥१९॥
रात समै इन्द्रावति रानी　। व्याकुल चिन्ता सिन्धु समानी॥
सुमिरा महादेव कर नाउँ　। पारबतिहि आना मन ठावँ ॥
बेता के परन पुजावहु तुही । गुरजन बीच करहु सित मुँही ॥
तुम जगदम्बा सिव अधंगी　। देहु सोहाग होउ पिय सङ्गी ॥
धकर फूल चढा पिय पागा　। फूल हमार डार है लागा　॥
सोइ गइउ सेजिया पर,सिव औ सिवा मनाइ।
सोवतहि देखा सपन, जागत रहिउं तवाय ॥२०॥

हो मरमी चिन्ता कछु नाही । अन्त मुरझ फुउ कुम्हिलाहीं ॥
फूल रहत पहिले दिन नीका । दुसेर देवस होत रँग फीका ॥
पूरन चन्द्र जो निर्मल होइ । पुनि दिन दिन छीजत है सोई ॥
औ सब विउं देखु धन हेरी । लागइ झरइ पात ना फेरी ॥
हरियर रहइँ विउं कइ डारा । देखहु होन चहइँ पतिझारा ॥

रहै न एकौ अन्त कहं, नारँग दाडिम दाख ।
देवस चार की चादनी फिर अंधियारो पाख ॥१४॥

कहेउ साच धन प्रान पियारी । पै नवीन है समै तुम्हारी ॥
तुम धन अहो दुइज के चाद । पूरनचन्द्र परेउ तोहि काद ॥
दिन दिन गो दूनी तोहि चाही । अवहि घटन की समै न आही ॥
मैं मरमो मरमी हउँ तोरी । हमतें मरम न गोवहु गोरी ॥
मित्र चपद सो राखहि गोई । ताको भला न कबहू होई ॥

नव पत्रो तुम रानी, जिउ फुलवारी माह ।
सामय पत्र झरै की, नाहीं तोहि उपराहं ॥१५॥

धन मरमी को मरमी पाएउ । दाया सो तेहि कठ लगाएउ ॥
कठ लाइ धन कहँ धन रोई । नरगिस नीर गुलावहि धोई ॥
रोई कहा भा जोबन वैरी । का कीजे री देह दहै री ॥
जोबन गजरिपु भारी भारी । कहा महाउत राखइ मारी ॥
निसको नीद दिवस को खेला । हरा दोऊ होइ मतु नवेला ॥

जोवन सिन्धु मां रतन, भाजल कली समान ।
खिन बिलात खिन प्रगटत, व्याकुल रहत परान ॥१६॥

अहो रानी यह जग माहू

यह जोवन को काह करैरी । एक समै सब को है वैरी ॥
तोहि मन भीतर चिन्त समानी। नींद कहा सो आवइ रानी ॥

नाव तोर रानी अहै, जोवन जलधि मझार।
करता खेवक मेरइहि, खेइ करइ तोहि पार ॥१७॥

इच्छा पूजै कहा हमारी । भइउ जगत मो मैं हत्यारी ॥
निर्प बहुत मोहि कारन आए । जलज जलधि मो जीउ गँवाए॥
हत्या बहुत चढी है मो का । कित भल मोर होइ सुर लोका॥
जानत हो जस आनब चाही । रहउ अकेली बिना बियाही॥
मोतिय बर इन काहुब हाथा । सेंदुर चढइ न मोरेह माथा ॥

अर्जुन धनुधारी कहा, राहु सो बेधै आइ ।
मीटै पन अति गाढा, द्रोपद ब्याही जाइ ॥१८॥

आस न छाडहु होइह काजा । अरजुन सम होई कोइ राजा ॥
जैसैं कविधुज बेधेउ राहू । भएउ द्रोपदी सङ्ग बियाहू ॥
तस वह मोती आइ निसारे । तोहि सँग परमद बिर्ल सवारै॥
सिउहिँ सुमिरु जेइँ परम बतावा। तस मनाउ जस जाइ मनावा॥
है सब काज घरी कर बाधा । आइ घरी हलुकाइहि काधा॥

देह दुर्म पलुहावहु, न तो जाहि कुम्हिलाइ।
पूजै इच्छा रानिया, जा दिन घरी तुलाइ ॥१९॥

रात समै इन्द्रावति रानी । व्याकुल चिन्ता सिरपा बनबीम.
सुमिरा महादेव क[illegible] ।[illegible] दुर्ख बीत कन्त नित बीता॥
अह खेल नैहर को जिवना । पै पिय बिन है लोहू पियना ॥
नैहर खेल अहै दिन चारी । पियसग जनम निबाह पियारी॥
नैहर तेहि नरक समाना । जाके मन मों पीउ समाना ॥

॥ जो निदँ होइ प्रीतम, देइ नरक असथान ।
॥ होइ सोई बैकुण्ठ सम, पतिबरता के जान ॥२७॥

जो परी चित बाहर धावा । सो निदान महि ऊपर आवा ॥
अपने जोग ठाव जेइ लीन्हा । सब कोऊ तेहि आदर कीन्हा ॥

सब काहूं कह ठाउँ है, अपने अपने मान ।
रानी राजा जोग है, ससि जोगे है भान ॥५॥

हौ मै ता दरसन नित जोगी । भसम चढाएँ प्रेम बियोगी ॥
ताको प्रेम गुरू है मेरो । जोग सिखाय कीन्ह मोहि चेरो॥
जब मन बसी धरेउ तब जोगू । तजि कै सकल जगत सुख भोगू ॥
वोहि उत्तम दरसन के कारन । आएउ नाचि मेह दधि आरन॥
जा दिन मै दरसन वह पावउ । होइ आप आपुहि हेरवावउ ॥

दरसन देखै कारनहि, रोम रोम भये नैन ।
नींद न आवत निस कहं, बासर परत न चैन ॥६॥

चैन कहा चिन्ता जेहि जीऊ । जीउ दुग्ध भा चिन्ता घीऊ ॥
जब चिन्ता तब नींद न आवै । आवै तब जब चिन्ता जावै ॥
प्रेमी पर चिन्ता कह मारै । मारै मन चाहुत जिय वारै ॥
हेरै प्रीतम मुख नहि फेरै । कोरैं भित्र मित्र पह हेरै ॥
रोवे रकत आस नहि सोवै । दरसन लाग रात दिन रोवै ॥

सत्तर सिर मन तीन सै, पांव एक सै जाहि ।
प्रेमी को दुख देत सो, प्रेम अर्थ यह आहि ॥७॥

हौ जोगी पै उत्तिम भीखा । प्रेम पाइ मागै मै सीखा ॥
जेहि मन ऊँच ऊँच भा सोई । जेहि मन नीच नीच सो होई ॥
कहा चाद कह रहइ चकोरा । प्रीत लाग चितवत तेहि ओरा ॥
औ अरविन्द रहै जल माही । रवि सेवत तेहि जोगें [illegible]
दादुर कवल सनेह न पावै । धावै मधुकर तेहि [illegible]

दूर देस की दिष्ट सों, है समीप गुन मूर ।
बिना नैन औ दिष्ट के, नियरें के है दूर ॥

मालिन कहा बहुत तुम बूझा । प्रेम पन्थ उजियारा सूझा ॥
कवन जात है का है नाऊ । कहा जनम भुम्मी को ठाऊ ॥
कहा रहेउ मैं जात चदेला । अब सम जात धूर सिर मेला ॥
जनम भुम्मि कालिञ्जर ठाऊ । राजकुवर है मेरो नाऊ ॥
प्रेम तेहिक मोहि चेला कीन्हा। राज छोडाय जोग गुन दीन्हा॥

हौं जोगी तेहि पन्थ को, नहिं चाहौं कविलास।
चाहउँ दरसन भिच्छा, राखत हौं नित आस॥९॥

हो जागी मुख आभा तेरी । साखि देत है राजा केरी ॥
पै तोहि साथ न सेवक कोई । राजा पर विस्वास न होई ॥
औ मोती का द्रव है गाढा । बूडे बहुत न काहुअ काढा ॥
भीख मिलन गाढी है जोगी । भाग जो होइ तो होहु सँजोगी॥
याहू पर बहुतै तुम कीन्हा । तजि सुख भोग जोग दुख लीन्हा

जेहि दरसन के दीप पर, है पतङ्ग संसार ।
प्रेम तेहिक तुम लीन्हा, मरै न नाम तोहार ॥१०॥

है इन्द्रावति विद्याधरी । विद्याधरी आप अउतरी ॥
है पदमिनि मृगसावक नैनी । ज्ञानवन्त औ कोकिल बैनी ॥
जो काहुअ पर डारै डीठी । सो जन देइ जगत दिस पीठी॥
अस रुपवन्ती सुन्दर आहै । बिनु देखें सब ताहि सराहै ॥
रोलै सुख परभात देखावै । खोलै केस साझ होइ आवै ॥

है तेहि चन्द्र बदन लखि, जगत नयन उँजियार।
गगन सहस लोचन सों, निरखै तेहिक सिंगार॥११॥

धन दृग मतवारे पैरारे । चितवन बीच सिन्धु जा ढारे॥
अधरन सो मुसकान सोहाई । बात कहत सो झरत मिठाई ॥
सखी अहैं दरपन तेहि माही । डारा सुन्दर मुख परछाहीं ॥

तासो सखी भई छवि धारी । छवि दाता है प्रान पियारी ॥
है मन अलक बीच हैं बाधे । लेहि सहस जिउ हत्या काधे ॥
वहुतन तजि जग धन्धा, तप साधा तेहि लाग ।
अरुझि रहा मन अलकै, जिउ मारा अनुराग ॥१२॥
है तेहि अस ताक मो दीया । भा उजियारो मन्दिर हीया ॥
सीसा बीच दिया है धरा । मनु सीसा तारा निर्मरा ॥
है मन्दिर सोभित फुलवारी । अहै सुगन्ध मालति वह बारी ॥
लेहि रहैं आखिन पर चेरी । अहै सखी छाया तेहि केरी ॥
दिष्ट न आवत ताकी छाया । मानहु जीव धरे है काया ॥
वोहि डोले सब डोलैं, थिरें थिरै सब कोइ ।
काया सों जो होत है, सो छाया मो होइ ॥१३॥
सात अन्तर पट भीतर सोई । रिहत न देखत अँखिन्हि कोई ॥
बारह मन्दिर मो वह प्यारी । रहत सदा है सेज सँवारी ॥
हीरा मात सात जस तारे । हैं मन्दिर भीतर उँजियारे ॥
दुइ से औ अढतालिस करी । लागे रतन पदारथ भरी ॥
है मन्दिर मो तेरह द्वारा । नो द्वारा नित रहत उघारा ॥
वाय तेज जल पिथिवी, मानहु कैयक ठाउं ।
बारह मँदिर संचारा, जगपत जाको नाउं ॥१४॥
आवै जाइ पवन दुइ द्वारें । सङ्गी सोहु न सबद सँचारें ॥
दसवँ द्वार न खोलन कोई । तब खोलै जब मरमी होई ॥
दस चेरी धन की गुन भरीं । सेवा बीच रहैं नित खरी ॥
पाच मँदिर के बाहर रहईं । पाच मँदिर भीतर गुन गहईं ॥
एक सुध पाचो सो नित लेईं । सुध चारो चेरिन कह देईं ॥
है सरूप वह रानी, रहै सात पट मांह ।
सखियन सो वह प्रगटै, अहै सखी सन छाह ॥१५॥

सुनि इन्द्रावति रूप बखानो । राजकुंवर हिर्दै रहमानो ॥
कहा लेहिउ तेहि कारन जोगू । है माहिमानस प्रीत वियोगू ॥
भायेउ आवत इहा अकेला । गुरु न भयेउ का राखउ चेला ॥
होउँ अछिध मो होइ मर जीया । तजि जिउ भय पोढा कइ हीया॥
भाग जो होइ जलज निसारउ । ना तो जिउ जिउ कारन वारउ॥

प्रेम फांद मों हैां परा, नहिं छूटै की आस ।
मिलबो चाहैां प्रान को, अहै न भूख पियास ॥१६॥

जो चाहत सजोग वियोगी । जो मैं कहउ सो साधहु जोगी॥
खोटे काज के नियर न जाहू । निरमल कथा होइ जस चाहू ॥
पर चिन्ता तजि सुमिरहु ताको । होइ सो भरता मन आभा को ॥
ना रहिये आपा गुन साथा । निरमलता आवै जिउ हाथा ॥
मन जिउतें सुमिरहु वह नाऊ । बुझहु प्रान मो ताको ठाऊ ॥

दूसर चिन्ता छाड़ि कै, तापर लावहु ध्यान ।
मन फुलवारी मो रहै, पावहु दरस निदान ॥१७॥

आपन है नाही करु जोगी । पुनि है होसि होसिहै भोगी
नाहीं होइ नाहि तै हेरा । ना तो मिलत नियर तेहि केरा॥
नियर मिले तैं दरसन होई । जोग मूल है तीनउ सोई ॥
जो मर जिया सो भा मर जीया। मोती लिया दिया भा दीया ॥
मरिकै जिउ पुनि मीचु न आवै। प्रानपियारी बदन दिखावै ॥

छिन अन्तरपट होइ रही, फुलवारी के फूल ।
देखु रङ्ग प्यारी कर, है रङ्गन को मूल ॥१८॥

कहि राजा सो भेद कहानी । गइल जहा इन्द्रावति रानी ॥
भै व्याकुल प्यारी तब ताईं । जोगी आइ बसा मन ठाईं ॥
बाढेउ प्रीत जोगेस्वर केरी । मन पद परी प्रेम की बेरी ॥

कहै कहा वह रावल प्यारा । दै दरसन मन हरा हमारा ॥
सोइब रहेउ जाग सो भला । जामो मिला दरस निर्मला ॥
मिला दरस जेहि सपन मों, तापर वारी जाउं ।
जागब मोहि वैरी भयेउ, कीन्ह दूर दुइ ठाउं ॥१६॥
वोही समै मो मालिनि गई । प्यारी कहँ सुख दाता भई ॥
पूछै लाग परान पियारी । है कस आज काल्ह फुलवारी ॥
बीता फागुन औ पतिझारा । जो निर्पात कीन्ह कुज डारा ॥
जो पच्छिन को जीउ सतावा । पत्र को झारिके छाह नसावा ॥
सो तो अब न रहेउ जग माहीं । फुलवारी पलुही की नाहीं ॥
बदन उघारा है पुहुप, अली भँवहिं उपराहँ ।
की समुझत पतिझार कों, अहै छिपी पट माहँ ॥२०॥
चेता नारी सलर निसारी । हो प्यारी फूली फुलवारी ॥
मान पाट पर बैठे फूलैं । फूल बास मधूकर मन भूलैं ॥
देइ कै उतर कुसुम को हारा । इन्द्रावति के गल मो डारा ॥
फेर कहा दिन बहुत न गयेऊ । सपन तुम्हारो चेतुक भयेऊ ॥
फुलवारी मो है एक जोगी । रानी दरसन लाग वियोगी ॥
है कालिंजर महीपति, राजकुंवर है नाउं ।
नाम तिहारो जपत है, मन फुलवारी ठाउं ॥२१॥
ए रानी का बरनउ ताही । धूर लपेटा मानिक आही ॥
बहुत सरूप अहइ वह तपा । कन्था बीच रतन है छपा ॥
होइ दृग जिउ जो देखनहारी । तो सुख ताको लखै पियारी ॥
जावत राजा लच्छन चाहीं । है सब दृग रतनारी आहीं ॥
जहुँ चन्द सम भाल सोहाई । रेखा तीन दिष्ट मोहि आई ॥
धनुक समां है भिकुटी, नयना चोखी बान ।
कीर समा है नासिका, सनद मोर परमान ॥२२॥

लवर करन को सीर न आहि । राजा सिद्ध होन कस चाहै ॥
कुअर वियोगी उपवन ठाऊँ । निस दिन सुमिरत रानी नाऊँ॥
अहै प्रेम मदिरा मतवारा । जपत सास मो नाम तुम्हारा ॥
लेन न एकउ भूले सासा । दरसन लाग देह सुख नासा ॥
जोगी भेस न सकउ सराही । गोपीचन्द्र दूसरो आही ॥

होत जियत को भरथरी, ताको चेला होत ।
आइ बसा फुलवारी, सुनहु खोलि मनस्रोत ॥२३॥

इन्द्रावति सुनि जोगी नाऊ । जोगिन होइ चहा तेहि ठाऊ ॥
कहा सपन को जोगी प्यारा । होइ वोही मनहरा हमारा ॥
सकल आऊ तुम आइ सुनावा। सपन तपी लच्छन मैं पावा ॥
एक अचम्भो आवत हियरें । है न कहू कालिंजर नियरें ॥
मो सुनरूप कहातें पावा । जोगी होइ अगमपुर आवा ॥

भेंट न होइ न गुन सुनै, प्रेम कहां सों होइ ।
कैसे मोहिं कारन भयेउ, आगम जोगी सोइ ॥२४॥

अहो पियारी बूझन तोका । तोर बखान गयेउ सुर लोका॥
तहा सदा सब निर्जर नारी । चरचा तेरो करइ पियारी ॥
धरती पर कालिंजर देसू । सुनि बखान भा जोगी भेसू ॥
तैं धन कली समा पट माहीं । सैकी लाउप तोहि उपराहीं ॥
नहि जानो कस परत पुकारा । जो परगट मुख होत तुम्हारा ॥

तुम धन प्यारी पद्मिनी, सुधा भरे अधरान।
वहुत अमी अ रन पर, दिहेनि सुन्धु मो प्रान ॥२५॥

हो धन जाको नाम सुनायेहु । फुलवारी मो दरसन पायेहु ॥
मन औा ज्ञान हरा है सोई । होत भलो जो दरसन होई ॥
मैं सकुचाउ जात फुलवारी । भइउ नयन सो मैं हत्यारी ॥

चार दिष्ट काहुव सो होई　　। जाइ चेत सो मुरछेइ सोई　॥
औ परगट मोहि चलत न भावै । अब मोहिलज्या जिउ सकुचावै॥
गयेउ सखी वह सामै, आंखिन रहो न लाज ।
अब यह नैन हमारो, पायेउ लाज समाज　॥२६॥
लाज नहीं जेहि आखिन आही । है वह पसु है मानुष नाहीं　॥
घुघरू पहिर लाज यह आही । पगु कह धीमे राख बचाही　॥
औ घन ऊची सबद न बोलै । सुनत बिराने को मन डोलै　॥
औधे नैन लाज सो कीजै　। औ मुख ऊपर घूघट लीजै　॥
हो प्यारी जब पहिरहु गहना । पुरुष बिराने सो छिप रहना ॥
हैं वारो अलबेली, वारी कैसे जाउं　।
भेंट होइ काहुअ सों, खोर और मग ठाउं　॥२७॥
जो जोगी देखै तुम चाहा　। जोगिहि मिलै जोग सो लाहा॥
परगट तुम्है चलै को कहई　। तो पट भलो पवन रथ अहई ॥
तेहि पर चढ़ि के चलिये प्यारी । चारो दिस पट लीजे डारी　॥
जोगी साथ न दूसर कोई　। है अकेल बारी मो सोई　॥
है भिच्छुक तेहि दाया कीजे　। उत्तम दरसन भिच्छा दीजे　॥
दर दिखाइ कै दरसन, आपुहिं लेहु छिपाइ ।
अधिक बढ़ै अभिलाष तेहि, दूसर पंथ न जाइ ॥२८॥
चलहु चलहु निसरै फुलवारी । देखउ जोगी कह मन वारी　॥
आज देवस औ रैन बितावउ । प्रात समै फुलवारी आवउ　॥
जोगी पास अहै मन मोरा　। भयेउ सीस पर प्रेम झकोरा ॥
होइ गयें आपन मन पावउ　। मन पायें आनन्द मनावउ　॥
पहिले आपन दरस देखायेउ । पाछें सो मोहि नोग सिखायेउ॥
रहिउ अचेत भुलानी, लाग राग को बान　।
प्रेम निनारो जो जियउं, तेहि ले मरउं निदान ॥२९॥

ना लै मरन क नाम पियारी । तोहि मरत मरिहैं बहु नारी॥
जह लग है नारी रज दीपी । का विछुरानी काह समीपी ॥
तोहि जिय सो जीयत सब कोई। कहु न मरन तो पर लैा होई॥
है जह लग रजदीपी नारी । जीउ निन्है है प्रीत तुम्हारी ॥
भलो भयेउ जो बाढा प्रेमू । निश्चि है प्रीतम होइहै खेमू ॥

अति समीप है प्रीतम, अहै न एकौ बाट ।
एक पाव दे आप पर, बैठु मिलन के पाट ॥३०॥

काहे न लेउ मरन कर नाऊ । मरब एक दिन धरती ठाऊ ॥
केतिको प्रीत जगत महँ होई । देत न साथ मरन मह कोई ॥
जावत जिया जन्तु जग रहई । करता बस सब को जिय जहई॥
है समीप वह मित्र हमारा । पै जगधन्ध दूर मोहि डारा ॥
काम क्रोध तिस्ना मन माया । है रिपु कछहु उपायन पाया॥

किछु उपाय नहिं आवै, जाते जाहिं नेवारि ।
हे बैरी मोहि गाढे, सकौं न यह सन मारि ॥३१॥

अहो तुम राजा कर बारी । अरुझि रहिउ सुख बीच पियारी
सुखमो काम क्रोध अधिकाई । तिस्ना मया करइ अगुवाई ॥
चार पखेरू तोहि तन माहीं । चारो चारा नित उडि जाहीं॥
देत प्रीउ चारो कर प्यारी । मरिकै जियहि होहि गुनधारी॥
मन दरपन ऊपर चित दीजे । नाहीं है सो निर्मल कीजे ॥

मांज सजो मन दरपन, रात देवस चित लाइ।
स्याम रंग अन्तर पट, उठि आगें सों जाइ ॥३२॥

बोठब सोइब खाइब थोरा । होइ होइ तैा कारज तोरा ॥
औ चिंहार प्रीतम को लीजे । जो सिखवै सो कारज कीजे ॥
औ निस बासर अकसर रहना । सुमिरन जाप बीच दुख सहना॥

पै यह मन है मनु सयाना । जात न मारा सुए लुबुधाना ॥
मन बरजे कह काको करई । मन न मरै बहु मारा मरई ॥
मालिन हिता उपाय दै, गई आपने गेह ।
इन्द्रावति के मान सें, भयेउ समस्त सनेह ॥३३॥

चलु मन तहा जहा फुलवारी । तहा बसा है दरस भिखारी ॥
मित्रहि भेंटहु देखहु फूलू । है फुलवारी परमद मूलू ॥
धन सो मानुष धन तेहि भागू । जेहि मधु मिलेउ खेलि कै फागू ॥
जेतो तेहि पतिझार सतावा । तेतो सो बसन्त सुख पावा ॥
धन जग माली मिर्जन हारा । कुछ पलुहावत है पतिझारा ॥
भागवन्त सो मानुष, है तेहि धन धन हाथ ।
मित्र बदन औा फूल मुख, देखै एकै साथ ॥३४॥



[७] फुलवारी खण्ड ।

इन्द्रावति दिन रात बितावा । भोरहि सखियन कह हँकरावा ॥
भै न बिलम्ब सखी सब आई । तारा समा रही जह ताई ॥
आइ ससि बदनी घेर दीनी । सकल राज दीवी पदुमीनी ॥
आईं समुदै कुल की सुता । बहु व्याही बहु अव्याहुता ॥
भोर समय बहु नपत सहेली । धन मयक घेरेन अलबेली ॥
रानी की सब सहचरी, आइ जुरीं तेहि पास ।
सब अपछरा समा रहिं, भवन भयेउ कबिलास ॥१॥

इन्द्रावति सखियन सो कहा । सो दिन गयेउ बिछो जो दहा ॥
जग सो पतिझारी रितु गई । पलोहे बिछे नवल रितु भई ॥
कालह जनायेउ चेता नारी । फूल रही है मन फुलवारी ॥

चलहु गवन बारी दिस कीजे । फूल देखि परमद रस लीजे ॥
नहि जानहि मिर परिहै केसो । खेलहु होइ खेलना जैसो ॥
फुलवारी चाहत है, मन बैरागी मोर ।
चलहु देखिये उपवनै, है बसन्त रितु थोर ॥२॥
थोरा है कुसुमाकर बेला । चलि देखहु औ खेलहु खेला ॥
बीतो बेला छूटा बानू । हाथ न आवै झँखै परानू ॥
सकल समै को भेद छपाना । है हमलोगन ताको जाना ॥
मेटन औ राखत करतारा । जो चाहै है सिरजन हारा ॥
समय खरग है काटन हारी । जात चली तेहि भेदु विचारी ॥
मधु मीठो है मधु समां, मधु दरसन को लेहु ।
हार सरीर ग्रीव को, हार कुसुम को देहु ॥३॥
सब काहू धन आज्ञा माना । फुलवारी दिस कीन्ह पयान ॥
इन्द्रावति रथ ऊपर चढी । दूनो बढी रूप की बढी ॥
चली मानसो ब्राम्हन बारी । बनियाइन नाइन पटहारी ॥
चली सोनारिन कचन बरनी । रजपूती खतरिन मनहरनी ॥
लोनी धन हलवाइन भली । अधर मिठाइ बाटत चली ॥
चलीं सहेली सुन्दरी, इन्द्रावति के संग ।
गीत बसन्ती गावतैं, पहिरे दुकुल सुरंग ॥४॥
मन फुलवारी मो सब गई । देखि सुमन को सुमना भई ॥
चेता मालिन भेटेउ आई । चन्द्रबदन देखे दुति पाई ॥
सुगँध कुसुम को हार मवारा । सब सुन्दरि के गीउ मो डारा ॥
देखि भवर गन गुजत तहा । एक सखी बोली मन महा ॥
धन यह मधुकर धन यह फूलै । किन के ऊपर अलि मन भूलै ॥
जगत मझार सराहिये, भंवर फूल को हेत ।
भवरहि चिन्ता फूल की, फूल बास रस देत ॥५॥

सुनि सचेन इन्द्रावति रानी । बोली सुनिये सखी सयानी ॥
जग मो प्रीत बखानहु सोई । जीवन मरन एक सँग होई ॥
खोटी प्रीत भवर की आहै । भवर आपनो कारज चाहै ॥
जाइ भवात बास रस आसा । लै रस तजत फूल को पासा ॥
लै रस बास भवर उड़ि जाई । मरत न जब सुमनस कुम्हिलाई॥

प्रेमी ताको जानिये, देइ मित्र पर प्रान ।
मित्र पन्थ पर जिउ दिहैं,जुगजुग जियै निदान॥७॥

धन जो प्रीतम पर जिउ वारा । सिर पर चला प्रेम का आरा ॥
धन जो परा हुतासन माही । और सहायक चाहा नाही ॥
दया दिष्ट प्रीतम तब धरा । पावक फूल भयेउ नहि जरा ॥
धन जो मित्र आपनो चीन्हा । पुत्र जीउ आगें कै दीन्हा ॥
मुवा न कहो जियत है सोई । अलख पन्थ जो जूझा होई ॥

मित्र जो है करतार के, मरत नहीं हैं सोइ ।
एक मन्दिर तजि दूसरें, गवनत हैं वै लोइ ॥८॥

गायेउ गीत एक धन प्यारी । जग है करता की फुलवारी ॥
आपुहि माली आपुहि फूला । आपुहि भँवर फूल पर भूला ॥
आपुहि रूपवन्त सो होई । प्रेमी होइ रिझत है सोई ॥
आपुहि परगट गुपुत अकेला । गुरू होइ कहु कहु होइ चेला ॥
आपुहि दाता करता होई । दिष्टा स्रोता बकता सोई ॥

सुनि सरवन दै चेत सों,सपन बखाना गीत ।
उपजो सब के हिदैं, चतुर सखी की प्रीत ॥९॥

एक कहा हो राजदुलारी । है आनन्द ठाठ फुलवारी ॥
खेल एक खेलहु सब कोई । जासो स्वात बीच मुद होई ॥
एक कहा आनन्द न चहऊ । निस दिन आगम सोचमो रहऊ॥

बहुत अनन्द न चाहौ प्यारी । ना तौ परै आइ दुख भारी ॥
एक कहा चिन्ता भल नाहीं । तरुनी चिन्ता सो बिरधाहीं ॥
खेलि लेहु नइहर मों, सब मिलि परमद खेल ।
पुनि नइहर के छाडतैं, सासुर होव अकेल ॥१०॥
हम अज्ञात न सासुर चीन्हा । यह नइहर ऊपर चित दीन्हा॥
है जग जीवन खेल समानू । ऊमर नहीं है मरन निदानू ॥
हम कह पार मीचु सो नाहीं । निसरि गगन महि तट ते जाहीं॥
जानत मरम हमारो सोई । जाको सुमिरत है सब कोई ॥
मूरत अलख नहीं जग ठाऊ । हम तुम राखा हे तेहि नाऊ ॥
यह मूरत को तजि कै, चित्त अमूरत देहु ।
जाहि अमूरत ध्यान सों, स्वर्ग लोक फल लेहु॥११॥
राजकुअर फुलवारी माहीं । धन को आवन बूझा नाहीं ॥
चातुर चेता कै चतुराई । सब काहू सो बात जनाई ॥
है फुलवारी मो एक जोगी । है काहू को प्रेम बियोगी ॥
है यह ठौर बहुत दिन सेतीं । नहि जानहु बाउर केहि नेतीं॥
सुनि कै सखिन कहा चलु रानी । देखैं है कस जोगिय ध्यानी ॥
बात सुधानी सखिन कहं,चली सखिन के सग।
एक एक सब काहु, लीन्हें फूल सुरंग ॥१२॥
बरजा एक अगम की नारी । तुम सुरूप राजा की बारी ॥
अलबेली लागहु भल देखें । तुम तिय जियअस जिय के लेखें॥
हसितैं बारी बिना बियाही । जोगी देखै तोहि न चाही ॥
लागहु तपी नयन मो मीठी । गहजिनि होइ लगै तोहि डीठी॥
नहि जानहि जोगी कस अहई। आपन कथा केहि निन दहई॥
देखहु मन फुलवारी, जाहु न तपी समीप ।
होइ पतंग तपी यह, देखि बदन को दीप ॥१३॥

जब यह बात सखी वह कही । सुनि मलीन रानी होइ रही॥
औरन कहा चलहु बहि वोरा । जग करता है रच्छक तेरा ॥
रच्छक आप अलख है जाको । एकहु बार न बाकै ताको ॥
पै अबही देखहु फुलवारी । फेर चलेहु जेहि ओर भिखारी॥
सुखी भई यह बात बयानी । लीन्ह सुरंग फूल एक रानी ॥

देखत रहिगै रानी, लिहैं फूल को हाथ ।
एक सखी हँसी बोली, इन्द्रावति के साथ ॥१४॥

हँसि कै मालिन को गुन गावा। धन चेरा अस फूल लगावा ॥
उतर दीन्ह सुनि चेरा नारी । मोहि न सराहो अहो पियारी॥
सुमिरहु तेहि जो है सुख दाता। जे यह फूल कीन्ह रंग राता ॥
जो हमार दोउ हाथ बनावा । जेहि करतें मैं फूल लगावा ॥
जग मो जावत है सब बना । तापत करता को दरपना ॥

दीठ होइ तो देखहू, तन आदरस मझार ।
बदन बिराजत है तेहि, जेहि सकल संसार॥१५॥

है वह एक जगत उपराजा । जो दोइ होत बनत नहि काजा॥
धरती गगन मझारा सोई । तासो जोत अउर तम होई ॥
करता तीन अउर दुइ नाहीं । एकै है दोऊ जग माहीं ॥
जो किछु करत न पूछा जाई । पूछा जाइ जनम जेइ पाई ॥
कीन्हा निस दिन औ रवि चन्दा। तेहि सुमिरन मो सबहि अनन्दा

रात दिवस दुइ चिन्ह है, रात मिटत दिन होइ।
याही मो लेखा बरस, जानत है सब कोइ ॥१६॥

इन्द्रावति धन कमल सुबासा । आइ भँवर गूजे चहु पासा ॥
कहा सखिन सो हर जिउ पावै। भवर न मो तन डक लगावै ॥
कहेन सखिन तुम कमल पियारी। लेत भँवर हैं बास तुम्हारी ॥

मोहैं वास पाइ कै तेरी । कहा तिन्हैं सुधि विन्धै केरी ॥
फूल भवर होइ आइ भँवाहीं । तोहि ऊपर तो अवरज नाहीं ॥
भंवर वास के कारने, चहु दिस आइ भंवाहिं।
पोढा मजरूरु रानियां, विन्धै की डर नाहिं ॥१७॥

जह लग सुन्दर रही सयानी । फुलवारी देखैं रह सानी ॥
कहा एक आगम की वारी । धन नइहर जामो फुलवारी ॥
फुलवारी औ फूल विलोकैं । बहुत अनन्द बढ़ी है मोकै ॥
फेर न देखब अस फुलवारी । जब गवने जावै ससुरारी ॥
परै सीस पर भारी भारा । कैसे राखिही कन्त हमारा ॥
नइहर अहै पियारा, चक चूहट जिय होइ ।
सुमिरि गवन सासुर को, दूर परै सब कोइ ॥१८॥

सुनि इन्द्रावति सासुर नाऊ । मनमो सोच कीन्ह तेहि ठाऊ ॥
कहा जाब निश्चय ससुरारी । नइहर तजब तजब फुलवारी ॥
छूटि परै सब सखी सहेली । जावै सासुर अन्त अकेली ॥
अहो सखी आगम मोहि सूझा । सासुर गवन आजु मैं बूझा ॥
अस फुलवारी पाउब कहा । सासुर नगरी होइहै जहा ॥
तुम्हैं समां कित पाऊं, एक बैस की नार ।
नइहर खेल न पाइब, जब जावै ससुरार ॥१९॥

समुझा सखिन सोच मो रानी । बोली सरब बोध की बानी ॥
अहो पियारी सोच न करहू । जेहि प्रीतम प्यारे सग परहू ॥
ठाउ देइ सुख मन्दिर प्यारी । लाइ देखावहि तोहि फुलवारी॥
देइहै बहुत हमैं अस चेरी । करइ रान दिन सेवा तेरी ॥
प्रीतम जिउ सम राखै तोही । तोहि सँग खेलैं खेलइ वोही ॥
अस सुख देइहै सासुरे, तोहि कामिन कहं सोइ।
वैसो सुख नइहर मों, मिला न कबहू होइ ॥२०॥

इन्द्रावति फिर बात निसारा । तो सुख देइहै कन्त हमारा ॥
जो नइहर सो जोरब नेहा । होवै एक जीव दुइ देहा ॥
चलब मान तजि सूधी चाला । तो सासुर अवसब सुख हाला ॥
रहबै सत्त सनेह सम्हारें । काम क्रोध तिस्ना कहँ मारें ॥
राखब प्रीत सिखब गुन नीका । सुमिरन करब पियारे पीका ॥

तो पाइब सासुर सुख, प्रीतम होइहें हाथ ।
सुख अनन्द नित मानब, पिया पियारे साथ ॥२१॥

धन की करनी जोखइ पीऊ । एहि समुझ डर मानत जीऊ ॥
जाकर भारी होइहै तूला । सुख मन्दिर द्वारा तेहि खूला ॥
जेहि हलुका होइहै दुख सहई । औ दुख अगिन मँदिरमो रहई ॥
करनी सिखा जान सब कोई । दाहिन सो पाए भल होई ॥
देहि लिखा बाए सो जाको । बहुत कलेस परै सिर ताको ॥

करनी सेतीं छोट बड, सब किछु पूछें जाहिं ।
सतवन्ती गुनवन्त पर, डर एकौ कछु नाहिं ॥२२॥

सखी एक आसू कह ढारा । पूछेन कहा परान तुम्हारा ॥
कहा गवन को दिन मैं बूझा । सकट दुख तादिन को सूझा ॥
जब सासुर गवने मैं जाऊ । देहि सकेत मँदिर मोहि ठाऊ ॥
दुइ जन पूछहि को पिय तेरा । को है जासो मगु तै हेरा ॥
पूछहि कवन पन्थ तैं लीन्हा । डर सो उत्तर जाइ न दीन्हा ॥

उतर देउँ तो बाचऊं, ना तो मारी जाउ ।
यही बूझि मै रोई, कैस होइ वह ठाउ ॥२३॥

रानी कहा रहइ जिउ कहा । पूछहि जदिन गवन घर महा ॥
एक कहा यह जीव पियारा । लापल रहइ सरीर सम्हारा ॥
एक कहा जिउ पूछा जाइहि । पूछे बीच न काया आइहि ॥

एक कहा दोउ बात न अहई । का पर कथा बीच जिउ रहई ॥
एक कहा कछु छइ तन कहना । कहना सो छहना चुप रहना ॥
गवन मँदिर मों सुख दुख, डर सों टूटै हाड़ ।
अहै सरग फुलवारी, अहै नरक को गाेड़ ॥२४॥
बोल उठी एक सुन्दर नारी । रहत फूल नित झरत न प्यारी ॥
रंग सलोन फूल झरि जाई । चक चूहट उपजत अधिकाई ॥
सुमन सुबर न सुगन्ध सोहाहीं । अन्त झरे माटिन मिलि जाहीं ॥
उतर निबारा बूझन हारी । नित जो एकै रहत पियारी ॥
जग माली गुन रहत छिपाना । बहुत बरन गुन जानत जाना ॥
यह जग है फुलवारी, माली सिरजन हार ।
एक एक सो सुन्दर, लावत ताहि मझार ॥२५॥
जीवन यह जगती हम पाई । नितु एक आवै नितु एक जाई ॥
केतिक बरन के फूलन फूले । केतिक की लालय मन भूले ॥
केतिकन रूपवन्त अवतरे । केतिकन विरह आग सो जरे ॥
केतिकन भईंन सलोनी नारी । केतिक तिन पर भयेन भिखारी ॥
केतिकन विद्यावन्ती भयेऊ । केतिकन धनीवली होइ गयेऊ ॥
अब हेरें नहिं पाइये, तेन सरीर को चीन्ह ।
केतिक रतन पदारथ, मीचु चोर हरि लीन्ह ॥२६॥
हमहू चलब अवध के पूजें । फेर न जगमो आइब दूजें ॥
फूल देखि का झँखहु पियारी । हम तुम सबकी आइहि पारी ॥
एक कहा वैरागिन होहू । अहै मरन हम कह औ तोहू ॥
होइके वैरागिन तप करहू । जासो सरग सदन महं परहू ॥
कहकी भेस न फेरै चाही । फेरें भेस भलो नहि आही ॥
पिय की सेवा नित करहु, रहहु सम्हारे नेह ।
यातें दाता देइहै, आगम दिन सुख गेह ॥२७॥

कहेन बहुत अब आगम सूझा । परमारथ सब काहुअ बूझा ॥
अब रानी चलि देखहु जोगी । कैसा रावत भेष वियोगी ॥
चन्द्र नखत सग पाव उठायेउ । जाइच कोरहि दरस देखायेउ ॥
सकल सखिन कह जोगी भेवा । जिउ दरसन पायेउ जिउ देवा ॥
इन्द्रावति औ सखिय सयानी । जोगी रूप विलोकि लोभानीं ॥

मन लोचन मों चंद दिस, रहिगा चितै चकोर ।
चन्द विलोकत रहि गयेउ, निज चकोर की ओर ॥२८॥

जब लग नैन चार रहु चारी । राजकुवर कह ठग असमारी ॥
दामिन चमक चाह अधिकाई । हुभक चितै रहे चित लाई ॥
बहेउ पवन लट पर अनुरागें । लट छितिरान पवन के लागें ॥
परी बदन पर लट सटकारी । तपी देखत भा निस अधियारी ॥
मोहि परा दरसन कर चेरा । हुना ग्रान धन आखिन केरा ॥

प्रेम पन्थ को पन्थिक, पहेरें जोग दुकूल ।
परी सांझ तेहि मगुमो, गएउ बाट सो भूल ॥२९॥

हा हा सखिन कहा पछताई । काहें तपी परा मुरझाई ॥
नहि मुरछा मुख देखि सयाना । लट परतहि मुख पर मुरछाना ॥
एक कहा लटसो मुख सोभा । होल अधिक लखि मुरछा लोभा ॥
एक कहा लट नागिन कारी । डसा गरल सो गिरा भिखारी ॥
एक कहा लट जामिनि होई । रात जानि जोगीगा सोई ॥

एक कहा निस जानि कै, तपी गयेउ जो सोइ ।
का जोगी के जोग सों, तप पुरपारथ होइ ॥३०॥

जोगी सो जो जागै रयना । मन पर धरै ध्यान के नयना ॥
ध्यान समेत रयन जो जागै । ताको हाथ मनोरथ लागै ॥
पहरू जागत ध्यान न लाया । मारै तेहि कछु हाथ न आया ॥

मन जागे तब जागब नीको । चित फिरि आवै धरती जीको॥
एकै बार न जागै कोई । थोरे दिन मो बाउर होई ॥

जाके मन औ नैन मों, दरसन रहा समाइ ।
ताको नींद कहां परै, चिन्ता आवै जाइ ॥३१॥

बोली एक सहचरी सयानी । जब मुख ऊपर लट छितिरानी॥
यह मुख यह तिल यह लटकारी। ये तो कहि कै गिरा भिखारी ॥
नहि जानहि आगें कस कहते । चेन समेत तपी जो रहते ॥
आवहु आगें अरथ लगावैं । सब कोउ अरथ पन्थ पर धावै॥
सुनि सब सखी चेत दउड़ावा । जोगी हु तैं समस्या पावा ॥

एक कहा मुख लट तिल, मुकुर फाँद है चार ।
जग मनसूवा फँदै कहं, है एतो उपकार ॥३२॥

आपुहि देखि मुकुर मो भूलैं । दूसर सुआ जानि मन फूलैं ॥
दूसर देखि देखि कै चारा । कहैं तुरत यह फाद मझारा ॥
एक कहा मुख तिल लटकारी। सबुल भवर अहै फुलवारी ॥
एक कहा मुख ससिहि लजावा। लट जोगी को मन अरुझावा॥
तिल इन्द्रावति मुख पर सोहै । तिल नाहीं जासो जग मोहै ॥

इन्द्रावति दग लिखत कै,भा विरच मतवार ।
मसि लागउ लेखनी गिरेउ,सोभा भै अधिकार॥३३॥

एक कहा का कोउ सराहै । रूप गरन्थ रानि मुख आहै ॥
तिल है सुन्न गरन्थ मझारा । लट स्यामल सोहत मसिधारा॥
सघन पखाना जो जस बूझा । इन्द्रावति कह आगम सूझा ॥
कहा तपी अस कहते आगे । गरब न करु सुन्दर डर त्यागे॥
यह मुख यह तिल यह लटकारी। अत होइ एक दिन सब छारी॥

कहेन सखी सब आपमों, धन इन्द्रावति बूझ ।
धन अधीनता धन बचन,धन धन धन धन सूझ॥३४॥

दाया सखी गुलाब मँगायेउ । छिरिकि कुवर कह बहुत जगायेउ
सोइ गए अधिकैा नहिं जागा । वह गुलाब सीतल तेहि लागा ॥
एक कहा यह भा मतवारा । धन के नैन वारुनी ढारा ॥
सखिन कहा हो प्रान पियारी । मारेहु चखुसर गिरा भिखारी ॥
फिर जिउ जो जोगी यह पावै । तोहि तजि औरहि ध्यान न लावै

सखिन न जानहिं जागी, है बाउर तेहि लाग।
तजा राज कालिंजर, लीन्ह जोग बैराग ॥३५॥

आह आह मैं आपन मारा । काहे बूझहु दोष हमारा ॥
कहेन दोष नाही धन तेरा । दोष तुम्हारी आखिन केरा ॥
जेहि चितवैं तेहि मारहि बानू । सुमिर सुमिर तोहि देइ परानू ॥
फेर सखी सब बात सम्हारा । दोष नैन नहिं दोष तुम्हारा ॥
रूप दरब सुख तोर पियारी । अम्बुक जमल करहि रखवारी ॥

चाहा लेइ तपी दग, होइ के चोर समान ।
नैन तु हारे तसकरैं, मारा बरुनी बान ॥३६॥

कर तसकर को काटा चाही । जीउ न मार दोष धन आही ॥
हैं हत्यारे नयन यह तेरे । खंजन मिर्ग अहैं दोउ चेरे ॥
अहै नयन सो उत्तम कानू । तासो बात सुना यह प्रानू ॥
यह नित जो दोऊ जग कीन्हा । रसना एक करन दुइ दीन्हा ॥
की कहु एक बात मति सानी । सुनि दुइ बात आन सो रानी ॥

बहुतन को संसार मों, जो सिर्जा दिन रैन ।
छाप दीन मन ऊपर, औ सुरवन पट नैन ॥३७॥

मसि औ पत्र सखी एक आनी । जीउ कहानी लिखा सयानी ॥
बहुरि लिखा हो जोगी भेवा । जोग तोर इन्द्रावति देवा ॥
ताको दरसन पाय भिखारी । मुरछानेउ नहिं सकेउ सम्हारी ॥

अबहीं तेरो जोग न पूजा । जोग छोड़ि कस काज न दूजा॥
लिखा सोधान सखिन के हियरें। चली राखि राजा के नियरें ॥
जीउ कहानी लिख कै, राखि चलीं तेहि पास।
छोड़ तपी को आईं, जहां सदन सुख बास ॥३८॥
जब राजा जागा सुधि पावा । जागि चहूंदिस दिष्ट लगावा ॥
पत्र उठाइ बिलोकेउ ज्ञानी । पढा सँपूरन जीउ कहानी ॥
जब बाचा इन्द्रावति नाऊं । झखा बहुत अपन मन ठाऊं ॥
उपजी प्रेम भाव डर दाहा । बहुतै पछताना कहि हाहा ॥
सो रानी आई मोहि आगें । पहिरेउँ यह कन्था जेहि लागें॥
मोहिं लेखें एक,पल भर,उपवन भयेउ बहार।
अब देखउं फुलवारी, आइ बसेउ पतझार ॥३६॥
कहा गई वह प्रान पियारी । जेहि कारन मैं भयेउ भिखारी॥
कहा गई वह दीप निवासी । जाकी थै रम्भा सी दासी ॥
दिष्ट परी तनु पुनि का भई । देखि न परी परी सम गई ॥
रे जिउ कमल सुगन्धित अगू । गयेउ न लागेउ अलि होइ सगू॥
गोरी वह गोरी सम गोरी । नैन नैन सो स्यामा जोरी ॥
गहा धिर्ज मन भीतर, लिहें मिलन की आस।
भा कालिंजर राजन, विप्र योग को दास ॥४०॥



[८] जिव कहानी खण्ड।

सुनहु मित्र अब जीव कहानी। जो लिखि गई सहचरी ज्ञानी॥
जीउ एक राजा को नाऊ। सो सरीरपुर पायेउ ठाऊ॥
रह वह जिउ के एक नरेसू। सो दीन्हा जिउ को वह देसू॥
जब ठाकुर सो आयसु पावा। तब जिउ राय सरीरहि आवा॥
साथी बहुत साथ जिउ लीन्हा। तब सरीरपुर आवन कीन्हा॥

आइ पाट पर बैठा, भा सरीर को राय।
देखि नगर की सोभा, रहसा परमद पाय॥१॥

आधी नगर सरीर मझारा। दुर्जन नाम निर्बं बरियारा॥
बूझ बुद्ध सो बोला राजा। एक नगर दुइ निर्प न छाजा॥
यह दुर्जन राजा है दुसरा। माया मोह भरम सो परा॥
हमसो अन्त करै सतुराई। कहा सत्रु सो होइ भलाई॥
है यह काट बाट मो मोही। पग मो धउन न दाया वोई॥

यह बनाव कैसे बनै, एक नगर दुइ राज।
राज करै नहिं पावडं, दुर्जन करै अकाज॥२॥

बुद्ध सयाना मत्री रहा। राजा साथ बात अस कहा॥
राज करहु होइ निडर भुवारा। दुर्जन सरवर करइ न पारा॥
जब सो आएउ राजा पाऊ। बसा सरीर पूर हो राऊ॥
बुद्ध बूझ जिउ कह समुझावा। तब जिउ ध्यान राज पर लावा॥
भा बरियार राज के कीए। दुर्जन हरा बूझि कै हीए॥

छल संचर पगु राखा, आप न छाडेउ राज।
दुर्जन भा जिउ सेवक, कीन्हा सेवक राज॥३॥

रहा जीउ एक पुत्र पियारा। रहा नाम मन रहा दुलारा॥
मन चाहै रूपवन्ती नारी। पै न मिली कोउ प्रेम पियारी॥

मन यह नित नित व्याकुल रहई। जिउ को जिअता नित दुख सहई॥
दुर्जन कह एक दिन हकरायेउ। तासो मन की विथा सुनायेउ॥
कहा करहु कछु एक उपाई। जासो मन जिउ को दुख जाई॥
मन को यह प्रकीर्त है, देखि सुरूप लोभाइ।
पै न मिली रुपवन्ती, जो तेहि स्वांत समाइ॥४॥
बोला दुर्जन आज्ञा पाऊ। तो राजहि एक बात सुनाऊ॥
आज्ञा दीन्हा दुर्जन बोला। मन द्वारा को ताला खोला॥
कायापुर है दरसन राजा। राज गगन पर सूर विराजा॥
तेहि राजा की एक सुता है। रूप नाम सब रूप सराहै॥
एक समय मैं रूपहि देखा। देखत रीझा जीउ सरेखा॥
जो मन पावै रूप को, मानै बहुत अनन्द।
मन परभाकर जोगैं, है वह रानी चन्द॥५॥
दुर्जन रूपहि बहुत बखाना। सुनि राजा जिउ को मनमाना॥
तासो कहा जतन कस कीजे। रूप मेलाय पुत्र को दीजे॥
कहेउ उपाय आन है कहा। दिष्ट बसीठहि भेजउ तहा॥
गयेउ दिष्ट कायापुर देसू। काया पति सो कहेउ सदेसू॥
सुनि दरसन मन चिन्ता कीन्हा। जिउ कह्ह बलि मजोगी चीन्हा॥
कहा निर्प कन्या सों, जीउ संदेसा आइ।
मन कारन तोहि चाहत, प्रीत सदेस पठाइ॥६॥
सुनि कै रूप पितहि समझावा। जिउ राजा एक मनुज पठावा॥
जो राजा मन पुत्र पियारा। है हमार वह चाहन हारा॥
काहैं एक बसीठ पठायेउ। काहे न आपुहि मन चलिआयेउ॥
एक मनुज भेजे जउ नाऊ। छोटा होइ जगत मो नाऊ॥
दिष्ट साथ तब उतर पठावा। मैं कन्या कह बहुत बुझावा॥
कन्या कहा न मानत, है नहिं दोष हमार।
मरम हमार जनाइहै, जाइ बसीठ तोहार॥७॥

जाइ जीउ सो दिष्ट सुनायेउ । जिउ के हिए कोप चढ़ि आयेउ॥
बूझै कहा बुद्धि चलि आवै । मोहिं सँग होइ कयापुर धावै ॥
तब लग दुर्जन छलकै भूला । जिउ कह कायापुर छैचला ॥
कोपवन्त वह जीउ सयाना । कायापूर जाइ नियराना ॥
रूप भेद पावै के कारन । भेजा बुद्ध वसीठ विचच्छन ॥

बूझ भेद लै आयेउ, राजहिं दीन्ह सुनाइ ।
रूप रहै सै पटमो, तहा न पवन समाइ ॥८॥

कबहू कबहू रूप पियारी । आवत जह निर्मल फुलवारी ॥
फुलवारी द्वारें दुइ बीरा । काढ़ें खरग रहैं रनधीरा ॥
बुद्ध चतुर पहुचा तब ताईं । कहा बिनै कर सेवक नाईं ॥
आप रूप मद पन्थ न छीन्हा । मान सखी तेहि मानिनि कीन्हा
मोहिं अस मन लोचन सो सूझा। आवहि जाहि दिष्ट अउ बूझा॥

जिउ राजा कहं फेरा, बुद्ध गेयानी नाहिं ।
दिष्ट बूझ आवागवन, करहिं कयापुर माहिं ॥९॥

चेरा एक रूप के ठाऊ । रहिउ कटाछ रहेउ तेहि नाऊ॥
कहा रूप सो भेजहु चेरी । लखि आनै सूरत मन केरी ॥
बात पियारी के मन भायेउ । चेरी चितवन नाम पठायेउ ॥
चितवन मन मन देखि लोभाना। रूपवन्ति सो आइ बखाना ॥
प्रेम बढ़ेउ तब मन के हियरें । भेजा निलज बुद्ध के नियरें ॥

बुद्ध पठायेउ लाज कों,मनहिं बुझायेउ आय ।
दिन दुइ मन धीरज धरा,पुनि अधीर भा राय॥१०॥

दुर्जन आपन बन्धु पठावा । आइ मनहिं अभिलाप बढ़ावा॥
बिनु जिउ आज्ञा मन गा तहा । रहा प्रेम कायापुर जहा ॥
साहस सेवक मन को रहा । मन के साथ बात अस कहा ॥

भेंट करै चितवन से चाही । आपन बिथा सुनावहु ताही ॥
रूप गली निस कहँ मन आयेउ। बूझि चितवन धाम पठायेउ ॥
चितवन आयेउ मन नियर,मन की बातहिं पाइ।
जहां रूप बैठी रही, तहां सुनायेउ जाइ ॥११॥
सुनि मन बात रूप अभिमानी। चितवन ऊपर अधिक रिसानी॥
कहा मन पास फेर जिन जाहू । मन से दूर करहु यह चाहू ॥
मन सेवक दरसन दिग आई । मन के नेह की बात सुनाई ॥
दरसन बात सुना पर पावा । छाडेउ आपसे आपन आवा ॥
औ मन राय आस धै हियरें । भेजा प्रीय रूप के नियरे ॥
प्रीत पियारी नारि, गई रूप के ठाउं ।
आपन बास बतयेउ, निर्मलतापुर गाउं ॥१२॥
चेरी समा रही होइ नारी । भइल प्रीत रूप की प्यारी ॥
रही पियत धन सुरा सुवासा । मन तेहि गली गयेउ तजि त्रासा
चितवन कह तब प्रीत देखावा। चितवन रानी कह निरखावा ॥
देखि रूप मन रूप लोभानी । मन औ जिउ सो रीझी रानी ॥
मन सनेह दुख जेतो पावा । प्रीत रूप मन पाइ सुनावा ॥
सुना रूप मन को दुख, दाया संचर लीन्ह ।
आयसु आवागवन को, चितवन कहं तब दीन्ह॥१३॥
चितवन अपने सदन मझारा । मन राजा कह आनि उतारा ॥
देवस चार पर रूपहि आना । मन कह भेंटा मन मनमाना ॥
पिता कि लाज रही तेहि हियरें। आवै दूरि दूरि मन नियरें ॥
नार एक बिभिचारिन रही । रूप कि बात पिता सो कही ॥
पिता रूप मन साथ बियाहा । भा दोउहाथ मिलन को लाहु॥
मन की इच्छा पूजी, भए दोऊ एक ठाउं ।
रूप सहित मन आयेउ, पुनि सरीर पुर गाउं ॥१४॥

दिन दिन अधिक बढ़ी परभूता । जनमे मन घर सुत औ सुता ॥
चिन्ता गै परमद बउसाऊ । चन्द्र सुरज उतरे घर ठाऊ ॥
जिउ रीझा दोउ बालक ऊपर । राजकाज सब छोड़ेउ भूधर ॥
राज सउँपि दुर्जन कहँ दीन्हा । आप प्रेम को सचर लीन्हा ॥
जिउ के सेवक निर्बल भए । दुर्जन दास बली होइ गए ॥

जिउ कहँ बुध बुझायेउ, जिउ न पुजायेउ आस।
बुध बटाऊँ होइ गयेउ, साहस जोगी पास ॥१५॥

साहस तें जिउ मरम सुनावा । सुनि कै तपी उपाय बतावा ॥
प्रीतपूर है निर्मल ठाऊँ । तहा महीपत क्रीपा नाऊँ ॥
चलहु चलहु क्रीपा के ओरा । होइ सँवारै कारज तोरा ॥
गए दोऊ क्रीपा के पासा । जिनको राज बहोरै आसा ॥
क्रीपा आदर बहुतै कीन्हा । ठावँ परम मन्दिर मे दीन्हा ॥

क्रीपा के राजा रहा, सुखदाता तेहि नाउँ।
जीउ मनोरथ कारने, गयेउ महीपति ठाउँ ॥१६॥

सुखदाता क्रीपहि वै दीन्हा । कहु सोई जो चाहउ कीन्हा ॥
बिबिलोने बुधि संग लगावा । बुधि जिउ निकट तिन्है लै आवा॥
दूनउ रूप भुलाना राजा । मनमो प्रेम दमामा बाजा ॥
वे दोऊ जिउ कहँ लै आए । क्रीपा नियरे भेंट कराए ॥
प्रेम प्रेम मद प्याला दीन्हा । तब जिउ सुखदाता कहँ चीन्हा॥

होइ दयाल सुखदाता, चार देस तेहि दीन्ह ।
जीऊ महाराजा भयेउ, पुनि सरीर पुर लीन्ह ॥१७॥

कहेउ सपूरन जीउ कहानी । बूझै जो मानुष है ज्ञानी ॥
जीउ कहानी एह मझारा । चित्र मनोरम कवित सँवारा ॥
जो चाहत तो करत गरन्था । पै कवि चला कुवर के पन्था ॥

होइहै जो कोई आपनहारा । सो करिहै तिनकर बिस्तारा ॥
दीन्हेउ मैं एक भीत उठाई । कोउ कवि चित्र सँवारै आई ॥

अरे मित्र मन बूझिकै, मन राजा को प्रेम।
क्षारु रूप के सीस पर, मधुर बचन को हेम ॥१८॥



[९] पाती खड ।

पढत कहानी रागिय भँवरा । बुध से नहि मत्री कहँ सवरा ॥
होतै सग जो मन्त्रिय मोरा । कारज लाग न लावत भोरा ॥
बुद्ध उहा सपने नो देखा । जनुहु हँकारत कुवर सरेखा ॥
बुद्ध सनेह चरन सो धायेउ । फुलवारी मो राजहि पायेउ ॥
अनुकम्पा सो रोयन दोऊ । मित्र सो होइ बिलग नहि कोऊ

बुद्ध सेन के मिलन सों, राजहिं भयउ अनन्द।
फुलेउ कुमुदिन मोद को, पाइ मिलन को चन्द ॥१॥

रहा न मन राजा के हाथा । लागेउ इन्द्रावति के साथा ॥
मन बिनु भा अनुमन अनुरागी। दिष्ट नायिकाऊ पर लागी ॥
रकतआँसू आखिन सो ढारा । नैन भए स्रोनित फौव्वारा ॥
चेता वोहि समै चलि आई । रहसि कुवर कह बात सुनाई ॥
जैसे कहेउ भयेउ तोहि तैसे । पाइ दरस मुरछे तुम ऐसे ॥

इन्द्रावति मन मो बसी, की मन सो उचठान।
है तैसो वह को नहीं, जैसो कहेउँ बखान ॥२॥

प्रेम कि बाट है बाट हमारी । मनसो उचठी कहा पियारी ॥
है दरसन इन्द्रावति रानी । रोम रोम तन आइ समानी ॥
अहै बखान सो बाहर सोई । तासु बखान करै का कोई ॥

नखसिख से वह मूरत चीनी । है सुन्दरता परमल भीनी ॥
ताको अतिहि सुधास्रव प्यारा । है अकार सम प्रान सफारा ॥
भरना ता सुख मान को, मनमों रहा समाइ ।
बूड़ी लोचन पूतरीं, आंसू दृगमों जाइ ॥३॥

धन को बदन सुरुज की चादू । अलकावर नागिन की फादू ॥
नैना मिर्ग कि हैं मतवारी । की चचल खञ्जन कजरारी ॥
तिल कपाल पर है सुठलोना । की सुमना पर मधुकर छोना ॥
राइ अधर की अमृत होई । की मूंगा की रवि सुत सोई ॥
मुख है कली कि अहै अँगूठी । की नाहीं किछु भेद अनूठी ॥
दसन बीज दाड़िम को, की मोती लर होइ ।
की हीरा की नषत है, चमक बीज अस सोइ ॥४॥

चेला कहा बदन प्यारी का । सिव परकास मुकुर है नीका ॥
प्यारी के नैना मतवारे । भेद अलख के अहैं सवारे ॥
तिल है सुन्न एकाई केरा । तेहि दिस करत जगत जिउ फेरा
औ है सुन्न मनुष के जीका । बेग न परख जात है नीका ॥
अधर अहै भीपा कर ताको । सुधा समान बचन है जाको ॥
मुख है भेद छिपाना, बूझि न पारै कोइ ।
दसन निर्मरा ताको, मूल जोत को होइ ॥५॥

धन वह जेइँ अस रूप बनाया । मनहु जोत धारा है काया ॥
पहिलें जोत उतरि जिउ भयेऊ । आप आतमा होइ छिपि गयेऊ॥
पुनि मन भये आतमा सेती । मन सो काया चाह समेती ॥
एकै जोत तीन पहिरावा । पहिर नाम इन्द्रावति पावा ॥
जोतसो आग आग सो बाऊ । भयेउ पवन सो नीर बनाऊ ॥
भयेउ नीर सों माटी, चारों से भै देह ।
देह और यह जीउ सों, बाढ़ी बहुत सनेह ॥६॥

पहिले धन के अम्बुक माही । अजन स्याम रहा है नाही ॥
माते रहे नहीं कछु जाना । ना अजन पर चाहुत आना ॥
सखी एक अजन तेहि दीन्हा । अजन है हत्यारिन कीन्हा ॥
दरपन दीन्हा सखी सयानी । आपुहि आप देखि लवुधानी ॥
प्रेम को पाव एक मो आयेउ । एकहि दुइ दिस दरस देखायेउ ॥

रूप पदारथ देखि कै, प्यारी रही लोभाइ ।
गांहक खोज हिये बसी, दीन्हा सखी जगाइ ॥७॥

रूप समुद्र अहै वह प्यारी । जबसो प्रेम परा सिर भारी ॥
तासो देत लहर छबिलानी । व्याकुल भै मन बीच सयानी ॥
लागत चार ठाउ तेहि नीको । है बिस्रामी धन के जी को ॥
एक सरीर मँदिर छविधारी । दूसर है यह मन फुलवारी ॥
तीसर अहै जीउ अस्थाना । चैाथा जोत सदन हम जाना ॥

कोऊ नाहीं बीच मो, अपने रूप लोभान ।
अपना चित्र चितेरा, देखि आप अरुझान ॥८॥

सुनि बखान राजा वैरागी । बोला अधिक भयेउ अनुरागी ॥
रूप पियारी का मैं देखा । जगत भयेउ दरपन के लेखा ॥
यह सब दिष्ट परत है मोहीं । तामो देखत हो मुख ओहीं ॥
रही सुगन्ध जहा लट केरी । मन औ चित्त भँवर होइ घेरी ॥
पहिल चार सो निरखत जो है । ताको प्रान पियारी सो है ॥

पाती एक लिखत हो, लै पहुचावहु ताहि ।
जीउ दुखारी काया, उठत कराहि कराहि ॥९॥

तब राजा प्रेमारथ लीखा । इन्द्रावति को पाती लीखा ॥
अहो पियारी प्रान अहेरी । सपत अहै उन आखिन केरी ॥
जो न पहिरा अजन पहिराया । चितवन मदसो जगत सताया ॥

सपथ दोऊ अधरन की खाऊ । वसुधा बीच सुधा के ठाऊ ॥
अहै सपथ स्यामल तिल केरी । जापर सरग नार हैं चेरी ॥
स्यामल लटकी सौंह है, जेहि फांदे मन फांद ।
सपथ सलोने वदन की, जाको तुलै न चांद ॥१०॥
देस हमार कलिंजर जहा । तुम्हैं सपन मो देखउँ तहा ॥
दिन मनि प्रेमउ आ मन माहीं । गै हेराइ पर चिन्ता छाहीं ॥
छोडेउं सकल राज औ देसू । भयेउ तुम्है नित जोगी भेसू ॥
लब अनुराग चरन सो धायेउ । मन फुलवारी भीतर आयेउ ॥
दरसन दरसन किहेउ पुकारा । पायेउ उत्तर दरस तुम्हारा ॥
मोहि लेखें आदरस है, निर्मल यह संसार ।
तामो देखत हौ सदा, सुन्दर वदन तोहार ॥११॥
प्रेम आगसो जरा परानू । बेधा हियें नयन कर बानू ॥
का जो दूर परा हौ प्यारी । बिसरत नाही भजन तुम्हारी ॥
जबसो मोह धनुक तुम खाचा । चितवन सरसो जीउ न बाचा ॥
यह तन माटी कहँ का पारा । भावै परगट प्रेम तुम्हारा ॥
पै तेहि ढीठ आप तुम कीन्हा । प्रेमक रतन हाथ महँ दीन्हा ॥
हैं सनेह के जलमो, यहै प्रान को मीन ।
बाहेर काढि न डारहु, ना तौ मरै मलीन ॥१२॥
जब सो मोहि ससार मझारा । मानस लागा बान तुम्हारा ॥
उपजो हियें सहस आनन्दू । गयेउ जगत की सब दुखदन्दू ॥
है हिय प्रेम बान कर घाऊ । किछु नाहीं ओषद परचाऊ ॥
दूसर ओषद ताको नाहीं । ओषद मिलन कहा हम जाहीं ॥
भूलि सकल पर चिन्ता गयेऊ । ठाउँ तोहार ख्यात महँ भयेऊ ॥
हूजै दरसन ऊपरें, नेवछावर जिउ मोर ।
काटि जगत को फादा, भागि रचेउं तोहि ओर ॥१३॥

है सारङ्गी देह हमारी । तार बने। है प्रीत तुम्हारी ॥
बाजत अहै प्रीत को तारा । निसरत तासो नाम तुम्हारा ॥
है। मै बिछुरन बन मो परा । काहुअ मेरो हाथ न धरा ॥
दया तोहार धरै जो हाथा । बन सो निसरत है। जिउ साथा॥
रहे ँ आद को राजा भोगी । है। अब प्रेमपन्थ कर जोगी ॥

बहुत लिखे वह मन दुखे,याते लिखैां न और ।
अनुकम्पा चाहै। सदा, यह फुलवारी ठैार ॥१४॥

लिखि पाती चेला कह दीन्हा । चेला गवन रतन दिस कीन्हा॥
प्यारी वहा बियाकुल भई । जबसो देखि कुवर कहँ गई ॥
कुअर रूप लागेउ अति नीका । हियँ समान खेल भा फीका ॥
मन है बाग रहै नहि हाथा । लागेउ मन जोगी के साथा ॥
आखिन सो देखै सै रगू । बसा परान मन रावल सगू ॥

भा खुम्भीर प्रेम तेहि, परी तासु मुख माहँ ।
भयेउ अस्त आनन्द रवि, फैलेउ विप मैा छाहँ॥१५॥

जब धन सो सुख चिन्ता गई । सखियन के मन चिन्ता भई ॥
बैठिन आई चहू दिस घेरी । भइ पतग तेहि दीपक केरी ॥
पूछेन कस अमन हँस प्यारी । तुम सिर छाह पिता की भारी॥
ललित फूल सा पीत तुम्हारा । बही न कछहु झकोर बयारा ॥
रितु बसन्त पलुहै फुलवारी । तेहि पतिझार कहा सो प्यारी॥

है धन बदन बिरोचन, सोम घटन केहि लाग ।
पिता छाह सिर ऊपर, है उन्नत भल भाग ॥१६॥

भइउ अहो मुगधा के पना । होइ अज्ञात ज्ञात जोबना ॥
रहा खेल तेहि समय पियारा । परा न सीस सोच दुख भारा ॥
बीत गयेउ अब जब लरिकाई । मध्या भइउ भई तरुनाई ॥

सो तरुनाई वैरिन भई । खेल फेल सब हरि लैगई ॥
पै तरुनाई है मोहि प्यारी । बल मति की पूजी है भारी ॥
एक समै बिधांई, लागिहि काया साथ ।
सोच करत हौं निसि दिन, रूप न रहिहै हाथ ॥१७॥

या मन मरम छिपावस रानी । आन सोच है हियें समानी ॥
को न रही धन मुगधा कन्या । भई न मध्या गोरी धन्या ॥
भई न बाला तरुनी नारी । बिधें न भै मन चाह न मारी ॥
भा सब पर सब पर अब होई । एक वैस पर रहा न कोई ॥
सो कहु अमन हँसि जेहि सेती । मरम छिपावत है केहि नेतीं ॥
हम सब मरमी सहचरीं, चाहैं कुसल तोहार ।
मन को मरम सुनावहु, कै परतीत हमार ॥१८॥

हो गोइयां का कहवँ पुकारी । जा दिन सो देखवँ फुलवारी ॥
जोगी तहां दिष्ट जो परा । रूप मन्त्र मन मेरो हरा ॥
ता दिन सो व्याकुल नित रहऊ। दगध प्रेम पावक को महऊ ॥
मन सो गयेउ भूल सब खेला । भयेउ मोर मन जोगी चेला ॥
जोगी प्रेम बिघापा हियरें । निसदिन पावत हो मन नियरें॥
दूसर एक न भावत, जोगी हिये समान ।
मन अकास उदित भयेउ, तासु प्रेम को भान॥१९॥

मानमती अभिमानी सखी । लखी प्रेम धन मान न रखी ॥
इन्द्रावनि तेहि छाजत नाही । जोगी बसे आइ मन माही ॥
जो कोउ होत आपनो जोरी । तासो प्रीत लगावहि गोरी ॥
जोगी दिन दुइ मो चलि जाई । तेहि कारन तन देहु नसाई ॥
जोगी माया रहित भिखारी । उचित कहा मन लाइब प्यारी॥
जो अपने सम नाहीं, ताकी प्रीत न लेहु ।
तजि जोगी की चिन्ता, मन अनन्द पर देहु ॥२०॥

मानमती सो कहा पियारी । प्रेम मरम
जेहि निस दिन सुमिरत है कोऊ। ताहू कहं
वृझि परत सुमिरत है मोहीं । सुमिरन
मैं न आपसो साधा प्रेमू । प्रेल साध
का राजा का होइ भिखारी । सुमिरै सोई

कुल विसेप उत्तम नहीं, सुमिरे उ
उत्तम जात भये सो, गरब न राखै

दायावन्ती उतर सुनावा । मानमती
वह जोगी राजा सुनि परा । तजि कै रा
मोहि जाने वह तपी वियोगी । इन्द्रावति
यहै आइ फुलवारी सोई । जो रानी
वूझ खोल मन अन्तर पटा । सपने का

दायावन्ती वचन सुनि, इन्द्रावति
कहा सत्त तुम भाषा, भाषा सत्त

समुझाइन सब सखी सयानी । अब तो
आइ पहूचा जोग सरेसा । जाको तुम
मात चेत देखत फुलवारी । न तो कह
जो जोगी कहँ समुझेउ आजू । पाइ हिती
गगन पहूचै जोगी सीसू । वृन्दारक ते

धीरज धरि कै देखिये, होत होत

बोली तुम चेता जस कहा । फुलवारी जोगी तम अहा ॥
आज परन समुझत मैं रोई । किसें मोतिय काढ़े सोई ॥
मोती काढ़े कारने, बुड़े न जलधि मझार ।
ना तो जोगी के निमित, जाइहि जीउ हमार ॥२४॥
चिन्ता जोगी लाग न याढ़े । अलख दया सो मोती काढ़े ॥
जो प्यारी मन जोगी बसा । होइ सजोग नयत के दसा ॥
हसि पदुमिनी कमल औ चन्द्र। ससिकमलहि तोहि देखिअनन्दू॥
होइ मधुकर जोगी रस लेई । होइ तिमिरार जोत तोहि देई॥
तोहि जोगी है जोगिय राजा । सिर्जनहार सवारइ काजा ॥
उतर देहु लिखि प्यारी, जाइ देखावउँ ताहि ।
प्रेम पन्थ तुम लीन्हा, करता देइ निबाहि ॥२५॥
उतर लिखा तब प्रेम सजोगी । जो मोहि लाग भयेव तुमजोगी॥
तो मेरो मन तुम हरि लीन्हा । अपने रूपहि जोगिनि कीन्हा ॥
सपन बीच देखेउ मैं तोहीं । गुरू सपन दरसन भा मोही ॥
जा दिन सो सुध मिली तुम्हारी। प्रीत हियें बाढ़ी अधिकारी ॥
देखे नित फुलवारी गइऊ । दरसन पाइ बाउरी भइऊ ॥
होइ जोगी आयेहु इहा, छाडि सकल सुख भोग।
महू रहों तोहि कारने, व्याकुल पाइ वियोग ॥२६॥
प्यारे दूर न जानेहु मोहीं । पावत हौ घट भीतर तोही ॥
मूदे नैन तुही मोही सूझा । देइ मूल मैं तुम कह बूझा ॥
तुमही देह धरे सब ठाऊ । रविससिनीरज कुमुदिनि नाऊ
दस मैं सहस एक सो होई । सुन लागे सुन नासें सोई ॥
तस तुम एक सहस गुन तोही । गुन तोहार अरुझायेहु मोही॥
जिउ मो नियर तुम्हारे, हौं सरीर सों दूर ।
प्रेम छाह मोहि घटमो, छाइ रही भरपूर ॥२७॥

अरे प्रान कालिंजर राजा । दरसन देत तुम्हें मोहि छाजा॥
पै परगट सुख होत हमारा । बाउर होत एक ससारा ॥
औ परिखे जग लोग बिराना । इन्द्रावतिमनतपिहि लोभाना॥
है मोहि उचित प्रीत अस करऊ। लोग जगत सुख बीच न परऊ॥
जौ सजोग मनोरथ राजा । तौ मोती को कादब छाजा ॥

प्रान पियारे अहै मोहिं, चिन्ता प्रेम तोहार।
चित्र तुम्हारे बदन को, है मन पत्र मझार ॥२८॥

घन पाती चेरा ले आई । राजा मन अभिलाष बढाई ॥
कहै होउ पखी उड़ि जाऊ । प्रान पियारी है जेहि ठाऊ ॥
आइ मीचु मोहि डारत मारी । माटी होत सरीर हमारी ॥
मान सुरा का होतेउ प्याला । सो अधरन लावत भरि हाला॥
अधर तेहिक जिउदाता आही। देत भलो जीवन जस चाही ॥

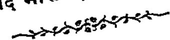
मोहि निर्बल निगुन कहं,अलख सकति अस देत।
प्रतबिम्बी ता बदन को, होतेउं चाह समेत ॥२९॥

जब परभात भयेउ उजियारा । फुलवारी मो बहिउ बयारा ॥
पाई बयार कली रहमानी । बहुत हँसी बहुतै मुसुकानी ॥
राजैं कहा पवन के साथा । है मेरो मन जा धन हाथा ॥
जो तेहि ओर बहो तुम आई । दीन्हेउ मोर सदेस सुनाई ॥
सुघरी मिली दया की पाती । भै सुद मै हिर्दै औ छाती ॥

पढ़ि राखेउं मन ऊपर, डरेउं कि मान मदाहि।
पाती कहं न जरावै, धरेउं नयन पर ताहि ॥३०॥

फेर ढरेउ आसूंधं भीजी । तेहितेधरेउ जियमहकिन छीजी॥
चाहत हौ नित दया तुम्हारी। है नहि दुसरो आस हमारी ॥
ठाउ तोहार बनो मन माहीं । ठाउ तहा दुसरे कर नाहीं ॥

समुझत कहती हो रँग राती । बहुते बेध होत मोहि छाती ॥
प्रेम आग दगधी हिय काया । पर चिन्ता को दारुन राया ॥
आइ परा है प्रेम मगु, कर गहि देहु सम्हार।
चिन्ता करउँ मिलन को, दूसर धन्ध नेवार ॥३१॥
अरे अरे कलवार पियारे । मदिरा ढारै नैन तुम्हारे ॥
एक पियाला भर मद दीजै । मोल पियारो मानस लीजै ॥
पिअउ सुरा पर चिन्ता मारउ । पलकनसो मद सदन बोहारउ॥
तोहि सरवन सो है दुरवचा । दून अमल सुख सोभा रचा ॥
यह मन तापर आवइ जाइ । झूलत है मन देत झुलाई ॥
दे मद अपने हाथ सों, पिअउँ देखि मुख तोर।
चाहसि तो मद मोल ले, प्रान पियारा मोर ॥३२॥



[१०] दर्शन खण्ड।

कुअर सदेस पवन जो पावा । इन्द्रावलि सो जाइ सुनावा ॥
प्रेम अधिक रानी कह बाढा । होइ अनुरागिन उत्तर काढा ॥
हम कह जानहु प्रीतम साईं । जग भीतर मेंहदी की नाईं ॥
हो मै धन परगट मो हरी । पैहो गुपुत रकत सो भरी ॥
तोहि आखिन पर मो मन लोभा। सोभा अब नित मारत चोभा॥
होइ निडर जब ताईं, नहि भेंटत हौ तोहिं ।
तब ताईं सुख मन्दिर, दुख मन्दिर है मोहि ॥१॥
मेरे हाथन हिर्दै सयाना । सो तोहि जोग जटा अरुझाना॥
हो अगनतोहि सुमिरत जियऊ। सदा करेज सरोनित पियऊ ॥
सखी बहुत हम कह समुझावै । घट की पीरा एक न पावै ॥

जाके गोड़ न गई बेवाई । सो का जानै पीर पराई ॥
पावन अहै लाज की बेरी । ना तो चेरी होतिउ तेरी ॥
पवन सुनाइहु तुम कहं, सब दुख बिथा हमार ।
जगमों इच्छा मेरो, है संजोग तोहार ॥२॥
राजा उतर पवन सो पायेउ । प्रेमपुरा उपबन सो आयेउ ॥
बहु सुख ठाउ पेमपुर गाऊ । मद्यप रहा पेमपति नाऊ ॥
भयेउ कुंअर तेहि द्वारे ठाढ़ा । आदर बचन प्रेम पति काढ़ा ॥
कहो भीख कछु चाहो जोगी । की काहू के प्रेम बियोगी ॥
कहा भीख मैं पावउ तबही । होइ दयालु अलख मोहि जबही ॥
इन्द्रावति को मिलन है, उत्तम भीख हमार ।
जग में दूसर भीख को, अहो न चाहन हार ॥३॥
सुनि कलवार कहा हो जोगी । महा रूप के अहउ बियोगी ॥
है वह रूप दीप उजियारा । है पतङ्ग तापर ससारा ॥
राज दीप को दीपक अहई । गुप्त रहै न परगट रहई ॥
काढ़ि परन मोती लै आवै । तब कोउ इन्द्रावति कहं पावै ॥
अब तो पियहु चोख मद मेरा । होइ कि पूजै कारज तेरा ॥
एक पियाला मद पियें, छूट जाइ सो त्रास ।
भीख भीख के मागहू, जाइ महीप नेवास ॥४॥
कहा त्रास छोहैं बरु जीऊ । मद्य बरन दोपित नहि पीऊ ॥
बोला मद्यप यह मद चोखू । इहा लाग पियहु नहि दोखू ॥
जब अँचयउ मद भा मतवारा । गयेउ तहां जहा राज दुवारा ॥
को जो भा मतवारा नेही । पै न तजा बुद्धिहि मति देही ॥
सोहै राज दुवारे ठाऊ । पादप रहा सनेहा नाऊ ॥
जो तेहि छाहैं बइठै, ता कंह आज्ञा होइ ।
जाइ जलज के सागर, मोती काढ़ै सोइ ॥५॥

वैठा कुवर सनेहा तरे । चिन्ता कथन चिन्त मो धरें ॥
आइ एक जगपत का चेरा । कहा सनेहा छाहं बसेरा ॥
लेई आइ कै राजा सोई । जो इन्द्रावलि प्रेमी होई ॥
कहा सनेहा छाहें आयेउ । तब जब प्रेम रतन को पायेउ ॥
तजि कालिंजर राज पियारा । जोगी भयेउ तजेउ घर बारा ॥

हैां इन्द्रावति जोगी, जोग पियाला हाथ ।
दरसन भिच्छा मागउँ, मन लागा तेहि साथ ॥६॥

कुअर मरम जब चेरा पायेउ । तब जगपति सो मरम जनायेउ ॥
सुनि जगपति तेहि फेर पठावा । तुरत बसीठ पवन सम आवा ॥
कहा भीख पावहु किम ठाढे । सिप्पा मिलै जलज के काढे ॥
जब बसीठ यह कहेउ सँदेसा । मानहु दीप वचन को लेसा ॥
राजहि सूझ परेउ वह पन्था । जानिन पहिरेउ जोगी कन्था ॥

कहा होउं मैं सिन्धु मो, जलज मिलै ताे भाग।
न ताे नेछावर होइ जिउ, प्रान पियारी लाग ॥७॥

ता दिन कुअर प्रेम रस पाया । रैन सनेहा तरें बिताया ॥
घबराहट रानी प्यारी को । भयेउ गगन राजा के जी को ॥
इन्द्रावति को चिन्ता धरें । गयेउ कुअर घबराहट तरें ॥
तेहि पल इन्द्रावती सुभागी । आइ झरोखें चितवन लागी ॥
रवि परभात झरोखे उआ । गयउ तमिचरा बासर हुआ ॥

राजा औ रानी सों, भयेउ नयन दुई चार ।
तति खम्भा अन्तर पट, घबराहट रखनार ॥८॥

आपन बदन खींच धर लीन्हा । अधिक बेयाकुल प्रेमिहि कीन्हा ।
भीतम रूप अघाइ न देखा । भा बावर धन जीउ सरेखा ॥
राेवे लाग दुख दुख बाढा । मिलन बियोग दोउ बहि गाढा ॥

घबराहट पर प्रीतम आवा । आपन रूप मोहि निरखावा ॥
आज उघारेउ दसईं द्वारा । दिष्ट परा वह प्रीतम प्यारा ॥
दरस देखायेउँ आपनो, प्रीतम प्रान हमार ।
जीउ न नैन अघाने, भा वैरी रखवार ॥९॥
राजा हाहा कहि पछताना । दिष्ट परा जिउ फेर छिपाना ॥
आज परान परा मोहि दीठी । दिहेउ सरीर ऊर दिस पीठी ॥
जिउ का मैं जिउ का जिउ देखा। लुबुधाना यह जीउ सरेखा ॥
आज बदन देखा मैं जाको । है यह जगत झरोखा ताको ॥
मन की दिष्ट प्रान पर लागी । भयेउ जीउ अधिकौ अनुरागी॥
आयेउ बिर्छ तर कुंवर, आसु रकत की रोइ ।
अपने घट मो जरि रहा, बिथा न पूछा कोइ ॥१०॥
वोही समै रागि एक आयेउ । आइ प्रेम की राग सुनायेउ ॥
प्रेम राग सुनि निर्प बैरागी । अधिक भयेउ अभिलाषी रागी॥
उठा वियोग हुतासन जला । बुद्ध समेत सिन्धु दिस चला ॥
आपा गढपति दुर्जन नाऊ । कटक समेत रहा मगु ठाऊ ॥
भेटि कुअर कहँ कहा गोसाईं । कीपा करहु आज यह ठाईं ॥
तुम जोगस्वर ज्ञानी, मैं मूरख मति हीन ।
होइ तुम्हार बचन सुनि, बुद्ध मोर बलवीन ॥११॥
आप कुअर बोला तेहि ठाऊ । लाब पन्थ है कहा थिराऊँ ॥
दिन बीतत भा काज न हाथा। नहि कछु दरब जोग को साथा॥
यह जगजीवन थोरो आही । काज अधिक करना मोहि चाही॥
सपन समा यह जीवन मोरा । अहै दिया सब बहै झकोरा ॥
सत्तर पथ दिष्ट मोहि आयेउ । तिन्हैं तजेउ यह सचर मायेउ॥
तब लग कहा थिरो मैं, जगमों काहू साथ ।
जब लग नाहीं होत है, जोग मूल मोहि हाथ॥१२॥

दुर्जन कहा जोग तुम घाग । लाँघे पन्थ घरन का राखा ॥
कवन पन्थ के अहउ वियोगी । हहु सेवरा की जगम जोगी ॥
कहा वियोगी पन्था धारी । इन्द्रावति नित अहउ भिखारी॥
परन गलत काढ़ै कह जाऊ । हुमुकी गाउ सुमिरि यह नाऊ॥
कहा अघानेहु जीवन सेती । प्रान तजहु इन्द्रावति नेती ॥

बहुत महीप जलज नित, बूडे सिन्धु मझार ।
प्रान न देहु गोसाईं, मानहु कहा हमार ॥१३॥

राजैं उतर यान अस मारा । किछु न रहेउ दुर्जन कह पारा॥
आपा बहुर कीन्ह अहताई । बाधा राजहि कै सतुराई ॥
दुर्जन गाढ़ो दुर्जन भयेऊ । राजहि आघागढ़ लै गयेऊ ॥
प्रेमी सबै आना नाही । इन्द्रावती रही मन माही ॥
मन मो निस दिन सुमिरनचाही। रहै कहू किछु दोष न आही ॥

राजा परा बन्द मो, बुद्ध मेनरहत छूट ।
बन्द ऊंडाहन पारेउ, माना मनमों टूट ॥१४॥

मो बाचा जो भेद छिपावा । जो बोला सो सीस गवावा ॥
जीभ भली तालू के तरैं । खग्ग भली प्रयालम धरैं ॥
अधर न खोल कहु करु सेरा । राखन भीत कान बहुतेरा ॥
भेद मित्र सो राखउ गोई । मित्र मित्र के दूसर होई ॥
भेद न खोलु देउस तै नाही । खोलत भेद जाइ जग माहीं ॥

सुना नहीं है यह बचन, मन मो बचन छिपाव ।
बातहि हाथी पाइयो, बातहि हाथी पाव ॥१५॥

दुर्जन की कामिनि मोहनी । कै सिंगार एक ज मिनि बनी ॥
औ धन साथ लीन्ह दस चेरी । सब अपछरा इन्द्रपुर केरी ॥
आई कुअर निकट भै ठाडी । बिनती बदन अधर सो काढी॥

पूरुख मेरो भलो न कीन्हा । तुम अस जोगी कह बँद दीन्हा॥
कोप न मानहु राजा जोगी । ले दस कामिन हो अब भोगी॥
इन्द्रावति चिन्ता तजी, मानहु सुख औ भोग।
येइ दस कामिनि संगी, हें जोगी तोहि जोग॥१६॥
राज कुअर बूझा यह गोरी । प्रेम पन्थ वैरी है मोरी॥
कहा बन्द मैं ता दिन पाजा । जा दिन जिउ काया मो आया॥
उचित कहा बिसराऊ ताही । आप खोच पावत हो जाही॥
घट हमार जो छाई सोई । प्रान सरीर छूंछ मोहि होई॥
येह दसा कामिनि सग तेरी । हैं छाया इन्द्रावति केरी॥
प्रेम जेहिक मोहि बाउरो, कीन्ह छोडायेउ राज।
सो प्यारी है प्रान जिउ, है तासों मोहि काज॥१७॥
रहिये येहि नगर वैरागी । मूरत तोर भली मोहि लागी॥
धवराहर तोहि देउ उठाई । दासिन देउ करहि सेवकाई॥
रूप सुवरन देउ परभूता । करै धनी उपजावै सूता॥
जो इन्द्रावति प्रीत भुलावहु । अवहीं मुकत बन्द सो पावहु॥
ता धन को मन काठ करेरो । ला मन होइ न चिन्ता तेरो॥
बहुत महीपत बूडे, मोती सिन्धु मझार।
है जग मो हत्यारी, वह इन्द्रावति नार॥१८॥
काहे भलो हमैं तुम चीन्हा । भलो सोइ जो हम कह कीन्हा॥
मैं यह नगर रहउ तब ताईं । जब लग होवे लिखा जग साईं॥
काह करौ कचन औ रूपा । कचन रूप पन्थ मो कूपा॥
आपन भुले जेहि बँद माही । भलो सो बद मुकत भल नाहीं॥
हित चिन्ता का जानइ कोई । मैं जानौ की जानै सोई॥
करत न हत्या आप वह, इन्द्रावति रमनीय।
दीपक कहत पतंग सों, मो पर दे तैं जीय॥१९॥

चेरिन सहित मोहनी गई । उतर बान सो घायल भई ॥
राजैं आँसु रकत की ढारा । भा ईंगुर गेरू रतनारा ॥
सोच बन्द को निर्प न कीन्हा । रोयेउ आपन औगुन चीन्हा ॥
आपन औगुन काइ सुनावउ । औगुन सो सजोग न पावउ ॥
जो ममता यह मोसैं जाती । होत गोद मो वह रंगराती ॥

बिच अंतर पट हो रही, यह ममता मद मोर ।
मिलवे के दिन दूर हैं, जग को जीवन थोर ॥२०॥

अनुरे सुवा मित्र तैं मेरो । मन मो धरो निहोरा तेरो ॥
रहत जहा वह प्रान पियारी । जाइ सुनायेहु बिथा हमारी ॥
तोहि बिनु जगत बन्द है मोहीं । किछु हमार चिन्ता है तोही ॥
दिन औ रात जपत हो नाऊ । है आनन्द बन्द के ठाऊ ॥
हम कह यह जगबन्द मझारा । है अहार एक नाम तुम्हारा ॥

जो न होत मोहि बन्द मों, नाम तोहार अहार ।
एक घड़ी ठहरत नहीं, जीवन प्रान हमार ॥२१॥



[११] सुवा खण्ड।

राजा रहा बन्द मो जहा । लागा रहा बिर्छ एक तहा ॥
बैठा पत्री पर एक सुवा । रोवा सुत्रा नयन जल चुवा ॥
देखा कुवर कीर सो कहा । ढारेउ आसु कवन दुख अहा ॥
ना पिंजर को अहइ कलेसू । पख पाइ सो पूरन भेसू ॥
की तोहि लाग भूख औ प्यासा । की आगम को हीयें त्रासा ॥

है। दुख भरे सुआ तुम, का तोहार है नाउं ।
को तोहार माता पिता, कहां जनम भुमि ठाउं॥१॥

का पूछत हो मेरे नाऊ । माता पिता जनम भुमि ठाऊ ॥
प्रान हमार नाम है जोगी । सदा जगत मो रहउ बियोगी ॥
धरती मात गगन पितु नाऊ । है यह लोक जनम भुमि ठाऊ ॥
औ जो पूछहु गुरू के चेरा । जनम देस तन औ जिउ केरा ॥
तन को देस इलापुर जानेउ । जिउ को गगनपूर पहिचानेउ ॥

पंख पाय सब मोरें, अहै न भूख पियास ।
रोवत अहैं बिर्छ पर, मित्र छाडि गा पास ॥२॥

जा दिन सो भा मित्र बिछोहू । नैन घटा बरसावत लोहू ॥
रहेउ मित्र सँग तेहि बन माही । भूख पियास रहेउ जह नाहीं ॥
काग एक भा शत्रु हमारा । दीन्ह चिन्हाइ सो गोहू चारा ॥
लाग दोप गोहू के खायें । बिछुरा प्रीतम दोखिल पायें ॥
गोहू खाइ दूर मैं परा । सुख अनन्द महेसह हरा ॥

मित्र विना तन मेरो, पिंजर चाह सँकेत ।
अहै बिराना सब कोऊ, हित सों जासों हेत ॥३॥

आगेहू बरजा मित्र पियारा । पै खायेउं फादे मह हारा ॥

रहा न गोहू विहरल हीया । निसचै रहा प्रेम कर बीया ॥
वोही बीज मन धरती परा । जोग विछै तासा अवतरा ॥
रहा न वायम जो निरोवा । आपुहि प्रेम दून होइ आवा॥
की वह बीज रहा मति केरा । जेहि खाये बिछुरन दुख घेरा॥

यह सरीर पिंजर मो, रहत दुखारी प्रान ।
चाहत ऊडै तोरि कै, जाइ पहिल अस्थान ॥४॥

सुनत सुवा दुख राजा रोवा । रकत आसु गुजा महि पोवा ॥
लै सारङ्गी गीत निसारा । उतरन ठाउ अहै ससारा ॥
पथिक अहै हमारो नाऊ । पिता पीठ है उतरन ठाऊ ॥
मात उद्र पुन है थिर थाना । पुन थिर ठाउ जगत हम जाना॥
पुन माटी मो लेब बसेरा । फेर करब परलौ दिस फेरा ॥

पुनि जस करनी हो रही, तैसो पाइब वास ।
अब चाहत हौ निस दिन,प्रान प्रिया को पास॥५॥

बोला सुवा परान सरेखा । बन्द आप केहि कारन देखा ॥
जग के बन्द परै सो कोई । जाहि जगत को धन्धा होई ॥
कहिये आप प्रीतमा को है । मन के बीच उर बसी जो है ॥
कुवर सुवा कह प्रेमी पावा । प्रेम विथा की कथा सुनावा ॥
विनती कीन्ह सुवा तेहि माना। भयेउ परान परान पराना ॥

प्रेमो पाइ सुवा कहं, राज कुवर गुन रास ।
सहित सँदेस पठायेउ, इन्द्रावति के पास ॥६॥

आगें मालत कह सुध भयेऊ । मधुकर फुलवारी तजि गयेऊ॥
व्याकुल भयेउ भँवर नित थारी। बिनु अलि का मालत का बारी॥
काढै पलपल दीरघ सासू । ढारै नैन रकत की आसू ॥
बिरह ठपाल करेउ घन परी । को बिनु मित्र पियावै झारी ॥

कहै कहा गा प्रेम पियारा । जा सनेह मद मन मतवारा ॥

मैं अचेन नहिं जानेउं, केहि दिस गा रम सोइ ।
कौन करम अब कीजे, जातें बस मों होई ॥७॥

इन्द्रावति व्याकुल जेहि ठाईं । दरसन लागि सखी दुइ आईं ॥
रूप गरबता एक सयानी । दूसर प्रेम गरबता ज्ञानी ॥
धन के मन चिन्ता अधिकाई । मन दुख रूप गरबता पाई ॥
कहा भलो दाया बच कहना । चिन्ता बीच न एता रहना ॥
गेंदा सोई जगत मो जीतै । जेहि आनन्द बीच दिन बीतै ॥

रानी के मन चिन्ता, बूझत हिर्द हमार ।
चिन्ता मरम पियारी, भाषत बदन तोहार ॥८॥

हा मन चिन्ता बूझेउ सखी । मानस मरम भलो तुम लखी ॥
सचर एक दिष्ट मोहिं आई । और न केस चाह अधिकाई ॥
खरग धार सो सचर चोखो । दामिनि सम उतरहिं निर्दोखी॥
कोऊ पवन कोऊ जस बानू । उतरैं मिलै सुखद अस्थानू ॥
कोउ चीटा सम चलै न पारैं । गिरहिं कुण्डमो जाहिं पतारैं ॥

देखि पन्थ डर मानेउँ, तापर धरेउँ न पाव ।
खरग धार सम सचर, करै न पद मो घाव ॥९॥

रूप गरबता सुनि चुप रही । पुनि कै प्रेम गरबता कही ॥
प्रेम पन्थ है कठिन पियारी । चोखी खरग चाह अधिकारी ॥
होइ सुखी निबहा जो कोई । दरसन सहित मरन मो होई ॥
तुम्है प्रेम है जाको रानी । तेहि नित चिन्ता हिये समानी ॥
पन्थ एक अस अलख बनाई । सब कोऊ तेहि ऊपर जाई ॥

चिन्ता करहु न रानी, दया करै करतार ।
होइ प्रेम को प्यारी, एक ठाउँ एक बार ॥१०॥

लिहें सँदेस प्रान गा तहा । व्याकुल मन इन्द्रावति जहा ॥
देखि छबीली की छबि सुवा । जिव सो प्रेम पींजरे हुआ ॥
जब इन्द्रावति नामिक देखा । लाजवन्त भा सुवा सरेखा ॥
देखि सुवा अनचीन्हा नियरें । भयेउ अचम्भा धन के हियरें॥
जब न रहा पिञ्जर मो डारा । सुन्दर पच्छी होत पियारा ॥

दयावन्ति वह रानी, दया सुवा पर कीन्ह ।
सुवा लाग पिंजर मों, जल चारा भर दीन्ह ॥११॥

दीप सिखा ऐसी वह बारी । साँझ होत घर दीपक बारी ॥
रहा राउ बरखा रितु केरी । लिहेन पतग दीप महँ घेरी ॥
जरि पतग दल बहुतै मुवा । चितै दीप दिस बोला सुवा ॥
धरिये दीप गरब मन थोरा । यह जीवन थोरा है तोरा ॥
जा पल आई पूगे आई । वहै पवन एक देइ बुझाई ॥

दीपक दोही जरत हैं, पुरै कामना देहु ।
निस भर के जीवन उपर, काहे हत्या लेहु ॥१२॥

रूप पियूष समा मुखबानी । सुनि रहसी इन्द्रावति रानी ॥
लीन्ह उतारि सो पिञ्जर रेवा । कहा नियर ले अरे परेवा ॥
आज बुद्ध सो भयेउ पियारे । न तो एक मुठि पख तुम्हारे ॥
बुद्ध भान तोहि घट मो उवा । हँसि मानुष हँसिका जो (ुवा ॥
मनि पूँजी जो तुम्हैं न होती । होतेहु पच्छो पसु की गोती ॥

तुम अनचीन्ह परेवा, ना हम पाला तोहिं ।
केहि हित आइ धरागेउ, तैान सुनावहु मोहिं ॥१३॥

सुवा समस्त सदेस सुनावा । इन्द्रावति मन पावक लावा ॥
प्रीतम कारन करुना कीन्हा । अस दुख ता कहँ करता दीन्हा॥
कैसो रहा मात को हीया । जैसो तनुज बिलगि जेइ कीया॥

कैस पिता की रहा करेजा । जो अस पुत्र बिदेसहि भेजा ॥
है जिउ चाह पियारा वोही । मन्दिर बन्द सदन भा मोही ॥
हम धन के नित रोवत, आंसु सागर बाढ ।
धन आसु जल लै चढेउ, परखेउ मास असाढ़ ॥१४॥
तात भई इन्द्रावति छाती । रातहि लिखा कुंवर कहँ पाती ॥
सुखी न जानेउ मोहि अनुरागी । है उद्वेग व्याध मोहि लागी ॥
गा छिपेउ यह जीउ हमारा । बन्द तोहार बन्द मो डारा ॥
है एक मानुष मित्र पिता को । क्रीपा राय नाम है ताको ॥
सुध तोहार किरपा जो पावै । तो दयाल होइ बन्द छोड़ावै ॥
रोवत आंसु रकत को, इन्द्रावति छबिरास ।
पाती बांधी सुवा के, भेजा प्रीतम पास ॥१५॥
प्रान सुवा पाती लै आयेउ । प्रान अहार सनेही पायेउ ॥
रहसा हियें प्रेम का चेरा । दरसन पायेउ पाती केरा ॥
पाती दरसन पाय नरेसू । गयेउ ध्यान दरसन के देसू ॥
खोलि तनीरुहु सुक उड़ि गयेऊ। दुगसो छिपेउ दुर्ग मो भयेऊ ॥
बुद्ध सेन कहँ कुंवर पठावा । किरपा राय निकट चलि आवा॥
रहा अकेला बन्द मों, हित सारंगी हाथ ।
प्रेम प्रान प्यारी को, रहा कुंवर के साथ ॥१६॥
धन नैहर को नगर पियारा । धन नैहर को निर्मल तारा ॥
धन प्यारी जो नारा जाई । रहसि सखिन के सग नहाई ॥
धन सनेह प्यारी अलबेली । जा सग खेलै सखी सहेली ॥
धनसो जा कह आगम सूझा । खेलत मो सासुर कह बूझा ॥
धन जो सासुर चलब्रो जाना । प्रीतम प्रेम पन्थ पहिचाना ॥
धन जेहि सोच अगम का, खेल न रहै भुलान।
आगम की चिन्ता सों, पावै लाभ निदान ॥१७॥

[१२] नहान खण्ड ।

इन्द्रावति मन प्रेम पियारा । पहुचा आइ तीज तेवहारा ॥
रहिल वहा इन्द्रावति प्यारी । आइन राज दीप की बारी ॥
होइ कष्ट मन रहा समाना । पै आनन्द सखी नित माना ॥
कहेनि सहेलिन है डर मानू । मन तारा चलि करहि नहानू ॥
रतन हितू जन के वस भई । सखिन साथ मन तारा गई ॥

केस सुगन्धित खोलि कै, राखि चीर सब तीर ।
पहिरि नहान दुकूलसकल, कीन्हा सजल सरीर ॥१॥

अब जूरा इन्द्रावति छोरा । भयेउ घटा मो चाद अंजोरा ॥
पैठिहु जब जल भीतर रानी । पानिय पायेउ तारा पानी ॥
झुलनी झूलेहु करत नहानू । लहकि चहेउ चुम्बै अधरानू ॥
लखि नथ मोती की अमलाई । सुक्र छपाना आप लजाई ॥
मनु तारा भा गगन समानू । भयेउ मयक समा वह प्रानू ॥

सुरज उआ आकासही, चन्द्र उआ जल मांह ।
कुमुद तामरस फूले, दोउ मित्र के पाह ॥२॥

कहा रतन सो एक सहेली । बरनि न पारो तोहि अलबेली ॥
केस कस्तुरी हिर्दै फाहू । अहै लिलाट अंजोरा चाहू ॥
अहै भिर्कुटी धनुक समानू । है बरुनी तिसनू कै बानू ॥
नैन सलोन जगत मन हरा । करन सीप मोती सो भरा ॥
नासिक मनहु कीर बैठो है । बरुक अकार कला निधि कीहै ॥

चिबुक कूप को पानी, चाहत कीर धरान ।
फूल गुलाब कपोल है, तिल है भवर समान ॥३॥

हीरन छाल अधर रतनारा । दसन पात मोती को हारा ॥

मन मेरो लालहि चित धरा । जाइ चिबुक गाड़ा मो परा ॥
रेखा एक ग्रीउँ मैा सोहै । का बरनो सोभा मन मोहै ॥
निर्मल बदन आरसी छाजै । गल कचन को डाडी राजै ॥
अमल कनक सो भुजा बनावा । सुन्दर हाथ कमल मन भावा ॥

यह साभै हो रानी, जल औा मुख रचि तोर ।
पाइ दोऊ कर वारिज, बिकस चलैं मुख वोर ॥४॥

उरज बीर दुइ मनमथ को है । छबि उपबन दुइ श्रीफल सोहैं॥
नाहीं नाही धुप यह जानहु । बटा जमल जोत के मानहु ॥
का बरनो रोमावलि हेरी । सोहै मदन बाहनी केरी ॥
पातर लक केस की नाइ । नाही सो सिरजा जग साइं ॥
जघ चरन सो आचम्भो है । रम्भा खम्भ कमल पर सोहै ॥

मानहु खम्भा रूप के, जुगल जंघ है तोर ।
चरन बखान न कै सकोँ, नित परसै चित मोर ॥५॥

सुन्दरता की लच्छन जेते । प्यारी चेरे तेरे तेते ॥
लट कुतल अति स्यामल आहै । भैाह स्याम जेहि इन्द्र सराहै ॥
स्याम अधिक लोचन सँवराई । स्यामल बरुनी जिष्नु डेराई ॥
ललित अधर औा रसना तोरे । अँगुली सीस ललित रग बोरे ॥
ललित कपोल गुलाब लजाही । जग मन मधुकर समा लोभाही॥

तरवा औार हथोरी, आनन रसना छोट ।
गल कुतल दिर्ग जाब है, बानन मिलै न वोट ॥६॥

दसन सेत औा नैन सेताई । अधिक सेत कछु बरनि न जाई॥
गोल सीस औा बदन तुम्हारा । गल एड़ी बिधि गोल सवारा ॥
ऊच नासिका ऊची भैाहैं । बरुनी ऊच बात सम सोहैं ॥
करन छिद्र पायेउ सकराई । साकर नासिक छिद्र सोहाई ॥

आहै साकरि नाभ तुम्हारी । तोहि विधि सैापै सानि संवारी॥
एता सुघराई पर, रंचिक गरब न ताहि ।
सुन्दर सील तेहारो, लागत नीको मोहि ॥८॥
निज बखान इन्द्रावति पाए । रही लजाइ सीस औधाए ॥
कहा बखान करहु का मेरा । है मनाक जीवन जग केरा ॥
का अभिमान देह पर करऊ । एक दिन होइ छार होइ परऊ॥
गरब सखी सब ताकहु छाजा । जो त्रैलोक बीच है राजा ॥
जे निधनी को सग न चाहा । भयेउ न तेन्हैअगमसो लाहा॥
परगट रङ्ग देह को, देखि न गरबै कोइ ।
आवै एक देवस अस, छार कलेवर होइ ॥९॥
बोलिन राजदीप की नारी । आवहु जलमो रचैं धमारी ॥
जब लग सीस पिता को छाहा । खेलहि कोउ करहि जगमाहा॥
जब चल जाहि कत के देसू । कैसो कैसो सहैं कलेसू ॥
नइहर देस कहा फिर आवन । कहँ यह पन्थ चले यह पावन॥
सो गुन एकउ हाथ न आया । जासो होई प्रीतम दाया ॥
जानो नहि पिय प्यारा, राखै कैाने मान ।
एकैा गुन नहि सीखा, हम बाउर अज्ञान ॥१०॥
रानी कहा भेद अब कहना । केहि गुन होइ कन्त सो लहना॥
एक कहा सेवा नित कीन्हेउ । चित मूरत सम पिय पर दीन्हेउ॥
एक कहा लहना तब होई । पिय जो कहै करै धन सोई ॥
एक कहा नित करत सिगारा । चाहै धन कह कन्त पियारा ॥
एक कहा जो सूघर होई । पावै लाभ कन्त सो सोई ॥
इन्द्रावति प्यारी कहेउ, ताकहं चाहै पीउ ।
जो पिय की सेवा किहै, गरब न राखै जीउ ॥११॥

समुझ चन्द्रमो प्रीतम प्यारा । इन्द्रावति अम्बुज जल ढारा ॥
नहिं जानो केहि भाते सोई । दिन औ रात बितावत होई ॥
अरे जिउ दाया तोहि नाहीं । तेरो जीउ परेउ बँद माहीं ॥
जलतो ानी ठाड तवानी । सखिन सान्त रसमो पहिचानी॥
पूछै आगमपुर की बारी । सजल नयन केहिलागपियारी॥

आन अनंद देवस है, अहै तीज तेवहार ।
केहि कारन चिन्ता मो, प्यारी जीउ तोहार ॥१२॥

सकल सखिनसो मरम छिपावा। आनहि भाति कि बात सुनावा॥
वह दिन समुझ सखी मैं रोई । जा दिन नइहर बिछुरन होई ॥
बिछुरहु तुम सब सखी सहेली । सब अलबेलि रूप अलबेली ॥
मिलैं कहा तुम समा पियारी । कहा अलिबेल कहा फुलवारी॥
रहै न साहुर आदर मोरा । सासुर लोग करै नक तोरा ॥

सो दिन समुझि परेसों,जल महं ठाढ़ तराउ ।
नहिं जानों कस होइ है, हम कहं सासुर ठांउ॥१३॥

रग न फीको करिये जी को । पी को सग पियारी नीको ॥
तब लग नइहर देस पियारा । जब लग मूरखता को पारा ॥
जबही खुलै सेमुखी नैना । सासुर सोच बढै दिन रैना ॥
सासुर देस मिलै सब प्यारी । हितू तड़ाग राग फुलवारी ॥
पीउ अनन्द मूल जय पावा । सब सुख राज हाथ मो आवा ॥

तुम का आपुहि को डरहु, है हमहु कहँ त्रास ।
पै सासुर कबिलास है, रहैं जो प्रीतम पास ॥१४॥

खेलै लागिन तारा माहा । कोउ धरि काध कोऊ धरिबाहा॥
सुन्दरता सागर वह नारी । मनं तारा मो रचा धमारी ॥
दै जल मुख के ऊपर मारै । नरम कलोल देहि जब हारैं ॥

आहैं साकरि नाभ तुम्हारी । तेहि विधि रीपैं सानि सवारी॥

एतो सुघराई पर, रंचिक गरब न तोहि ।
सुन्दर सील तेहारो, लागत नीको मोहि ॥८॥

निज वखान इन्द्रावति पाए । रही लजाइ सीस औधाए ॥
कहा बखान करहु का मेरा । है मनाक जीवन जग केरा ॥
का अभिमान देह पर करऊ । एक दिन होइ छार होइ परऊ॥
गरब सखी सब ताकह छाजा । जो त्रैलोक बीच है राजा ॥
जे निधनी को सग न चाहा । भयेउ न तेन्हैअगमसो लाहा॥

परगट रङ्ग देह को, देखि न गरबै कोइ ।
आवै एक देवस अस, छार कलेवर होइ ॥९॥

बोलिन राजदीप की नारी । आवहु जलमो रचैं धमारी ॥
जब लग सीस पिता को छाहा । खेलहि कोउ करहि जगमाहा॥
जब चल जाहि कत के देसू । कैसो कैसो सहैं कलेसू ॥
नइहर देस कहा फिर आवन । कहँ यह पन्थ चले यह पावन॥
सो गुन एकउ हाथ न आया । जासो होई प्रीतम दाया ॥

जानों नहिं पिय प्यारा, राखै कौने मान ।
एकौ गुन नहि सीखा, हम बाउर अज्ञान ॥१०॥

रानी कहा भेद अब कहना । केहि गुन होइ कन्त सो लहना॥
एक कहा सेवा नित कीन्हेउ । चित मूरत सम पिय पर दीन्हेउ॥
एक कहा लहना तब होई । पिय जो कहै करै धन सोई ॥
एक कहा नित करत सिगारा । चाहै धन कह कन्त पियारा ॥
एक कहा जो सूघर होई । पावै लाभ कन्त सो सोई ॥

इन्द्रावति प्यारी कहेउ, ताकहं चाहै पीउ ।
जो पिय को सेवा किहैं, गरब न राखै जीउ ॥११॥

समुझ चन्द्मो प्रीतम प्यारा । इन्द्रावति अम्बुक गउ ढारा ॥
नहि जानो केहि भाते सोई । दिन औ रात विनावत होइ ॥
अरे निउ दाया तोहि नाही । तेरो जीव परेउ बँद माहीं ॥
जलनो ।नी ठाढ़ नवानी । सखिन सान्त रसमो पहिचानी॥
पूछै आगमपुर की वारी । सजल नयन केहिलागपियारी॥

आन अनंद देवस है, अहै तीज तेवहार ।
केहि कारन चिन्ता मो, प्यारी जीउ तोहार ॥१२॥

सकल सखिनमो मरम छिपावा। आनहि भाति कि बात सुनावा॥
यह दिन समुझ सखी मैं रोई । जा दिन नइहर विछुरन होई ॥
विछुरहु तुम सब सखी सहेली। सब अलवेलि रूप अलबेली ॥
मिलैं कहा तुम सर्मा पियारी । कहा अलिवेल कहा फुलवारी॥
रहै न साहुर आदर मोरा । सासुर लोग करै नक तोरा ॥

सो दिन समुझि परेसो,जल मह ठाढ तनाउं।
नहिं जानो कस होट है, हम कह सासुर ठाउ॥१३॥

रग न फीको करिये जी को । पी को सग पियारी नीको ॥
तब लग नइहर देस पियारा । जब लग मूरखता को पारा ॥
जबहीं खुलै मेमुग्ध नैना । सासुर सोच बढै दिन रैना ॥
सासुर देस मिलै सब प्यारी । हितू तड़ाग राग फुलवारी ॥
पीउ अनन्द मूल जब पावा । सब सुख राज हाथ मो आवा ॥

तुम का आपुहि को डरहु, है हमहू कहँ त्रास ।
पै सासुर कबिलास है, रहैं जो प्रीतम पास ॥१४॥

खेलै लागिन तारा माहा । कोउ धरि काध कोऊ धरिबाहा॥
सुन्दरता सागर वह नारी । मर्न तारा मो रचा धमारी ॥
दै जल मुख के ऊपर मारैं । नरम कलोल देहि जब हारैं ॥

रानी साथ कहा एक नारी । गहिरें पाव न धरहु पियारी ॥
जो गहिरें पग राखइ कोई । नीर सीस तें ऊपर होई ॥
गहिर बहुत है आगें, डूबि मरै जनि कोइ ।
न ना खेल कोउ मो, महा दन्द दुख होइ ॥१५॥
सुनि यह बात सखी एक रोई । आसु गुलक जल ऊपर बोई ॥
पूछैं और आसु कस ढारे । खेल के बीच अनन्द नेवारे ॥
उतर दीन्ह सासुर मगु ठाऊ । है सागर औ सागर नाऊ ॥
होइहै जा दिन गवन हमारा । नहि जानौ किम उतरउ पारा॥
यह नइहर तारा है जाना । जेहि आगे पगु धरत डेराना ॥
वह न जान कस होइ है,गहिर गम्हीर अथाह।
इहै समुझि मै रोइउं, केहि बिधि होइ निवाह॥१६॥
सुनि सब राजदीप की बारी । तजि आनँद समुझा ससुरारी ॥
आगम सोच कीन्ह सब कोई । सासुर पन्थ बीच कस होई ॥
बोलिन फेर सोच यह काहे । प्रीतम दाया पथ निबाहे ॥
होइ जलधि तो खेवक लेई । धन कहु जलधि पार कै देई ॥
जा सग व्याह होत जग माहा । पन्थ निबाहत सो धरि बाहा॥
जनम सघाती होत सो, जाके संग बियाह ।
जैस परै तस अंगवै, धन को करै निबाह ॥१७॥
कै नहान सब बाहेर आई । निर्मल अग परी की नाईं ॥
छटकी लट इन्द्रावति केरी । दोऊ दिस तें मुख कह घेरी ॥
मुख लटसो सोहै वह रामा । एक चन्द्रमा दुइ त्रिजामा ॥
लट कपोल पर सोहै कैसें । बैठा नाग चित्त पर जैसें ॥
सोन बिनावट दुकुल रगीला । कीन्हा अङ्ग सो परगट लीला ॥
कै नहान घर कहं चलीं, वै सब कनक सरीर ।
उनकी निर्मलताइ सों, भा निर्मल मन नीर ॥१८॥

मन तारा केतो रहि रानी । दिउरी एक देखि चिपकानी ॥
प्रान बाटिका की वह स्यामा । पूछा कवन सती यह ठामा ॥
सखियन कहा सती यह ठाऊ । रानी महा सती है नाऊ ॥
तब की बात हमैं सुनि परी । अपने कन्त लाग धन जरी ॥
जस तोहार तस ता गल नीका । खात तमोल देखावै पीका ॥

अब धन जरि कै छारभै, रहे न एकौ चीन्ह ।
दिउरी साखी करत है, अगिन छार तेहि कीन्ह ॥१९॥

इन्द्रावति करुना मै रोई । एक दिन छार होइ सब कोई ॥
दिउरी के समीप होइ कहेऊ । हहु कैसे यह रानी रहेऊ ॥
हहु कस रहा चरन औ हाथा । कैसे रहा ग्रीउ औ माथा ॥
हहु कस रही चाल नारी की । दयावन्ति की मानिनि जी की ॥
कहा गई धन मिलै नहेरै । है ता जिउ दिउरी के नेरै ॥

मन तेवान कै ठाढी, रही घरी भर आप ।
हिर्दै सात रस डूबा, बुझि जगत कहँ स्वाप ॥२०॥

इन्द्रावति जब ध्यान लगावा । सबद एक एक दिस ते आवा ॥
मैं का रहिउ रहीं बहुतेरी । जिनकी रहीं अपछरा चेरी ॥
सोऊ जगत छाडि कै गईं । मिलि धरती मो माटी भईं ॥
इहा न लहत सिगारी काया । लहत न गरब लहत है दाया ॥
लहत न काया सुन्दरताई । लहत पुन्य मन की निर्मलाई ॥

सबद पाइ इन्द्रावति, अधिकौ रही तवाइ ।
चिन्ता बहुतै कीन्हा, अपने मन्दिर आइ ॥२१॥

हैा मैं पाप भरी जग माहीं । आस मुकुत की है किछु नाही ॥
है मोहि बीच दोव जह ताईं । हरउ करै कैसे अग साईं ॥
साहस देत परान हमारा । अहै रसूल निबाहन हारा ॥

निस दिन सुमिरु मोहम्मद नाऊ। जासो मिलै सरग मो ठाऊ ॥
करता तोहि मोहमदि कीन्हा । माथ सुभाग अस तोहि दीन्हा॥

ना करु सोच अगम को,राखु र्हिदै मों आस ।
जाके दीन बीच तैं, सो देइ है सुख वास ॥२२॥

अरे प्रीतम तैं मन हरा । अहो वियोग बन्दमो परा ॥
आइ बन्द सो मोहि छोडावहु । दोऊ जगत भलो फल पावहु ॥
मोहि पाछेँ बैरी बहुतेरे । तेरे सेवक माथी मेरे ॥
खरग काढि वैरी कह मारहु । बन्द कूप ते मोहि निसारहु ॥
अलख सवारा तुम कह वली । चलै जगत मैा कीरत भली ॥

दूसर बन्द न भावत, जहां प्रेम को बन्द ।
जगत बन्द दुखदायक, प्रेम बन्द आनन्द ॥२१॥



[१३] जुद्ध खण्ड ।

बुहुसेन कीया कह सेवा । जैसे मानुष सेवै देवा ॥
राज कुवर को बन्द सुनाजा । सुनि कीया कीया पर आवा ॥
सब सहाय जगपति सो माग । सब पायेव कछु एक न खाग ॥
कीया चला कटक लै भारी । गोहन सुभट चले बलधारी ॥
पानहु दीन्ह समुद्र हलोरा । लहर मनुज तम्बेरम घोरा ॥

तम्बेरम दल सोहै, कज्जल गिर के रूप ।
रहेउ अचल कज्जल गिर,ताहि चलायेउ भूप ॥१॥

कहत न पारउ तुरै बखानू । रहे चलत मह पवन समानू ॥
औ थिराय के सामै माही । मादी चाह सो अधिक थिराहीं॥

नीचे जल सम पाव उठावैं । अगिन समा ऊपर कह धावै ॥
बाजी सकल पवन के जाये । मानहु चेत भेस धर आये ॥
वै सवार है पर केहि मानन । मनहु पवन ऊपर पउचानन ॥

यह समीर तेन आगें, चलत थकित होइ जाइ।
आगें वै पशु राखहीं, पाछे पवन थिराइ ॥२॥

कोपा आवागढ नियराया । आया पति दुर्जन सुधि पावा ॥
गढ भारेउ औ कटक बटोरा । घरेनि अलङ्घ वीर चहु ओरा ॥
तिन्ह कोप सहायक आयेउ । आयेउ गरब अधिक बल पायेउ ॥
गढ सो छूटन लागेउ गोला । डोला सात अकासहि डोला ॥
कोप। दिस छूटत अरि चोटा । भयेउ जगत करता की वोटा ॥

बाजहिं बाला संजुगी, चहु दिस परेउ पुकार।
चार मास तहँ बीता, होत सत्रु सो मार ॥३॥

जो करतार पन्थ पर जूझा । ताकह चिरञ्जीत हम बूझा ॥
करता मगु पर जें रन लायेउ । ताहि सहाय गगन सो आयेउ ॥
आयेउ नभबासी को सैना । दीख न पा।। ता कह नैना ॥
करता की सेवा के बेरा । होइ जहा हर दुर्जन केरा ॥
सुमिरन सेवा आधे करही । आधे लोग सत्रु सग लरहीं ॥

धन जो सिर्जनहार मगु, गहि कै राखेउ पाव।
पाव न टारा जुद्ध सो, आय उरद मो घाव ॥४॥

गढ मो गरब राय मुख खोला । गरब बचन दुर्जन सो बोला ॥
जैसो जगपति तस तुम राजा । गढ मो निसरि जुद्धि तेहि छाजा ॥
एकै एक करहि मिलि जूझा । जाय सुभट जन को गुन बूझा ॥
तब दुर्जन गढ सो निसराना । हलकी रज तिमिरार छपाना ॥
चढि मैदान कोप मा ठाढा । छमा खरग यह दीसो काढा ॥

भयेउ खेत के ऊपर, सींघै सींघ भिडाव ।
आइ सरीरन संचरेउ, काहे करसो घाव ॥५॥

सुमिरि हियें करता कर नाऊं । मारा उमा कोप सिर ठाऊं ॥
जब वह कोप गिरा गा मारा । आयेउ मदनसिंह बरियारा ॥
धरम राय वह दिसते धायेउ । मदनसिंघकहवाधिलिआयेउ ॥
मदन विमद होइ सेवक भायेउ । आपा सुरा उतरि तेहि गायेऊ॥
दुर्जन कटक सहित तब धावा । अतरन रकत समुद्र बहावा ॥

एकै भये दोऊ दल, जमल जलधि मैं एक ।
कठिन परगटेउ संजुग, मन सो गयेउ विवेक ॥६॥

भयेउ घटा दारुन सो कारी । खरगन भये बीज चमकारी ॥
गेंदा सीस खरग चौगानू । खेलहि बीरहि चढ़ि मैदानू ॥
हाल आपनो आपनो चाहैं । अरि को शस्त्र चलाव सराहैं ॥
भाला खरग हनै सब कोई । बोड़न खरग ठनाठन होई ॥
गगन खरग सो ठन ठन गयेउ । हिनहिनऔ धुन हन हन भयेउ॥

बोनई घटा धूर सों, दिन मनि रहा छिपाय ।
तहां महाभारथ भा, सबद परेउ हू हाय ॥७॥

साहस राय गयन्द सरीरा । औ मन सिंह धरम रन बीरा ॥
खरग हनै जाके उपराही । बिनु बिलगें सो बाचै नाही ॥
कोउ भये घायल कोउ मारे । भाला खरग सुरा मतवारे ॥
छुछाबान सो भयेउ निखगू । भयेउ निखग बान को अगूं ॥
बढ़ेउ कमठ कह दाह कराहू । चकाचाक भा धाधक हाहू ॥

जुद्ध करत दोऊ कटक, थाके रहे अघाय ।
दुर्जन रिपु मारा परा, ता दल गयेउ पराय ॥८॥

कोपा जब दुर्जन कह मारा । जाइ के बद सो कुवर निसारा ॥
कुवर कहा कोपा जस लीजे । जलज सिंधु दिस गवन करीजे॥
कोपा कुवर सहित गा तहा । रहा समुद्र गुलिक को जहा ॥

कहा बहुत राजा जिउ दीन्हा। काहुअ मोती हाथ न कीन्हा ॥
बहुत महीप भये मर जोया । मोती काढै नित जिउ दीया ॥

दीन्ह कुवर कहँ फीपा, मोती ठउर बताइ ।
औ खेवक हंकरायेउ, राहहिं दीन्ह चिन्हाइ ॥९॥

राजा जगपति यह सुधि पावा। मरमी जन सो मरम जनावा ॥
एक मनुष राजा सो कहा । ना जानहि जोगी कस अहा ॥
राजन ऊपर परन तुम्हारा । माहीं सबै निसारन हारा ॥
यह मोती तेहि काढब छाजा । राजा पुत्र होइ जो राजा ॥
बरजि पठावहु बेर न कीजे । जात खोभि कै आज्ञा दीजे ॥

भायेउ बात निपं कहँ, भेजा तुरत बसीठ ।
फेरि लिआई कुवर कहं, दीन्ह जलज दिस पीठ ॥१०॥

बैठा बिछ तरें अनुरागी । चिन्ता कवन हुतासन लागी ॥
कहै कवन उपकार बनावउ । जातें प्रान बल्लभा पावउ ॥
जावक होउ होइ दुख मेटउ । तो वह कमलचरनकह भेंटउ ॥
कज्जल होउ नयन लगि रहउ । होउ पवन लट ऊपर बहऊ ॥
होइ मोती बेसर मह परऊ । होइ प्रतिबिम्बो छाया धरऊ ॥

जेहि प्रानप्यारी के, अमी भरे अधरान ।
ता पग रज के ऊपर, वारों आपन प्रान ॥११॥



[१४] मधुकर खण्ड ।

इन्द्रावति चिन्ता महं परी । रहै न विनु चिन्ता एक घरी ॥
आइ रैन तेहि बहुल सतावै । कछु न सुपेती ऊपर पावै ॥
कलगै गलगै जलगै काया । तेहि वियोग की पीर सताया ॥
सखिन मता आपुस मो कीन्हा । सब मिलि कै ऐसे मत लीन्हा ॥
निस कहं जहा रहै वह रानी । सदा सुनावहु एक कहानी ॥

होइ बहोरे जीउ को, सुनत कहानी बात ।
चिन्ता जाय सरीर सो, नींद परै वहि रात ॥१॥

एक सखी निस होतहि आई । मधुरी बचन असीस सुनाई ॥
कहा कहत हो एक कहानी । सरवन है कै सुनिये रानी ॥
बहुत बचन करतार पठावा । जेहि सुनिकै बहुतन तनु पावा ॥
कहा बहुत जेन की मति फेरी । अहै कहानी आगेहि केरी ॥
अहै कहानी पै सुन रानी । है अमृत सानी रस बानी ॥

कहा कहानी कहिये, सुनो कान दै ताहि ।
जीउ विरह सों तन महँ, उठत कराहि कराहि ॥२॥

मन रानी को पाय सयानी । धन सो लाग सो कहै कहानी ॥
मोहनपूर रहा एक याऊ । तहा महीपत मधुकर नाऊ ॥
जस मधुकर रस रहै सोभाना । तैसें वह रस महं लपटाना ॥
जग रस बीच परा जो कोई । आगम रस नहि पावहि सोई ॥
रस पावै जो जेहि करतारा । दया दिष्ट सो हिया उघारा ॥

मधुकर के मन्दिर मों, रहै बहुत रनिवास ।
संघत करै भँवर सम, लय अम्बुज के पास ॥३॥

एक दिन राजा गयेउ अहेरें । देखा एक मिर्ग कहं नेरें ॥
मिर्ग चला मधुकर है हाका । मिर्ग पवन दहु रहै कहा का ॥
रहा मिर्ग के पाछे सोई । छुटा लोग ना पहुचा कोई ॥

जात जात एकै बन मह परा । देखा बिरछ एक अति हरा ॥
भयेउ कुरङ्ग कुरङ्ग हेराना । तरियर तरैं आइ पछताना ॥
ऊंचा तरवर देखि कै, और गम्हीरी छांह ।
सुख पायेउ दुख भूला, भा अनन्द मन माह ॥४॥
सीतल छाहा सो सुख पाई । पैाढा भुइँ पर बसन बिछाई ॥
ततिखन दुइ सुक आइ बईठे । बोले बचन आप मह मीठे ॥
पूछा एक कुसल हो प्यारे । केहि धरती सुख वास तुम्हारे॥
जब सो हम तुम बिछुरे होऊ । मिला न तुम्हैंसमा हित कोऊ॥
जेहि भेटेउ अपकारी पायेउ । तासो भागेउ प्रीत न लायेउ ॥
सुभ बेला यह सुभ देवस,दरसन मिला तोहार।
समाचार आपन कहो, जीउ थिराय हमार ॥५॥
दूसर सुआ अधर कह खोला । समाचार की बानिय बोला ॥
जा दिन छूटा सग तुम्हारा । जाइ परेउ एक बिपिन मझारा॥
तरिबर पर निर्चिन्त बईठेउ । छल पहरा केर एक न डीठेउ ॥
सब अजाम न जानत कोई । गुपुत अन्तर पट सो का होई ॥
जिनि यह कहो करो असिभोरी । दहु अस प्रगटै भोर अजोरी ॥
मैं निचिन्त अपने मन, आइ एक चिरिमार ।
खोंचा मारि बझायउ, डारेउ बन्द मझार ॥६॥
लै मोहि प्रेम नगर के हाटा । बेचेसि चलिगा दूसर बाटा ॥
परेउ रूप राजा घर माहीं । जहा दरब कछु खागा नाही ॥
तेहि के घर सुन्दर एक बारी । तेहि की सुता सुन्दर सुकुमारी॥
अति सुगन्ध मालति की काया । जनुबिधि सुगँध मिलाइबनाया॥
मोहि राजा मालति कह दीन्हा। बचनन सो सेवा मैं कीन्हा ॥
कीन्ह पियार बहुत मोहिं, दायावन्ती होइ ।
सेवा किहे पियारा, होइ अन्त सब कोइ ॥७॥

मालति रूप न यरनै पारउ । केति कै अर्थ म चिन्त सँचारउ॥
अवहीं तेहि सग भवर न लागा। मिर्ग नयन लखि आनन भागा॥
मालति याम सालती यासा । मालति पास मालती पासा ॥
जानहु ससि भुइं पर अवतरा । पुहुमी पर उतरी अपछरा ॥
है सुकुमार बहुत वह रानी । बोलन बानी अमृत सानी ॥

है मालती सुबासित, सुगन्ध भरे जनु अंग ।
ज्ञान भरी सुन्दर सखी, रहैं सदा तेहि संग ॥८॥

एक देवस घन रूप निधानू । निर्मल तारा गइल महानू ॥
सून मँदिर मो पिंजर मोरा । रेवा रहा मझारिय तीरा ॥
बाचेउँ रिपु से हिये डेराना । पिंजर से मैं निसरि पराना ॥
बद छुटे आनँद मैं पावा । अन्त पखेरू अहइ परावा ॥
जेहि के छलें छुटा सुखवासू । तेहि वैरी कर का बिसवासू ॥

अब बन बन फेरा करउ, समुझि पिंजर को बंद।
काहू कर सेवक नहीं, मन मो रहत अनंद ॥९॥

सुनि मधुकर मालति कर नाऊ। भा मालिल मधुकर तेहि ठाऊ॥
उठि कै कहा बिहग पियारे । बाल न बान प्रेम कर मारे ॥
तुम पंडित बुधवन्त गरेवा । उतरहु आइ करउँ मैं सेवा ॥
हहु नियरें पै करमो नाहीं । रहेउ समाइ सकल तन माहीं॥
आवहु सीस देउँ तेहि ठाऊ । तोहि लै चलहु अपाने गाऊ ॥

जिउ अस राखउँ तुम कहँ, धरउँ न पिंजर माँह।
जल चारा आगें कै, रहौं जोरि दोउ बाँह ॥१०॥

कहा सुवा तुम मानुप होहू । तुम धरती पर डारहु लोहू ॥
आगें अब मानुप नहि आवा । बहुतन औगुनता पर लावा ॥
है मानुप निर्दै हत्यारा । सकै अनुज कहँ जिउ सों मारा॥

सात देह मानुष कर आहैं । सात नरक द्वारे महँ हारै ॥
चाम जरै तब दूसर देहीं । मानुष बार बार दुख लेहि ॥
है। पंडित औ चातुर, कहां चलों तेहि संग ।
जिउ पंखी नहि पालै, पाले अंग बिहंग ॥११॥

तुम मोहि यह सत बात सुनावा। मानुष परसै ऐगुन आवा ॥
पै मानुष बुध के बलसाऊ । सकलो सिष्ट को जाना नाऊ ॥
मानुष पर दाता की दाया । सकलो सिष्ट के नाम सिखाया॥
करता की नेवँ मानुष अहई । का जो दोष पाप मो रहई ॥
प्रेम नगर औ मालति बातै । फेर सुनाउ चतुर महातै ॥
एक एक कै बरनहु, वह मालति की बात ।
सुनउ जीउ सरवन दै, हो पंडित सुखरात ॥१२॥

कहा मोहि प्रान समो जेइ पाला। मन भा तेहि की प्रीत के माला॥
मरमी भयेउँ सदा कइ सेवा । तोहि बेरान से भायउँ भेवा ॥
सरवन सुनै जोग तेहि नाही । मूल न देखेसि देखेसि छाही ॥
नरक बीच बहुतन कहँ भरई । मन राखहि पै बूझ न करई ॥
नैना होइ न देखहि नैना । सरवन रखहि सुनहि नहि बैना
वे सब पसु के मान हैं, बरु पसु चाह अचेत ।
जेहि के मन नहिं चेत है, तेहि को भेद न देत ॥१३॥

कहा कहा मेरो तुम मेंटा । नहि जानो का ऐगुन भेंटा ॥
बिनती एक करउँ कर जोरी । मानु दया सो बिनतिय मोरी ॥
मोर सदेस कान कै लीजे । प्रेम नगर कहँ गवन करीजे ॥
जायेहु जहँ वह मालति प्यारी। तासो भाखेहु बिथा हमारी ॥
सपत तेहिक जेइ जनमा नोही। प्रेम हमार जनायउ वोही ॥
मोहनपुर महँ मधुकर, कहहु निपं एक आह ।
बहुत बेयाकुल कीन्हा, प्रेम तेहारो ताह ॥१४॥

कहा तेहारा बिनती मानेउँ । मालति कर मधुकर तोहि आनेउँ॥
एकबार तोहि कारन जाऊ । धन सो कहऊ तेहारे नाऊँ ॥
आनक सपत दिहा नहिकाही। सपत भलो करता कर आही ॥
बहुत सपत जो मानुष खाहीं । तैं जिन रहु तेहि अन्हा जोहीं ॥
कहो नाम सुनि कै तोहिं लोभा। बिनु देखे मूरत औ सोभा ॥

यह सब कहि उड़िगा सुवा, मधुकर मन पछतान।
पंखी सम चंचल है, काया बीच परान ॥१५॥

हेरत सकल लोग औ दासू । आए सब मधुकर के पासू ॥
लोग समेत निपे घर आएउ । मन मह प्रेम बसेरा पाएउ ॥
परगट राज करै औ बोलै । गुपुत दिष्ट मालति पर खोलै ॥
परगट सबके जानै भोगी । गुपुत भएउ मालति कर जोगी॥
परगट रहइ आपने गाऊ । गुपुत रहै मालति के ठाऊँ ॥

परगट सबसों बोलै, गुपुत जपै वह नाम ।
मन महँ रहै व्याकुल, हरिगा सुख बिसराम ॥१६॥

मालति उहा बहुत दुख देखा । जा दिन सो गा सुवा सरेखा ॥
कहै कहा वह पंडित सुआ । कादहु हुआ जियत की मुआ ॥
छूछा पिंजर रहिगा रेवा । उड़िगा प्यारा प्रान परेवा ॥
जो पिंजर की भीतर बोला । औ जासो यह पिंजर डोला ॥
सो चलिगा केहि बन ठहराना। रहा आपनो भयेउ बिराना ॥

सुवा आनि को मेरवे, पिंजर देइ जिवाइ ।
का औगुन दहु देखा, तजि के गयेउ पराइ ॥१७॥

सखिन सुभायहि सुवा पियारा। ठहरा जब लग रहा तुम्हारा॥
उड़िकै गा रहिगा पछनावा । कहा फिरै जब भयेउ पराया ॥
जो पछताने आवइ हाथा । हम पछताहिं सकल तुम साथा॥

पिंजर देह रहा तेहि भारी । हलुक देह उहि लीन्हेसि प्यारी॥
उहि कै पन करि भयेउ अहेरी । तेहि डर छूट मजारिन केरी ॥
पिंजर बीच रहा सुवा, चारा चिन्त मझार ।
अब ऐसे बन में गयेउ, सुख सो मिलै अहार ॥१८॥
दिन दस बीत सोच मो गयेऊ । सुवा जाइकै परगट भयेऊ ॥
मालति देखि जीव जनु पावा । प्रान मिलै कह आगेहँ धावा ॥
कहा प्रान अस नियरें होहू । तोहि नित बहुत पिया मैं लोहू॥
कहा सुवा बाचा मोहि दीजे । मोहि पिंजर के बीच न कीजे ॥
मैं बन बीच रहेउ जब भागा । नरक समा अब पिंजर लागा ॥
बाचा दीन्हा मालती, सुवा नियर भा आइ ।
कण्ठ सुवा कहँ लायेउ, प्रान पियारी धाइ ॥१९॥
कहा कुसल कहु प्यारे सुआ । तोहि नित आसु नैन सो चुवा॥
कहो कवन औगुन मोहि लागे। जेहि नित छाड हमै तुम भागे॥
केहि बन भीतर रहेउ बसेरा । कहा कहा, तुम कीन्हा फेरा ॥
सुनि कै सुवा असीस सुनावा । देइ असीस सीस पुनि नावा ॥
तुम औगुन सो निर्मल प्यारी । औगुन भरी सरीर हमारी ॥
तुम ताे निर्मल तारा, गइहु करै अस्नान ।
पिंजर धरा मँजारो, गा वह टूट निदान ॥२०॥
पिंजर टूटा मिला दुवारा । बाहर निकसि पख मैं, झारा ॥
रहत न भावा बैरी राधे । रिपुनित रहै घात सर साधे ॥
परोस जहा सत्रु को होई । तहा निचिन्त रहै का कोई ॥
जाइ परेंउ ऐसे बन माहीं । खाग जहा धारा कर नाहीं ॥
हम तुम छूटि गए तेहि ठाऊ । इहा अहै हम तुम सब नाऊ ॥
आयेउँ दरसन कारने, औ राखउँ एक बात ।
सूनो मन्दिर होइ जब, बात कही तब जात ॥२१॥

सून मन्दिर तब मालति कीन्हा। सुवा सयान भेद तब दीन्हा ॥
उड़ि उड़ि सब कानन महँ भयेऊ। औ सब तरिवर ऊपर गयेऊ ॥
मिला एक दिन एक परेवा । मित्र रहा कीन्हा मोर सेवा ॥
दोऊ एक बिर्छ पर गयेऊ । छाहाँ पाय सुखी मन भेयेऊ ॥
सुवा साथ मैं तुम्हैं बखाना । जस तोहार सब वोनहू जाना ॥

बिर्छ तरें एक मानुष, सुना सकल गुन तोर ।
बिनु आज्ञा अब आगें, कहि न सकै मुख मोर ॥२२॥

कहा पियारे बात तुम्हारी । जीव देत है कहु बलिहारी ॥
सुन पण्डित जो पण्डित होई । अब सकु बात न भाषै सोई ॥
सिद्ध रूप सुन सुवा गेयानी । बात तोहार अमीरस सानी ॥
सिद्ध बात लाभ की कहई । का जो उलटी बातें रहई ॥
स्वानौ छोकरा जो मरि जाहीं । मिट्ट कहै भल है भल नाहीं ॥

आज्ञा का मांगत हौ, भाषहु जो मन होइ ।
मिलवो लूट तुम्हारो, मरम न राखौ गोइ ॥२३॥

कहत बखान नाम गुन तेरो । सुनि कै वह मानुष भा चेरो ॥
बिनती बहुत कीन्ह मोहि साथा। नग सदेस को दीन्हा हाथा ॥
कहा जाई मालति के गाऊ । प्यारी साथ कहेउ मम नाऊ ॥
मोहनपूर देस है मेरो । मैं मधुकर राजा हित तेरो ॥
मोहि राजा कहँ प्रेम तुम्हारा । ब्याकुल कीन्ह सोच मो हारा ॥

एहि सँदेस तेरी कहै, कुछ बसीठ पर नाहि ।
जो सँदेस ले आवहीं, पहुचावैं चलि जाहि ॥२४॥

यह सुनि कै मालति सुकुमारी । चुप होइ रही न बात निकारी ॥
बिनती कीन्ह सुवा कह बारा । दीन्हा हाथ बिठं कर सारा ॥
पिंजर भीतर सुवा न आया । लाग रहे छूटा सुख पाया ॥

रहै सुवा फुलवारी माहा । जह फल फूल औ सीतल छाहा॥
जस बैकुंठ बीच फल नियरैं । तस नियरे अनदाना हियरैं ॥
उडि बैठहि तेहि डार पर, जहां चलावै जीउ ।
मन काया के छौर महं सुख अनंद भै पीउ ॥२५॥

मालति मन पर मधुकर नाऊ । लिखिगा देखि परै मन ठाऊ ॥
कवल ममा मन प्य री केरा । होइ मधुकर भा मधुकर चेरा ॥
प्रेम फाद प्यारी मन परा । मधुकर मन मालति मनहारा॥
मन सो का कह सुमिरै कोऊ । सुमिरै ता कह मन सो सोऊ ॥
कहा अलख सुमिरैा तुम मोही। सुमिरे सो सुमिरैा मै तोहीं ॥
रही सुगन्धित मालती, प्रेम भँवर तेहि कीन्ह।
व्याकुल भई जीउ महं, भेद न काहू दीन्ह ॥२६॥

दुर्बल भइ जब मालति बारी । धाई धाइ कहा बलिहारी ॥
कवन कलेस समान सरीरा । कहत सरीर सो आपन पीरा ॥
कहा कलेस न एकौ मोही । कवन कलेस सुनावउ तोही ॥
कहा भई दुर्बल तैं बारी । बिनु दुख दुर्बल होत न प्यारी॥
हो री मात समा हो तोरी । मोरी मरम न गोवहु गोरी ॥
जो दुख होई पिंड मंह, सो मोसैं कहि देहु ।
धाइ करउँ उपकार सैं, दुख कर औापद लेहु ॥२७॥

कहा सुवा वोही दिन जो आवा। मोसे मधुकर नाउ सुनावा ॥
है जो एक देस मोहनपुर । मधुकर राय तहा जस सुर ॥
सुना सुनायेउ तेहिक सदेसू । है तेहि कारन प्रेमी भेसू ॥
हों माता सुनि मधुकर नाऊ । भा मन मधुकर उहि कै आऊ॥
मोहि मालति कह मधुकर नेहा। कीन्हा मधु कर नेही देहा ॥
तुम माता दाया भरो, दाया ऊपर आउ ।
मोहि मालति कहं मधुकर, कै उपकार मराउ॥२८॥

सुनि धाई दाया पर आई । मालति सो उपकार सुनाई ॥
सैापहु काज आपनो ताको । सिर्जनहार नाम है जाको ॥
पुरुष पछुन को पालन हारा । है सो पुरवै काज तुम्हारा ॥
सुमिरहु ताहि बिसारहु नाहीं । सुमिरन बड़ो अहै दिन माहीं ॥
बहुरि सुवा सो बिनती कीजे । बिनती कै जिउ कर मह लीजे ॥

भेजहु तेहि मोहनपुर, मधुकर आनै आस ।
आनै प्रेम बढाइ कै, तेहि मालति के पास ॥२९॥

एक देवस मालति मति पागी । बिनती करै सुवा सो लागी ॥
कोमल बात जीभ सो बोला । फाद भलो है कोमल बोला ॥
कोमल बात कहै कह दाता । कहा अहै भल कोमल बाता ॥
धरती ऊपर जीउ परावा । कोमल कहें हाथ मह आवा ॥
तुम हैा सुवा प्रान जस प्यारा । जैसे प्रेम बान तुम मारा ॥

तैसें महि घायल कहँ, औषद फाहा देहु ।
लैआवहु मधुकर कहँ, यह पूरा जस लेहु ॥३०॥

सुवा कहा सुनु बारी भोरी । अहै सीस पर आज्ञा तोरी ॥
मैं पखी वह मानुष आही । मनुष बसीठ मनुष दिस चाही ॥
सो जेइँ कीन्हा जगत अजोरा । मानुष भेजा मानुष बोरा ॥
मानुष मानुष बचन समूझै । सुवा सुवा की बातैं बूझै ॥
औ मोहनपुर देखेउ नाहीं । अकस जाउ भूल बन माहीं ॥

१ होइ साथ जो मानुष, जाउ मोहनपुर देस ।
दोऊ मिलि समुझावैं, आवै इहां नरेस ॥३१॥

दुई समुझायें समुझई सोई । दुइ जन मिले बूत भल होई ॥
जेहि बसीठ कै जीउ डेराई । लीन्ह सहायक आपन भाई ॥
गा तेहि दिस जासो डर माना । भाषा साची बात सयाना ॥

दुइ मन एक होइ गिर तोरैं । कटक बिदारत बदन न मोरै ॥
जेइ मन तोरा सोगा तोरा । मन तोरा कहि तोरा मोरा ॥
प्रेम नाम बनिजारा, बसै तुम्हारे गाउँ ।
ताके संग पठावहु, मोहनपुर कहं जाउँ ॥३२॥
माना बात मालती रानी । धाई साथ जनायेस ज्ञानी ॥
धाई गई प्रेम दिस धाई । बिनै सुनाई बात जनाई ॥
दीन दरब औ आसा दीन्हा । प्रेम सीस पर आज्ञा लीन्हा ॥
दरब करै सब कारज पूरा । उद्दिम करै दरब जिमि सूरा ॥
जो न दरब को निर्मल करई । अगिन हास होइ गल मो परई॥
करता अपने पन्थ पर, दरब कहा है देइ ।
जो नहि देई सो एक दिन, लाछ दरब सों लेइ ॥३३॥
सग लेसुवा प्रेम बनिजारा । मोहनपूर पन्थ पगु ढारा ॥
अहै बनिज को उद्दम भलो । पै जो करै बनिज निर्मलो ॥
सिर्जनहार आप को वेला । आवत तजै बनिज को खेला ॥
बेचब लेब कहा है भलो । अहै बियाज नहीं निर्मलो ॥
सुन्दर रिन करता कह देहू । वह जग मूल लाभ सग लेहू ॥
बिनु पद दरब जो आन को, जो कोउ अगमों खात ।
आनहु अगिन सो खात है, है यह साचो बात ॥३४॥
काटत पन्थ सुवा बनिजारा । पहुचे मोहनपूर मझारा ॥
मधुकर उहा बियाकुल हीयें । ध्यान रहै मालति पर दीयें ॥
बेकल बहुत भा मधुकर राजा । गा सब छूट राज को काजा ॥
मरम को कली फूल बिकसाना । बास पाय सब काहुअ जाना ॥
छपि ये प्रेम कस्तूरी दोऊ । अत बास पावै सब कोऊ ॥
लोगन बहुत बुझावा, फिरा न मधुकर प्रान ।
भयेउ प्रेम के बाढें, बाउर भेस निदान ॥३५॥

सुवा प्रेम कह मरम सिखावा । बेचेहु हम कह जानि परावा ॥
हाट चढाइ मोल कस भारी । लै न सकै बैठे सब हारी ॥
तब राजा मधुकर मोहि लेई । भारी मोल वेगि तोहि देई ॥
मित्र जो होइ सो मोल बढावै । वैरी जन सो औगुन लावै ॥
अति सुन्दर कह वैरी लोगू । बेचा चोरै पर बिनु जोगू ॥

मधुर बचन मै बोलऊं, मधुकर लेइ निदान ।
रहिं राजा के संग महं, करो हाथ मो प्रान ॥३६॥

पेम जवै दूसर दिन जब पावा । लैकै सुवा हाट महँ आवा ॥
हाट नगर मो भयेउ पुकारा । पेम नगर का है बनिजारा ॥
बेचत है एक सुवा सरेखा । वैसो पंडित कीर न देखा ॥
गाहक आये मोल उघारा । भारी मोल सुनत सब हारा ॥
मधुकर पेमनगर कर नाऊ । सुनि आनन्दलि भा मन ठाऊ॥

आयउ मधुकर हाट मों, लीन सुवा कहं मोल ।
सुवा अधर कहं खोला, बोला कोमल बोल ॥३७॥

मनिमय पिंजर बीच परेवा । राखा मधुकर कीन्हा सेवा ॥
भयेउ अहार सुवा की बातें । मधुकर राजा कह दिन रातें ॥
एक दिन पेमहि पास हकारा । सून सदन कै बात निसारा ॥
है मालति रानी वह देसा । रूप विहाय कला निधि भेसा॥
यह रानी कर सुनत बखानू । सुरत सनेही भयेउ परानू ॥

तुम आनहु वहि नगर सो,ताकर कहौ बखान ।
एक सुवा सो मैं सुना, उडिगा सुरा निदान ॥३८॥

सुनि यह बात पेम तब हसा । हमा फूल मालहु महि रासा ॥
जो एक मोल निपं तुम लीन्हा । मोल गुलिक नग मानिक दीन्हा॥
येही सुवा मालति गुन कहा । अब अनचीन्ह तुम मो होइ रहा॥

वहइ सुवा है तुम नहि चीन्हा। पडित जान मोल तुम लीन्हा॥
सुवा का पिंजर नियरें राखैा। तब रसाल यव को रस चाखैा॥

सुनि रहसाना मधुकर, पिंजर लीन्ह उतार।
पूछा कुल कहा कुसल है, है जब कुसल तुहार॥३९॥

पेम सुवा दोऊ गुन गावा। ऐकै मुख होइ बात सुनावा॥
हम मालति के भेजें आये। दरसन देखि बहुत सुख पाये॥
मालति तुम्हें रात दिन सँवारा। भा धन मन तोहि ऊपर भँवरा॥
तुम कह आनै हमैं पठावा। पेमहि निर्पे को ताहि जनावा॥
वनिज हमार तुहीं हो राजा। अब वह देस गवन तोहि छाजा॥

रटत चातकी होइ रही, चलि दरसन जल देहु।
ना तो प्रान देइ धन, यह अपराध न लेहु॥४०॥

सुनि मधुकर जानहु जिउ पावा। कहा तुम्हें मोहि लाग पठावा॥
छाजत सीस अकास लगावउ। सीस चरन कै तेहि दिस धावउ॥
अब लग रहेउ भरम मदमाहीं। रही पन्थ की सुधि मो नाही॥
तुम हुइ अगुवा चतुर सयाने। मिलेहु करउ तेहि ओर पयाने॥
है धन दिष्ट भाग को मोही। सुमिरन मोर चढे चित वोही॥

रोवत दिन मोहि बीता, अब हँसि करउँ अनंद।
सोइ रोवाइ हँसावै, जेइँ कीन्हा रवि चंद॥४१॥

तजा राज कह मधुकर राजा। सकल समाज चलै को साजा॥
पिंजर सो वाहिर भा सूआ। पेम आप मिलि अगुवा हूआ॥
बहुत लोग राजा सङ्ग लागे। मानहु सोवत कै सब जागे॥
सोवत है जग मह सब कोई। जब मरि जाहिं जाग तब होई॥
यह जीवन कह छोटा जानहु। जीवन बडो अगम पहिचानहु॥

जस जियहु तैसें मरहु, उठहु मरहु जेहि भांत।
जग चाहुत के ऊपर, कह दिहे है दांत॥४२॥

बहुत देवस को करत पयाना । एक समुद्र आइ नियराना ॥
चढे पोत ऊपर सब कोई । गाढी पेम नगर मगु होई ॥
बोहय बूड़ बहे सब कोऊ । सुवा उड़ा जनि बिछुड़न होऊ॥
जाको राखत सिर्जनहारा । जल सुखाई मगु लाइ उतारा॥
यह जनि जानहु नीर डुबावै । चाहै धरती बीच धसावै ॥

एकबार जलथल भया, राखा चाहा जाहि ।
आगें कहिकै भेजेउ, नाव बनावै ताहि ॥४३॥

बढे गरब कोप औ माया । भरमित और काम की काया ॥
एक दिस बहे बुद्धि औ बूझा । मधुकर पेम बहे नहि सूझा ॥
मन पछताइ सुवा गा तहा । चितवत पन्थ मालती जहा ॥
मिली कहा कहु कुसल पियारे । पन्थ निहारा नैन हमारे ॥
कहा कुसल का बूड़ी पोता । होत कुसल जो जन मन होता॥

मधुकर आवत तेहि दिस, बहा सिन्धु के धार ।
बूड़े सकल संघाती, कोउ न लाग गोहार ॥४४॥

सुनि यह बात मालती रानी । मन पछतानी सोच सयानी ॥
धन लेखें जनु परलै आई । यह परलै केहि दिसतें धाई ॥
काहें यह परलै परगटे । आर द्वाप बरम्हा के छटे ॥
की बिरच को एक दिन बीता । सोयेउ मै परलै की रीता ॥
नहि निसरे वै हुइ बरियारा । जाकर अवध लिखा करतारा ॥

बीचहिं देखहु परलै, धरती भगेउ अस्पिष्ट ।
की मन मोर फिरा है, उलटि बिलोकन दिष्ट ॥४५॥

सुवा बुझवै बूझहु रानी । जीवन हार न बूड़े पानी ॥
करै जो किछु करता कोई । अन्त काज वह सुन्दर होई ॥
भेद छिपा तोहि कारन नाहीं । सो जानहि हम जानहि नाहीं॥

मानी एक एक बालक मारा । औ एक नाव जलधि मो फारा॥
साथी ताकर भेद न जाना । भेद रहा तेहि बीच छिपाना ॥
धर धीरज मन भीतरें, होइ जियत वह होइ ।
जो मति सो छूछा अहै, छाडै धीरज सोई ॥४६॥
मालति कहा देउ तुम बोधू । मोहि पहरा पर आवत क्रोधू ॥
कहा करत पहरा कछु नाहीं । वह करता नाही जग माहीं ॥
जेई पहरा को करता जाना । सो मूरख जग बीच भुलाना ॥
सो करता जो सब पर बली । दीन्ह मनुष को काया भली ॥
वह पूरब सो सूर निमारै । को पच्छुम सो आनै पारै ॥
कोप न करु पहरा पर, धरु धीरज मन माह ।
देखु जगत मो करता, कस विस्तारा छाह ॥४७॥
धीरज बात कहत है। सुआ । मोहि वियोग सो आसु चुआ ॥
अब अस करहु बहोरह ताही । मन औ ध्यान बीच को आही॥
कहा बहोरन हारा सोई । जेहि आज्ञा जीवै सब कोई ॥
पै तोहि लाग फेर उहि जाऊ । हेरो बन परबत सब ठाऊ ॥
जियत होई तो हेरि निमारउ । ना तो बैठ रहउ चुप मारउं ॥
जियतमिलतहै एकदिन, मुवा मिलत है नाहिं ।
मानुप मुवा मिलै तब, जब निर्मल होइ जाहि ॥४८॥
छुहा नाव लै उड़ा परेवा । हेरा इहर अडा वह सेवा ॥
मधुकर वहि तट ऊपर भयेऊ। चलि सैरगपूर मो गयेऊ ॥
हेरत ताको सुवा सरेखा । तेहि सैरगपूर रूह देखा ॥
रोये ऐसे दोऊ दुख भरे । तेन रोवत कुज के दिल झरे ॥
जो दल झरै अलख तेहि जानै। दूसर पत्र विछै मह आनै ॥
रोये मधुकर औ सुवा, बहुत मानि मन हान ।
साथी कारन भा बेकल, मधुकर निर्प सयान ॥४९॥

सुवा भयेउ अगुआ औ चला । पाछैं चला बिरह कर जला ॥
मगु मो मिला पेम बनजारा । और लोग जो रहा पियारा ॥
पेम नगर मो मधुकर गयेऊ । जनु तप साधि सरग मो भयेऊ॥
है तेहि नित बैकुंठ सवारा । जो भल काज कीन्ह मद जारा॥
पहिरै कनक कड़ा औ बागा । बोटगैं पाट उपर मनि लागा ॥

मालनि फुलवारी रही, रहेउ सनेही नाउं ।
सुवा कहा मधुकर सो, लेहु इहा तुक ठाउं ॥५०॥

मधुकर लीन्ह बास फुलवारी । सूआ आप गवा जह प्यारी ॥
पूछा धन कहु कुसल पियारे । देखि जुड़ाने नैन हमारे ॥
कहा कुसल जब कुसल तुम्हारी। नीको भाग तेहारो बारी ॥
मधुकर राजा को मैं आना । फुलवारी मो दीन्हेउ थाना ॥
है दरसन का भूखा राजा । अब तेहि दरस देखाउब छाजा॥

तुम मालती वह मधुकर, दोऊ एक सँजोग ।
रहसे देखी निर्प को, प्रेम नगर के लोग ॥५१॥

दरस देखावै कह तुम कहा । मोहि वहि दरसन पर चित रहा॥
दरसन जोग कियेउ वह काजू । राजा रहा तजा सब राजू ॥
जो दरसन दाता को चाहै । काज करै भल मत्त निबाहै ॥
औ करता की सेवा माही । दूसर माझे मेरवै नाही ॥
यह सुमिरेउ है एकहि मोही । छाजत दरस देवाहु वोही ॥

पै अबहीं नहीं उचित, परगट देउं देखाय ।
देखै मेरो छाया, ऐसो करहु उपाय ॥५२॥

कहा बात भाषा तुम भली । अबहीं लाज लिहैं रहु लली ॥
है फुलवारी बीच अटारी । जाइ अटारी चढ़िये प्यारी ॥
मधुकर हाथ देउ मैं दरपन । छाया डारि देखावहु दरसन ॥

तै परगट तेहि लखु बरयसी । वह देखै तोहि ससि की ससी॥
परगट दरसन को दिन औरै । है प्यारी केतौ दिर्ग दवरे ॥
इहइ उपाय भलो है, यह दिन देहु बिताइ ।
भोर होइ जब दूसर, दरसन दीजे जाइ ॥५३॥

दुसरे देवस मालती प्यारी । सखियन सँग आई फुलवारी ॥
चढिल अटारी सखियन साथा । दुइज चन्द सोहा वह माथा ॥
आप दुच्छ वह सुवा सयाना । अटा तरैं मधुकर कह आना ॥
दरपन दीन्ह हाथ मह लीन्हा । मालति बदन भरोखेह कीना ॥
भाका दरपन मो परछाही । परी बदन की बिछुरी नाहीं ॥
देखि बदन की छाया, मधुकर भये अचेत ।
मालति कली भंवर लखि, थिकसि रही सकेत ॥५४॥

जब सचेत भा मधुकर ज्ञानी । मन्दिर गइ तब मालति रानी ॥
दरसन दैकै गइल पियारी । तेहि दोहाग भई अधिकारी ॥
मीलन लाग दोऊ दुख माही । परी हाथ सुख एकौ नाहीं ॥
सुवा सदेस दोऊ कर आनै । दोऊ सग सनेह बखानै ॥
कबहुव पाती कबहुव बार्त । आनै सुवा चतुर दिन राते ॥
प्रेम विरह बैराग मो, बहुत मास गा बीत ।
कबहू दुख कबहू सुख, कठिन प्रेम की रीति ॥५६॥

रूप जानि मालति बरजोगू । नेवता राज बस के लोगू ॥
रचा सयम्बर ठौर बनाये । राजकुमार देस के आये ॥
एक एक सुन्दर राज कुमारा । कोऊ रवि कोऊ ससि तारा ॥
मधुकर बिनु नेवतेगा तहा । रहे राज बसी सब जहा ॥
मधुकर रूप देखि सब लोभा । सोभा तहा सभा की सोभा ॥
मड़ि माला मालति लिहें, आई सभा मँझार ।
बहुत सहेली गोहने, भयेउ सभा उंजियार ॥५७॥

लगी आम सब के मन साथा । यह चचला चढ़ै केहि हाथा ॥
वह चचला चँचला के समा । चहु दिसि फिरी लिहें मनिछमा॥
ताकर ग्रीउ हली वह भाला । ठारेउ जो मातेउ तेहि हाला॥
गये सकल निपं अपने घर को । मालति व्याह गई मधुकर सो॥
दुख सहि के सुख पायन दोऊ । वस सुख तुम्है पियारी होऊ॥

सखी कहानी कहि गई, इन्द्रवती के लाग ।
कल ना परै प्यारी को, बाढ़ै अधिक दोहाग ॥४८॥



[१५] मानिक खण्ड।

दूसरि सखी सो दूसरि लगी । मीठे अधरन भारा अमी ॥
कहा सुनावउ एक कहानी । चेत करन सो सुनिये रानी ॥
जो यह कथा रसाल समझहु । निज वपु करम अवस्था बूझहु॥
परगट बूझैं बूझहु कथा । बूझे गुपुत जाइ घट मथा ॥
लोग भुलाइ रहा परछाही । छाह मूल को देखहिं नाहीं ॥

एक कहानी कहत हैा, सुन प्यारी दै कान ।
रैन बड़ी अती होत है, सो इव जाइ निदान ॥१॥

एक नगर एक राजा रहा । सब तेहि नाम आतमा कहा ॥
रहा सो महीपत करगढ़ बाका । तेहि में रहा सब तेरह नाका॥
नैा नाका नित रहै उघारा । बारह रहै पाच हरकारा ॥
जब लग जागहि तब लग धावे । सब सुध बाहर की लै आवे ॥
है तेहि गढ मो चैाबिस खडा । बारह तिन तिन भीतर पडा ॥

सात लोग कारज के, गढ़ मो राखैं बास ।
रहै आतमा गढ मो, जब लग साती पास ॥२॥

राजा पुन्य धरम बहु कीन्हा । पुत्र एक करता तेहि दीन्हा ॥
मानिक चन्द्र रहा सुन नाऊ । रहा समाइ पिता मन ठाऊ ॥
मानिक सम वह मानिक लोना। ताके रगक वारिय सोना ॥
सुन्दर रूप सलोना प्यारा । बरन रहा जस मीत तुम्हारा ॥
मीत तुम्हार जीउ कै काया । परमातमा प्रेम धरि आया ॥

है सरूप औा कोविद, रानी मीत तोहार ।
सै मानिक मानिक अस, तापर डारउं वार ॥३॥

मानिक भयेउ तरुन जब नीको। जीउ भयेउ राजा के जी को ॥
जब तारुन्य पुत्र सो पावा । राजा मन ब्याहै पर आवा ॥
देउ बिवाह बाम घर आने । बस होइ मानिक सुख माने ॥
बस होइ जग काज सो आवै । जननी जनक सुकुन नित धावै॥
जो पितु मात सुकुत मन धरई । घास काटि पसु सेवा करई ॥

ताके मात पिता कों, मुक्त देइ करतार ।
बस भलो दोऊ जग, जो पावै अपतार ॥४॥

चित्त बसीठहि निर्प हकारा । रहा चित्त को चरन बयारा ॥
भेजा हेरहु ऐसिय रानी । होइ सरूप गुनी औ ग्यानी ॥
जा घर कामिनी सूघर होई । सदा रहै सुख भीतर सोई ॥
जा घर कामिनी सूघर नाहीं । है तेहि नरक यही जग माहीं॥
दुइ औ तीन बार तिय कीजै । जोह हेराहु तो एकै लीजै ॥

रद बतीस दाडिम समा, लोचन पकज मान।
जेहि कामिन के पाइये, करहु होइ दुख प्रान ॥५॥

भरत जोभ मिर्ग से दिर्ग जाको। बोद्र छीन औ गज गत ताको॥
सो जा घर आवै सुख देई । पिय को जीउ हाथ कै लेई ॥
बाम कपोल मसा जेहि होई । सुखी सोहागिन नारि सोई ॥

स्याम ममा याए कुच जाको । बिछुरै अन्त प्रेम नहि ताको ॥
सरवन जध अधर कुच माही । रोम होइ तो सुन्दर नाही ॥
भोंह दुइज के चाद सम, लघु अंगुली सम नाक।
प्रीत बहुत तेहि कंत सो, सुख सम्पत को आक ॥६॥

चित्त बसीठ फिरा बहु देसू । मिलिउ न रानी सुन्दर भेसू ॥
निर्मल पूर नगर एक सूझा । चित्त अमल होइ निर्मल बूझा ॥
चित वोही पत्तन दिस चला । वह दिसि होत भयेउ निर्मला॥
निर्मल बहुत नगर वह देखा । देखत रीझा चित्त मरेखा ॥
रहसि नगर के भीतर आयेउ । धरम की रीत चहू दिस पायेउ॥
पन्थ गली सब निर्मलै, सुखी बली सब लोग ।
रोग वियोग न देखा, मिला भोग संजोग ॥७॥

चित्त एक उपबन मो गयेऊ । पाय रुचिर आनन्दित भयेऊ ॥
फुलवारी मो चित्त सरेखा । मन्दिर एक काच को देखा ॥
बीच स्याम रग तिलभर सोहा । ता लखि चित्त चित्त को मोहा॥
स्याम रग सुन है मत माहा । करै सेत रग प्रेमी नाहा ॥
जा दिन प्रेम सु पूरन होई । होइ स्याम सो उज्जल सोई ॥
भये अमल मन्दिर सों, दिष्टयार के पार ।
मानुष एक न देखा, निर्मल सदन मझार ॥८॥

चित्त भेद मालिन सो लीन्हा । मालिन सकल भेद तेहि दीन्हा॥
यह मदिर औ यह फुलवारी । है हीरा को जो निर्प बारी ॥
है हीरा हीरा जग माही । हियरा हेरा यस कोऊ नहीं ॥
सुरतिय प्रीत सुभाव असीसैं । तासु चरन रमनी के सीसैं ॥
सुन्दरता पुर हत अधियारा । तेहि मयोप सो भा उजियारा॥
है मन्दिर फुलवारी, वह मालती समान ।
अलिन गयेउ तेहि आलै, है जग झाया प्रान ॥९॥

चित्त गयेउ निर्मल पति पासा। मन मो राखि मनोरथ आसा॥
कहा सँदेस आतमा केरा । निर्मलेस माना नहि फेरा ॥
कहा महा पति है आतमा । हम वह हैं दुइ नीरध समा ॥
दुइ दधि मिलही प्रीत बेवहारा। एक देह दूसर जिउ प्यारा ॥
बीच रहै अन्तर पट परा । बढ़ै न एक सिन्धु निभेरा ॥

दोऊ दधि सों नीसरै, मुंगा गुलिक अनूप ।
सुख दर्शन निरखावै, मिले रहै जो भूप ॥१०॥

जब निर्मल पति बातहि माना। हीरा जोगें मानिक जाना ॥
आदर बहुत चित्त को कीन्हा । दान दुकल नग मानिक कीन्ह॥
सूधी चाल चला चित ज्ञानी । भा न गरब गति सो अभिमानी॥
चलु न गरब सो महि पर प्यारे। पार न तोहि महि डारस फारे॥
नाव रचनसो धरती भारसि । औ परबतलग पहुंचि न पारसि॥

फेर न बदन गरब सें, चलु न लेहि अभिमान।
मुख औ चरन एक दिन, छार होहिं तन प्रान ॥११॥

अपने नगर चित्त जब आयेउ । बात आतमा नाथ जनायेउ ॥
सुनि राजा केर मन हरयाना । बहुत अनन्द जीउ मो माना ॥
यह जग परमद छाजत नाहीं । सीस परत बिसमै परछाहीं ॥
बहुतै स्रम औ कष्ट मझारा । मानुष जन्म कीन्ह करतारा ॥
जेहि नित लेखा एक दिन होई। कहा अनन्द मनावै सोई ॥

मात ओद्र मों रक्त को, जाके भयउ अहार ।
ताको जग मो रक्त है, जेवन नित निस बार ॥१२॥

ब्याह कि रीत रचा जब राजा । मचै बियाह को बाजत बाजा॥
चित्त फेर निर्मलपुर गयेऊ । निर्मल पति के आगे भयेऊ ॥
चाह बियाह करै कर दीन्हा । बात मानि निर्मल पति लीन्हा॥

मास एक कै लगन धरावा　। देस नगर मो नेवत पठावा ॥
काज आज को प्रात न राखा　। हेरा सकल मूल को साखा ॥

जो कारज है आदि को, प्रात न राखहु ताहि ।
समय लूट बूझत है, महा ज्ञान है जाहि ॥१३॥

ब्य हुक चाह सुना जब हीरा　। औ वर मानिक पुहुप मरीरा ॥
अधान हमो मान से आई　। सोही नाग लना ललनाई ॥
जो कन्या बुधवन्ती होई　। सुनि बर नाऊ हँसै जो सोई ॥
की चुप रहै कि आसू ढारै　। उत्र न होइ न सबद निसारै ॥
निश्चै बर तेहि हियँ समाना　। विद्य'जन यह अज्ञा जाना ॥

जो बारी है भोरिहि, औ विवेक मति नाहिं ।
जानु पिता मुख सोहै, जहा देहि तह जाहि ॥१४॥

हीरा हँसत हँसे सब हीरा　। हरा सखिन के उर को पीरा ॥
पूछा सखिन हँसी तुम प्यारी　। काहें कहो जाहि बलिहारी ॥
तेरो मन्द हास मन हरा　। मानहु हँसय फूल खसि परा ॥
है मुसुकान मनोरम रानी　। मुसुकानी जो रही सयानी ॥
तुम मुसुकाइ हँसी केहि कारन । है मन नगरै बीच कि आरन ॥

कहा बात कछु नाहीं, आइ बसी मन माह ।
ऐसें आज हँसी मैं, धरा हसी तुम छांह ॥१५॥

बोली सखी हँसी तब आवै　। जब दरसन अचरज देखावै ॥
मनुज हमी कपि हँसी न होई　। जब कुछ होइ हँसी तब कोई ॥
हँसी हमें किछु मरम बतावा　। जिमि मसि सबद चद प्रगटावा ॥
औ जस धुआ नीसरै जहा　। पावक देह बतावइ तहा ॥
औ जैसो उह उहके बोला　। मरम सो बच्छ पीर को खोला ॥

तैसै हँसो तुम्हारि, कहा अहै किछु बात ।
चचल चाल नसा की, जस मारग जरतात ॥१६॥

लाल अधर सो हीरा रानी । झारा गुलि कहियें रहसानी ॥
सुनि के व्याह औ बर को नाऊ। यह नित हसित सखी यह ठाऊ॥
मैं हीरा वह मानिक अहई । मनि को गुन मनिके सँग लहई ॥
सुनि वियाह बर मैं अनदानी । पै एक चिन्ता हियें समानी ॥
है मानिक गुन के बतसाऊ । की मानिक है ऐसहि नाउ ॥

बहुत विछे मों होत फल, देखत लागै नीक ॥
पै रसना के साधें, होइ तीन की फोक ॥१७॥

बोलो निर्मलपुर की नारी । सत्त बचन भाषा तुम प्यारी ॥
जेहि प्रकीत भलो है नाही । मनुज नही है पसु जग माही॥
का परगट के भयें सलोना । जो निसर्ग को खोटा सोना ॥
तेलिया फद स्याम रँग होई । रूप करत ताबा कहं सोई ॥
अगिन जोति धारी जेहि भेटा। छार कीन्ह तेहि को प्रम भेटा॥

पवन सयाना चातुरो, द्वार पाल है तोर ॥
हम सब तेहि भेजत है, वोहि मानिक के वोर ॥१८॥

सखिन पवन कह भेजा तहा । बास रहा मानिक को जहा ॥
तहा अनन्द बीच आतमा । भा सब लोगन के जिउ ममा ॥
रागो रँग मो मानिक भूला । राग अहै परमद को मूला ॥
नाद पाय काया जिउ आया । वेद नाद पाछे तन पाया ॥
आदि नाद सो यह जगमाहीं । सकल सबद मैं छूंछा नाही ॥

नाद अनाहद अंहद, सुनै अनाहद कौन ॥
सिद्ध होइ अपने गन, सुनै अनाहद तौन ॥१९॥

है खटराग छतीस रागिनी । औ सँग पुत्र पुत्रभामिनी ॥
प्रथम राग भैरो की जानहु । मालकौस दूसर पहिचानहु ॥
पुन हिंडोल औ दीपक गहई । श्री राग धरती को कहई ॥

पहम राग मलार कहावै । पुत्र भारजा कौन गनावै ॥
निर्त छनबे अहै पियारी । त्रीमठ अलकार छवि धारी ॥
ताल एक सै साठ है, सात भांत सुरजान ॥
तीन लाख सत्रह सहस, नौ सै तीस मतान ॥२०॥

मानिक परा राग रँग माही । चिन्ता रही कुछौ तेहि नाही॥
एक रात जासो सुख होई । सोवत रहा अजिर मो सोई ॥
राकस दिष्ट परा वह प्यारा । लै राकस मायापुर डारा ॥
मायापूर नगर अति बाका । सहस गली औ समुदै नाका ॥
माया मों मायापुर बासी । का गृही औ का सन्यासी ॥
हीरा मानिक मोती, रूपा कनक करोर ॥
पै आगम धन आगें, मायापुर धन थोर ॥२१॥

जब मानिकहि असुर बरियारा। मायापूर नगर लै डारा ॥
डारा एक फुलवारी माही । लागेउ चोट देह मो नाही ॥
जागा मानिक अचरज नाना । कहा मोर मन्दिर अस्थाना ॥
अम्बर वही मीम उपराही । पाव तरे धरती वह नाही ॥
अबही ना वह दिन वह घरी । होइ रवा वह दूसर जबही ॥
रहेउं कहा मैं सोवत, इहां परेउँ केहि भात ॥
परउ पराये देस मों, नियरें पिता न मात ॥२२॥

कहा सदन वह आगन कहा । सोअत रहेउँ लिहे सुख जहा ॥
मैं भुलाइ केहि सचर लागेउ । अनुज पिता माता से भागेउँ ॥
वह दिन अबही नाही आयेउ। जेहि दिन कहँ करतार जनायेउ॥
अस दुख सकट पाछें लागै । अनुज मात पितु सो नर भ गै ॥
अपने ऊपर सब अरुझाही । सुधि काहू को रासहि नाही ॥
को मोहि इहा पँवारा, को रिपु रहा कठोर ॥
निस अधियार अकेला, पशु डारो केहि बोर ॥२३॥

सोवत मानिक रैन बितावा । प्रातहि सुन्दर बारी पावा ॥
अति सुन्दर फुलवारी देखा । रहा लोभाय भँवर के लेखा ॥
रमा नाउ राजा की बारी । रहिल रही ताकी फुलवारी ॥
महा सरूप रही वह रानी । काया कचन बारह बानी ॥
वह ससि समा रमा आतमा । मानहु रही रमा की रमा ॥

रमा रमाए सो रमा, रमा किंकिरी होइ ॥
सेवा ता कहं रात दिन, मन सो ममता धोइ ॥२४॥

मानिक चन्द प्रात जब पायेउ । फुलवारी मो मालिन आयेउ ॥
मालिन जब मानिक कह देखा । रीझि रहा तेहि प्रान सरेखा ॥
पूछा मालिन को तुम होहू । ललित अधर अँचवा तुम लोहू ॥
नियन सरीर रकत बउमाऊ । है जिउ समा कलेजर ठाऊँ ॥
मन मोचन लोचन कजरारे । मतवारे रद छद रतनारे ॥

कवन भेस तुम आये, यह फुलवारी मांह ॥
सुर कि असुर की मानुप, ससिर वितेरो छांह ॥२५॥

सुनिमानिकमानिक कह खोला । ससि गोती सम भावित बोला ॥
तुम हत्या काहें मोहि लावा । मैं न हनत हो जीउ परावा ॥
दोप बिना मारै जो काहू । मारे चाहे तेहि नित ताहू ॥
मारनहारेहि मारा चाही । यामो जीवन सबको आही ॥
तुम का लोचन अधर बखाना । तोहि बखानु जो तहा समाना ॥

हों मानुप सुर असुर नहिं, मानिक मेरो नाउँ ॥
नहि जानहु केउँ डारा, यह फुलवारी ठाउँ ॥२६॥

नगर हमार आतमा पूरू । मन सन रहेउँ तहा गुन मूरू ॥
हो मै बुद्ध ज्ञान का चेरा । तनुज आतमा राजा केरा ॥
जब ज्ञानी मन काया माही । तब मैं रहा रहा जड नाही ॥

मन सो जसा मागा चाही । तन मो मन मन्नी भल आही॥
मन सवरे सवरे सब काया । मन खोटे खोटे सब पाया ॥
मैं विसमादी देस नित, फेरि मारग होइ जाउँ॥
को राजा यह नगर मो, को रानी यह गाउँ ॥२७॥
मालिन कहा गगन है राजा। जाकर इका जग मो बाजा ॥
है विसमती धाम तेहि केरी। विष्णु बल्लभा जाको चेरी ॥
रमा अहै राजा कर वारी। जाकर यह सुन्दर फुलवारी ॥
है अबही वह बिना बिआही। है सुन्दर जैसो किछु चाही ॥
सब चाहत दरसन तेहि केरा। मानउती भवसो मुख फेरा ॥
घरी घरी पल पल रमा, सोभावन्ती होत ॥
मानभरी सिर पाव सो, उद्दित मुख को जोत॥२८॥
जेवर रमा कलेवर माही । छबि पायेउ छबि नेवर नाहीं॥
अब तुम हियें उदास न हूजे। तेरो सकल कामना पूजे ॥
बार बीरहस्पत जा दिन परई। राजा गगन सयम्बर करई ॥
आवैं ता दिन राजकुमारे । ता नित सोभा सभा सँवारे ॥
तुमहू रंगभुम्मि मह जायेहु । दूसर ठाउँ बिलम्ब न लायेहु॥
रहियो फुलवारी मो, रमा पास मैं जाय ॥
तुम सो औ प्यारी सों, परचै देउँ कराय ॥२९॥
सुनि मानिक हर्षित भा हीयें। थिरा तहा आसा मन लीये ॥
मालिन जाइ रमा सो कहा। रमा हिर्दे नीरज होइ रहा ॥
कहा देखाउ रूप तेहि केरा। सुनत भयेउ चेरा मन मेरा ॥
है कैसो वह तरुन नवीना । रूपवन्त है अहै कुलीना ॥
कहा सखिन सँग लीजे हारा। उपवन जाइ देखु वह प्यारा ॥
हो प्यारी वारी गयें, देखि परै वह रूप ॥
रूप भूप के सुत को, है अनूप रवि धूप ॥३०॥

रमा वेग सब सखी हँकारा । कमल चरन उपवन दिस ढारा ॥
फुलवारी मो सब मिलि आईं । सुन्दर राय सुनी की नाईं ॥
रमा रूप मानिक जब देखा । भावा उर यह कुअर सरेखा ॥
मानिक मुख देखा जब रमा । भइ ससि नेह चकोरी समा ॥
दिष्टवान मैं ताकर चीन्हा । आद मनुष सो जेइ छल कीन्हा॥

नयन नयन के लागें, महा उपद्रो होई ॥
औंधे नैन सों राखै, ज्ञान भरा जो कोइ ॥३१॥

रमा सखिन सो कहा बुझाई । ता कुल बुध यह विध प्रगटाई ॥
का जो सुना निर्प सुत अहई । निर्प तनुज अपने मुख कहई ॥
पूछहु प्रथम देस औ गाऊँ । तेहि पाछे पूछहु कुल नाऊँ ॥
राज काज पुनि पूछा चाहो । निर्प को यही कसौटी आही ॥
पूछेन कवन नगर सो लला । केहि कुल अम्बर रवि निर्मला॥

मानिक उतर निसारा, नगर आतमा पूर ॥
तनुज आतमा राय को, सोम वस कुल सूर ॥३२॥

जग महँ मानिक नाउँ कहावा । अपने सुद्ध इहा नहि आवा ॥
आगन बीच रहा मैं सोवा । सोवा सुवा एक सुख खोवा ॥
कहा रहा अगुवा जो कोई । सोइब अनुज मित्र को होई ॥
गुरू एक चेला सो पूछा । यह निस सोइ भएसिसु छूछा ॥
सपन कीन्ह सुध सोइन सोयेउँ। जबसो मित्र मिला नहि सोयेउँ॥

सोवत रेहउँ अजिर मों, इहां परेउँ अब आइ॥
ना जानउँ सुर की असुर, डारा इहां उठाइ ॥३३॥

कहा तुम्है जो सम्पत राजू । देहु सुनाय राज को काजू ॥
चाहो कवन काज राजा को । जासो राज रहै थिर ताको ॥
कहा धरम को रीत सँचारै । ना अधरम सो देस उजारै ॥

अल्ला सिर्जनहार पठावा । धरम करै की वात जनावा ॥
औ यह वात वेद मो आई । करै समीपी सग भलाई ॥
राजा है चरवाहा, जाहि चरावत होइ ॥
तेहि दिन करै जो दाया, सरग न पावे सोइ ॥३४॥
निर्प अधर्मी लेखा के दिन , । आवै रहै सहायक जन विन ॥
बाँधा जाइ नरक कुड माही । तहा मरीच अँजोरा नाहीं ॥
राजा सो जो इच्छा करई । छोट बडे पर दाया धरई ॥
चरवाहे कहँ सत्रु न आनहि । डरिकैं धनुक छुरी प्रनतानहि ॥
होइ अवरप ना बेच अगूठी । दस्त करे घर आनहि मूठी ॥
रहै अहेरैं मास नित, अनुचर ग्रामी पास ॥
लोन मोल आनै कछू, भेजै हरै न आस ॥३५॥
उचित नहीं अधरम चित लावै। मानुप गूदा नित्त कढावै ॥
ओाषद हेत मनुप मरवावत । तेहि देइ छाड मया मन आवत॥
निडर रहै नहि जीव के पाये । करता त्रास रहै चित लाये ॥
डाह न करै डाह भल नाही । मन कहँ डाह करै दुख माही ॥
जैसे पावक काठी खाई । भच्छत तैसे डाह भलाई ॥
बड़ा न करै कुमानुषी, राखै अधरम रीत ॥
मानहु काटत आपुहीं, जाहि स्वान सो प्रीत ॥३६॥
तासो मिलै एक जो अहई । दरपन दरपन महिमा लहई ॥
काटा सग रहै पै काटा । पुहुप पुहुप रस चाहै बाटा ॥
सत्रुहि सत्रू सग भिडावै । भेडा भेडा माथ लडावै ॥
औ अँकोर पर चित्त न देई । होइकै निर्प अँकोर न लेई ॥
जो अँकोर दीन्हा जो खाया । तिन्ह सो दूर अलख की दाया ॥
लूट मिलै रिपु मारें, लूटहि देइ लुटाइ ॥
गुपुत देइ बहुतन कंह, तामो आप न खाइ ॥३७॥

ज्ञानी पास पठावै ज्ञानी । औ आगे की पढ़ै कहानी ॥
सकट परे निरास न होई । होइ भाग बल पावै सोई ॥
उन्नत ठौर न ऐसो सोवै । सुनै न सबद दुखी जो रोवै ॥
लेइ चतुर लोगन की मता । करै धरम बाढै जस लता ॥
मगु चढि मगु सुध लेइ अगाऊ । आगे पन्थ होइ कस ठाऊँ ॥

धरती काज सँवारै, नभ दिस करै न चाव ॥
ना तो ऊचे सों गिरै, खाय हृदन को घाव ॥३८॥

अकसर आपन उद्र न भरई । सात पाच सँग जेवन करई ॥
सेवा अनुज की करै न मूयें । अनुज अनुज कहँ डारा कुयें ॥
जो जैसो तेहि तैसे राखै । दया बचन सकल सँग भाखै ॥
बूद बूद सागर सो लेई । दन्त समै वारिद सम देई ॥
कोमल कहि वस करै कठोरा । हीरा कहँ रागा पै तोरा ॥

धरम मूल है राज को, अधरम किहें नसाय ।
कठिन राज को काज है, दिहेउँ मनाक सुनाय॥३९॥

रमा रमा सखियन पहिचाना । निर्पै सुवन मानिक कहँ जाना॥
किहेन प्रतिष्टा आदर सेवा । राखेन दुग्ध खाँड औ मेवा ॥
कहेन दया करि जेवन कीजै । ससै कहँ मन पन्थ न दीजै ॥
हम सब चेरी तेरी प्यारे । तोहि नित भेजहि सेवन हारे ॥
फुलवारी मो कीजे बासा । असुर भेज देहि ते हि पासा ॥

यह फुलवारी सुन्दर, है जैसैं कविलास ।
बास करहु आवत है, दास मनोरम पास ॥४०॥

मानिक धरा रमा बस नाहीं । बात सखिन की फेरा नाहीं ॥
दै कै बोध मँदिर सब आई । मोहन रहिन सखी जहँ ताई ॥
मोती मूगा ऐसे दासे । भेजेन रहैं कुवर के पासैं ॥

औ अंसुक जिमि फूल सलोना । भेआ तेहि लागे मनि सोना ॥
पहिरा बाधा धागा पागा । लागा भला भाग तेहि जागा ॥
रमा बसी मानिक मन, मानिक रंमा प्रान ।
बार विरहस्पत आयेऊ, आए कुंवर सुजान ॥४१॥
रनभूमी सो मानिक गयेऊ । रमा हार लै परगट भयेऊ ॥
फिरी हार मानिक गल डारा । मानिक बदन भयेउ उजियारा ॥
सब निरास होइ कै घर गयेऊ । रमा व्याह मानिक सँग भयेऊ ॥
मानिक रमा भये एक ठाऊ । तैं न दुखी मन हो बलि जाऊ ॥
मायापुरी लोगु जोहरावा । सकल राज को कुञ्जी पावा ॥
बहुत किंकिरी किंकर, पायेउ मानिकचंद ।
अरुझि रहा मायापुर, भै धन औ धन फंद ॥४२॥
उहा पिता मन सोग समाना । जब सो मानिक चन्द्र हेराना ॥
बहु दिस लोग पठावा हेरे । को हिल होइ मानिकहि फेरै ॥
पिता आतमा इन्द्री माता । रोवहि होइ प्रान नही साता ॥
कै वैरी मन मानिक हरा । हम सिर अलि बिसमौ को परा ॥
वह मानिक नित हीरा हेरा । हरि को लेगा मानिक मेरा ॥
लोग हेरिकै हारा, मिला न मानिकचंद ।
विस्मित होइ के त्यागा, माता पिता अनंद ॥४३॥
पवन गवन निर्मलपुर कीन्हा । बात सखिन सो सब कहि दीन्हा ॥
मानिक सूपर कुवर सयाना । है वै सोवत रैन हेराना ॥
बहु दिस लोग हेरि कै हारा । केहि धरती गा मानिक प्यारा ॥
जैसो चाही भूपति बेटा । तैसो मानिकरूप लपेटा ॥
माता पिता नगर के लोगू । मानिक लगा भरे दुख सोगू ॥
राय आतमा भा दुखी, तजा अनन्द हुलास ।
गगन छिपायेउ मानि कै, होइ निर्दै की न्यास ॥४४॥

सुनि यह बात सखी पछतानीं। सब परसून मना मुरझानी ॥
हीरा के मन उपनेउ पीरा। परगट सोच न माना हीरा ॥
मान भरी जैसें घन रही। वैसें रही सो धीरज गही ॥
सखिन गुपुत कै पीरा चीन्हा। दीन्हा बोध सभापन कीन्हा ॥
पवन जाइ निर्मल पति नियरें। कहा महीप दुखी भा हियरें ॥

भयेउ चिन्त त्रिमलेस मन, कहा पवन सों राय।
जाहु आतमा पूर कहं, मानिक हेरहु जाय ॥४५॥

सबै वियाह की रीत उठायेउ। पवनहि हेरै लाग पठायेउ ॥
सखिन चित्र हीरा कर दीना। लैकै पवन गवन तब कीन्हा ॥
वेग आतमापुर मो आयेउ। विस्मित सकल लोग कहपायेउ॥
राजा आगें नायेउ माथा। चित्र दीन्ह राजा के हाथा ॥
कहा सम्हार धरहु यह राजा। थाति जोग इव तुम कह छाजा॥

थाती भार उठायेउ, यह निर्बल मानुक्ख।
लै न सके महि अम्बर, समुझि भार को दुक्ख॥४६॥

जो थाती काहू सो नावै। आपुहि आप न ताही ग्रावै ॥
जो थाती थाती ले धरई। नासै उतर ताहि को करई ॥
जो थाती दूसर घर माहीं। हर सो हारा कर तेहि नाहीं ॥
अपने दरब बीच को मेवै। थाती मिलि कै फेर न नेरै ॥
थाती देन ताहि पै छाजा। थाती कठिन वस्तु है राजा ॥

दुइ मानुष थाती धरें, मागै आवै एक।
दुसरे बिना न दीजिये, जो तोहि बुद्धि विवेक ॥४७॥

है। मै पवन पवन पग मोरा। पवन समान फिरउ चहु वोरा॥
मानिक खोज लाग अब जासू। हेरो बन परवत सब ठासू ॥
ना वह गन्धक तामर होई। है उज्जल औ लाल न सोई ॥

जियत होइ तौ हेरि निसारउ । तन मन वह मानिक परवारउ॥
है जग सकल पवन सो भरा । कहू नहीं छूछा है परा ॥
मानुष एक नगर का, साथो चाही मोहि ।
वन समुद्र औ परवत, हेरि निसारउँ वोहि ॥४८॥
राजै साथ चित्त कह दीन्हा । दोऊ गवन एक दिस कीन्हा ॥
पहिले साथी तब मगु नीको । साथी नीको है हित जी को ॥
नगर बीच सब के मन सोगू । सोग समुद्र परा सब लोगू ॥
सब दुख बीच परा सुख भागा । मनु रवि गहन विर्छ मो लागा॥
यह सुनि कै इन्द्रावति कहा । गहन विचार सखी अस अहा॥
कहिले सखी पियारी, रवि ससि गहन विचार।
फेर कहानी भाषेउ, चाहा जीउ हमार ॥४९॥
कहा मेष के बीच पियारी । जो रवि गहन होइ अधियारा॥
अगिन टरै पसु मरै बहूती । घटै सुफल अनपढे अकूता ॥
बाढै विग्रह मानुष माहीं । मोलन प्रीत रहै कछु नाहीं ॥
जो ससि गहन मेष मो होई । दुख के फाँद परै सब कोई ॥
सिंहासन पति जीत न पावै । ता पर जो रिपुला चर आवै ॥
जो रवि गहन पियारी, होइ विर्ष धेन के पास।
बहुतै तसकर प्रगटैं, विर्छ धेन को नास ॥५०॥
थोर होइ फल पसु सहसाही । बाढै ससै मारग माही ॥
चन्द्र गहन ब्रिग्रह प्रगटावै । दुख वेयाध रमनि पर धावै ॥
पसु पर आवै मीचु क धारा । विर्ष औ धेनु मरैं अधिकारा ॥
रवि को गहन मिथुन मो प्यारी। उद्दम घटी होइ अधिकारी ॥
निर्बल लेखक औ बनिजारे । होहि औार जो लीखन हारे ॥
ससि को गहन मिथुन मों, मीचु औार दुख होइ।
स्त्रोनित बहै चहूं दिस, दास न पावै कोइ ॥५१॥

जो रवि गहन कर्क मो होई । दुख मकट देरी सब कोई ॥
अरु जो प्रगटै मन उपराहीं । हूँ नाय लाद पति माहीं ॥
राक लोग अधि काई मरई । विठं नमाहि नाम मो परई ॥
कर्क बीच ससि राहु गरासै । छत्रपति घटै बिठं फल नासै ॥
मरै बहू नग मिनी पियारी । विग्रह करैं आप मर मारी ॥

सिंह बीच रवि को गहन, सिंहासन पति नास ।
दुख को पवन झकोरै, गहन सिंह के पास ॥५२॥

दुह को भल न अवस्था होई । गरभ समेत नार जो कोई ॥
मनुष अधेर दूसरो जानो । विग्रह राजन मो पहिचानो ॥
औ ससि गहन चोर जल झरई । पाला जाड़ा बहुते परई ॥
सतुराई लोगन मो होई । दुख देहें गुरजन जो कोई ॥
नम पर अरु परगटे पियारी । घटै नदी जल राज दुलारी ॥

सुर्ज गहन कन्या मों, कन्या मरै बहुत ।
नासै फल थो होंइ दुख, गुरुजन पर थंकृन ॥५३॥

ससि को गहन त्रीन उपजावै । खेती लावै खेत बढ़ावै ॥
नद्दर पीर बहुते सतुराई । जल औ महि नित प्रगटै आई ॥
सबै अबत नीन पर होई । विद्या को रुचि करै न कोई ॥
बाहुत बिठं लगावै केरी । सब मन होइ सुगए जित मेरी ॥
तुला बीच रवि गहन सुभाऊ । सब मन देइ राग को घाऊ ॥

उमडै कटक जगत मो, बहै झकोरा बाउ ।
दुख भुंइचाल प्रगटै, यह विचार मोंहि आउ ॥५४॥

जो ससि गहन तुला मो आवै । तरिवर फल औ खेत नसावै ॥
बहुते अधरम रीत प्रगटई । विग्रह को धनुष को घटई ॥
रवि को गहन बिठं मो प्यारी । दुख को भार देई सिर भारी ॥

मित्तु बहुत लोगन पर आवै । पसु औ पखी कवन गनावै ॥
नयन अगिन औ मूडहि लागैं । अत बिछै सो दुख सजोगैं ॥
बिछै डंक को ओषद, जो पूछसि तैं मोहिं ।
जल औ लोन मलै कहं, बेग बतावउँ तोहि ॥५५॥
चन्द्रगहन नाचै दुख पीरा । पै मानुष बूडै मझ नीरा ॥
पिय धन बीच होइ सतुराई । दुख बालक ऊपर अधिकाई ॥
कर कटि कन्ध देइ दुख सोई । औ सबै पन्थिक पर होई ॥
मन्दिर बहुत उठावैं लोगू । मन्दिर सुन्दर अपने जोगू ॥
धनु में रवि को गहन विचारी। भाषत हौं तोहि आगे प्यारी॥
मरहिं ऊंट पसु बहुतै, मरहि तरुन अधिकार ।
सिंहासन पति ऊपरा, परै कष्ट को भार ॥५६॥
चन्द्र गहन अति देइ कलेसू । मरि कै लोग होहि सब भेसू ॥
सीत खाइ कै मानुष मरई । भलो अवस्था पसु को करई ॥
काज खेत को भलो सवारै । कष्ट बालकन ऊपर डारै ॥
बहुतै लोग परै बँद माही । बहुतै लोग दास होइ जाहीं ॥
मकर बीच सूरज को गहना । उपजै चोर होइ अनलहना ॥
नासै खेत समुद्र मों, नाव डुबावै सोइ ।
चूक कहेवँ करतार के, अज्ञा सो सब होइ ॥५७॥
गहन चाद को मकर मझारा । सिसु अधिकार उदर सो डारा ॥
मीचु होइ औ बाढैं चोरा । तारा उऔ खटोलन वोरा ॥
रवि को गहन कुम्भ को बासा । मिलन मिलाव गोत सो नासा ॥
अन्न बढावै मित्तु देखावै । पहरा सो कुटिलाई आवै ॥
ससि के गहन कँवल दुख बाढै । लोहू दुरै खरग सब काढै ॥
मरहिं तुरंग घनेरे, पुरुषहिं तिय पर चाव ।
जोर जोर काया मों, पीरा मारै घाव ॥५८॥

जो रवि गहन मीन मो होई । नीर बढ़ावे दधि मो सोई ॥
जलवासी बहुतै मरि जाही । अजा बहुत पसु बाचैं नाहीं ॥
तपन अपार बिज्जु अधिकाई । पसु सहताही खेत नसाई ॥
जाड़ा पाला बहुतै परई । पानी दामिन बहुतै करई ॥
ससि के गहन सिन्धु मो पानी । बाढै बढै मीन हो रानी ॥

बस बडे मानुष कै, फल तरिवर अधिकाहिं ।
सन करता अज्ञा सों, उपजत है जग माहिं ॥५९॥

चित्त औ पवन गवन जब कीन्हा। मानिक हेरै पर चित दीन्हा ॥
चातुर चित्त पवन सो बोला । मानिक मानिक रहा अमोला॥
जो हरि लेगा जो तेहि पावउँ । काटत हाथ बिलम्ब न लावउ॥
चोर मँदिर सो जो कछु लेई । हाथ सो काट एक तब देई ॥
कर काटब तब छाजत अहई । जब दुइ जन की आपुहि कहई॥

मगु मारै के आगें, जो ठग पकरे जाहिं ।
बंद दिहा चाहै उन्हैं, ठगी करहिं फिर नाहिं ॥६०॥

पन्थ मार जो पकरे जाहीं । है अज्ञा महिपत कर माही ॥
चाहै हाथ पाय बिलगावै । चाहै जिव सो मारि लहावै ॥
चाहै जियत देइ रेवाई । फारे उदर दोस नहि लाई ॥
जो फल काठी घास चोराया । तापर कर काटब नहि आवा॥
पाहुन जो कछु लेइ चोराई । कर काटब भल नाही आई ॥

एक कटोरा बस्तु कहँ, लैगा दूसर चोर ।
ताकर हाथ न काटिये, जासों बस्तु बटोर ॥६१॥

चित औ पवन गए मब ठाऊ । हेरा सब परबत बन गाऊ ॥
पवन जहा सँचरै नहि पाया । चित्त अमल तेहि भीतर आवा॥
पै वह पवन जोति सो भरा । मित्त चाह अधिकौ निर्मरा ॥

करता पवन मनुष जेइँ पावा । एक दिस सो सो पन्थ देखावा ॥
रोम रोम है पवन समाना । जा कहँ लोग कहत हैं प्राना॥
पवन संचरा एक दिस, रहेउ न एकौ ठाउँ ।
पै काहू मानुष सो, सुना न मानिक नाउँ ॥६२॥
हेरि पवन चित कहू न पाए । मायापुर के बन महँ आए ॥
उतरे एक बिछे तर दोऊ । बन मो तीसर मिला न कोऊ॥
मानिक आप अहेरैं आवा । बहुत अहेर निर्ग रग पावा ॥
बन ऊसर औ जलध अहेरा । है भल अलख निजोर्ग हेरा ॥
दीरघ नख धारी जो होई । करै न भोजन ताकहँ कोई ॥
निर्मल होत अहेर बहु, जापर करता नाउँ ।
पढिकै मारैं नीसरै, रकत गीउ तन ठाउँ ॥६३॥
मानिक बन बन करत अहेरा । कीन्हा वोहि बिछे दिस फेरा ॥
चित्त पवन को रूप बिलोकें । हरषित भा मुद बाढेंउ वोकें ॥
बोले चित्त पवन दुख रोवत । यह मानिक जागत की सोवत॥
जागत मो मानिक हम देखा । की सोवतहो सपन के लेखा ॥
जब मानिक नियरैं अति आवा। परखि दोऊ आसीस सुनावा ॥
रहै माथ महि नाइकै, लाइ पीठ पर हाथ ।
जैसे मूरत आगे, ब्राह्मन नावै माथ ॥६४॥
जो करता की प्रीत को पावा । तेहि देखत मूरत सिर नावा ॥
जेहि मन भा करता की बोरा । सब छोटे मूरत कहँ तोरा ॥
धरा बडे मूरत के कांधे । चोख कुठार रहा बत बांधे ॥
तेहि नित जो जग करता आही। महि पर माथ लगावा चाही ॥
तेहि तो अपने लाग न भावा । विछे हँकारा फेर पठावा ॥
जो भल होत आन कहँ,तो पिय कारन घाल ।
धजा पावत सुत्र सो, धरै रसा पर भाल ॥६५॥

उतरि तुरै सो मानिक प्यारा । मिला चित्त सो आसुर ढारा ॥
मानिक कमल नयन सो पानी । ढारा भा अभिलाषी ज्ञानी ॥
पूछा कुसल मातु पितु केरी । गोत बन्धु चेरा औ चेरी ॥
चित्त कहा जीयत सब कोई । पै तुम बिनु व्याकुल मन होई ॥
जैसो नगर रहा तस अहा । पै अमन तोहि बिनु होइ रहा ॥

मन हरिगा सब नगर को, परमद रीत न होत ।
कष्ट मँदिर मो वैठे, बन्धु लोग औ गोत ॥६६॥

माता रोइ नयन कहँ खोवा । नदी बहायेउ पितु अस रोवा ॥
सरवन के जस अन्धी अन्धा । छूटि गयेउ सब जग को धन्धा ॥
आज काल्ह दसरथ दुख हाथा । बास राइ चाहत है साथा ॥
मात अधिक बिसमादी भई । अबहीं नैन जोन नहि गई ॥
माता अधिक मयारी होई । होइ असोस देइ जो सोई ॥

जनमे बालक कष्ट सहि, बहुत मयारी होइ ।
ता निदेस मों नित रहै, है सपूत जो कोइ ॥६७॥

अब आपनो अवस्था कहहू । तजि कै देस कहा तुम रहहू ॥
सोवत रैन बीच का परा । तुम निसरे की काहुव हरा ॥
राजा पर बहुतै दुख बीता । धरा उठाइ देस को रीता ॥
है राजा की काया सगरी । मन नाही सूनी है नगरी ॥
है मन पै मन हाथ न ताके । धन सो हाथ बीव मन जाके ॥

आयु आतमा जीउ है, तुम मानिक मन ताहि ।
मन कारन जिउ नीस दिन, उठत कराहि कराहि ॥६८॥

मानिक सकल अवस्था कहा । चित्त अचर्ज बीच होइ रहा ॥
कहा भलो भा तुम सुख पाया । मायापूर हाथ कहँ आया ॥
एक करम तुम भलो न कीन्हा । आपन सुध न पिता कहँ दीन्हा ॥

मात पिता कहँ जो रहमावा । सो वैकुण्ठ मुकुत फल पावा ॥
जासो दुखी मात मन रहा । मरत बार सो बहु दुख सहा ॥

सावित्री के पाय तर, है वैकुंठ अनूप ।
जो सेवै सो पावै, राक होइ की भूप ॥६९॥

मात पिता सँग करहु भलाई । करता की अज्ञा अस आई ॥
जो अपने आगे बिधाही । उन्हें बात वह भाषहु नाहीं ॥
और न कीजे उन्हें निरासू । उन नित मागु सरग सुख बासू ॥
एक बात मो कहा न कीजे । सुनि यह बात चित्त सो लीजे॥
जो तेहि कहै कि जगत मझारा। पूजु बूझू दूसर करतारा ॥

सिर्जनहार एक है, काहू जना न सोइ ।
आपन काहू सो जना, वह समान नहि कोइ ॥७०॥

मानिक कहा परेवँ अस ठाऊ । गा मोहि बिसर आपनो गाऊ॥
काम क्रोध भरमित औ माया । सेवा करै लागि मैं पाया ॥
वै सब मेवा से बस कीन्हा । रानी रमा मोहनी दीन्हा ॥
कबहू समुझि परै जब देखा । गुपुत होउ वैरागिय भेसा ॥
पल एक रहउ फेर फिरि जाऊ। मन से उतरि जाइ वह ठाऊ ॥

माता पिता की प्रीत मोहिं,है मन बीच समान ।
चाह देइ औ लेइ कै, चाहत रहा परान ॥७१॥

पुन मानिक सुख चाद अजोरा। कीन्ह चकोर पवन की ओरा ॥
पूछा निर्मल पुर को छेमू । पाय पवन कह उपजा प्रेमू ॥
कहा पवन निर्मलपुर ठाऊ । कुसल अहै रावर के नाऊ ॥
प्रीत तोहार बसै सब हियरें । तन सो दूर जीउ सो नियरें ॥
पै जब लग तन नियर न होई । कहा अघात मिलन सो कोई ॥

दरसन मिलन न एक है, एक होत जो प्रान ।
नैन काँट के देखें, घायल होत निदान ॥७२॥

मानिक कुसल बात सब पायेउ। दोऊ कहँ द्वारे लै आयेउ ॥
सुन्दर ठाउ बसेरा दीन्हा । बहुत प्रतिष्ठा आदर कीन्हा ॥
जाना सबै देस के मानुष । आए हैं मानिक कहँ भा सुख ॥
पूछहिं चितहु तें सब कोई । केतिक पन्थ बीच मो होई ॥
हम आतमा पूर कर नाऊ । सरवन सुना न देखा ठाऊ ॥

कहा बहुत अनबीच है, दूर आतमापूर ।
रवि समीप जिमि किर्न सों, काया सों है दूर ॥७३॥

बरती रहेउ पन्थ जब लागेउ । बूझेउ कष्ट बर्त कहँ त्यागेउ ॥
बर्त्त तजा चाहै सब कोई । जब मगु लीन देवस कर होई ॥
मैं तो बहुत देवस कर सचर । आयेउ काटि सिन्धु बन भूधर ॥
अब तो रहा चिए सब चाखउ । तैसें फेर बर्त्त कहँ राखउ ॥
बर्तेहु ते मुख जात न फेरा । अहै निजोग अमूरत केरा ॥

बर्त राखि बिनु जाने, जो जल की अनखाइ ।
जानि लगावै तेल जों, इनसों बर्त न जाइ ॥७४॥

रजनी एक प्रीत धै हियरें । गयेउ पवन मानिक के नियरें ॥
आदर सो मानिक बैठावा । चहू ओर की बात चलावा ॥
जब भा करन गुलिक सो छूछा। हीरा की सुघराई पूछा ॥
कैसो गुन कैसो सुघराई । कैसो धन की सुन्दरताई ॥
कहा बहुत गुन है तेहि माहीं । हीरा गुन सो छूछो न ही ॥

सूघर सुन्दर बिमल तन, धिमल सहज है ताहि।
तेहि का पूछै चाहिये, रम्भा चेरी जाहि ॥७५॥

का बखान हीरा कर करऊं । बरनि न पारो जबलग मरऊं॥
चरन सीस नहि सको सराही । चाहिय जैसो तैसो आही ॥
पदुम रूप प्यारी पद परा । अपने काज पाव गहि धरा ॥

धन सो जो पगु गहिके राखै । टारै नाहि सोई फल चाखै ॥
काटै सर्प आइ पगु माही । निसरै जीउ गिरै पै नाहीं ॥
हैां चेरा तेहि चरन को, जेहि ऐसो पगु होइ ।
पन सम्हारि कै राखै, सकै गिराइ न कोइ ॥७६॥
वह रम्भा जरो जस रम्भा । नाहीं जुगम कनक के। खम्भा॥
जब लग वह दिन आवत नाही। जा दिन उरो उरो लपटाही॥
तब लग चित्त चढी वह ऊरो । कचन खम्भ रूप की मूरो ॥
कटि नाही जनु काया धरा । मानहु सुन्न बीच मे परा ॥
दुर्बल है वह प्रेमिय नाही । तेहि नित चिन्ता धन मन माहीं
अलकावर औ कट सों, परा एक दिन बाद ।
कट चाहै अप महिमा, लट आपन मरजाद ॥७७॥
पहिले कट अस लक सो कहा। तेरो सोभा मोहि सो अहा ॥
है। प्रेमी लोगन के। फादू । है। मै निध सुख तेरो चादू ॥
बहुतै तोहि पाछे मैं धाई । सील प्रीत न एको पाई ॥
सुनिके भयेउ लक मन छोभा । टेढहु सीलवन्त कहु कोभा ॥
जद्यपि तै कछु सील सु बाचा । सीस पाव कथा तब साचा ॥
ऊंच नीच जैसो मगु, तैसे तेरो भेस ।
फनी गरलधारी तैं, काटस देस कलेस ॥७८॥
अति क्रिस उदर पियारी पावा । निर्मल बदनै बीच न आवा ॥
माना उदर सो जनमी वारी । भाग भरी सुन्दर सुकुमारी ॥
भागवन्त उदरहि सो होई । जनमै भागवन्त जो कोई ॥
उदर रहै मे। सिसु दूसरा । तेहि नित उदर म सिर महि धरा॥
जेहि अभाग पाछे सो लागा । माता उदर सो होइ अभागा॥
भागवन्त है हीरा, है हीरा जग माहि ।
हियरा हेरा पिर्थि मो, वैसो कोऊ नाहि ॥७९॥

उर मधु कर सदूक समाना । हीरा रतन अनेक समाना ॥
चूक भई सदूक न होई । लाल रतन मानिक को सोई ॥
मुन्न एक करता सो मागा । मम उर डोल न आवै खागा ॥
जा पर करता दाया धरेऊ । ता उर चीर जोत सो भरेऊ ॥
जाके उर मो प्रीतम बासा । प्रीतम कहू रहै है पासा ॥

जेहि करता उर खोला, ता कहँ दीन्हा जोत ।
जोत निपर है सोजन, यह झीपा सों होत ॥८०॥

उर महँ उरज बिराजै कैसे । गगा जल दुइ बुल्ला जैसे ॥
बाए दिस उर के मन परा । कमलज कमल साज जनु धरा ॥
हाड न पायेउ मन मह कोई । हाड हस्ति के मन महँ होई ॥
बल समेत है मन प्यारी को । मन जेहि बल सोई मन नीको ॥
चिन्ता सोग बहुत जो करई । तेहि मानस अबलै होइ परई ॥

अजा दुग्ध महँ माती, पीसि पिये जो कोई ।
मासे चार तीन दिन, सबल तेहिक मन होइ ॥८१॥

जेहि काहू के होइ न होनी । कहा चढै तेहि कर महँ मोती ॥
आनै जेठी मधु एक तोला । मूंगा मासे चार अमोला ॥
झीना पीसि गाय पय माही । डारै पिलै रहै दुख नाही ॥
इहै न पावै चालिस मासा । लेइ आवरा मन बल आसा ॥
वोही मान धनिया लै आवै । पीसि खाइ रस माह मिलावै ॥

रात देवस जो पीयै, बली होइ मन ताहि ।
कहा सरीर बखानत, ओपद रहेउ सराहि ॥८२॥

है सोभाधारी कर प्यारी । प्यारी कर मत लेत निसारी ॥
तेहि कर बीच हिया सब केरा । लीन्हहि या मन कीन्ह बसेरा ॥
जब लग जग न रहा तन दीठा । गिद्ध मीन सँग आइ बईठा ॥

जब परगट भा मानिक हाथा । तजा गिद्ध सफरी को साथा ॥
यह मानुष कर सो को पारै । गिद्ध उतारै मीन निसारै ॥
हाथ पांव सों बाद भा, दोऊ चतुर सुजान ।
भुजा आप वो देखि कै,भा कर मन अभिमान ॥८३॥

हाथ कहा सुनु चरन भुलाने । आपन औगुन ना पहिचाने ॥
आद मनुष जा दिन जिउ पावा । जिउ लका ताइ तेहि आवा ॥
देखा पाव मिला वा माही । रहेउ अनन्द हियेतेहि नाहीं ॥
स्रोनन बीच सबद तेहि आयेउ । यह नित पग ऐसो निरधायेउ ॥
की कबहू बिसरावस नाहीं । आपन चरन फेर जग माही ॥
हाथ बात सुनि कै चरन,कोपा कर उपरांह ।
थाह भुजा बल तोहि भयेउ,पाय हमारो बांह ॥८४॥

पुन कर कहा बात कहु सोई । अपने जोग बात जो होई ॥
मैं खरग औ वैसाखो पावा । तैं पनही वह चाम परावा ॥
दुर्जन लोग सर्प जो ढीले । वैसाखी अजगर होइ लीलैं ॥
तेहि जो बिमल भुम्मि होइ रहा। मनहीं भलख निसारै कहा ॥
पाव कहा जहा चाहो आऊ । अन्त पाव के परसि पराऊ ॥
हाथ कहा मैं हों बली, तैं निर्बल सुकुवार ।
कर सो दान को देत है, औ मारै तरवार ॥८५॥

धन अगुली धन की रतनारी । मनहु रकत महं बोरि निसारी॥
अगुली ललित अनूप अनूठी । कीन्हा जग को हिया अगूठी ॥
सकल सिष्ट रचना जेइँ कीन्हा । लाभ बहुत अगुलिन सो दीन्हा॥
जेइ दरसन करता को पावा । ताकर अगुली जल बरसावा ॥
सो मयक अगुली सो मारा । भा दुइ खंड चन्द उजियारा ॥
नख दस चन्द सपूरन, धन के हाथ मझार ।
कस न होइ पट धन सों,सब मन्दिर उंजियार॥८६॥

धन को पीठ विमल विधि कीन्हा। सब दिस पीठ मान सो दीन्हा॥
जगदिस पीठ देइ जो कोई । सकल सिष्टि तेहि बसमो होई॥
टेढी पीठ धनुक सम आही । मारे बान डरा तेहि चाही ॥
पीठ भीत है पाव पसारे । जो वैठा सो बहुतन मारे ॥
कुवर हँसी न कोऊ करई । धाहै भार बाध सिर धरई ॥

सुद्ध पीठ हीरा कर, दीन्हा सिरजनहार ।
चितवन नाहीं मान सों, सुख जोवन संसार ॥८७॥

सुन्दर गीउ गोल अति नीका । प्रगटै नाग लता की पीका ॥
गीउ रूप अस अलख सवारा । जगत गीउ मो फादा डारा ॥
सभै गीउ राखा तेहि सेवा । का मानुष का राकस देवा ॥
जेहि पूजा करता कर होई । रिपुसो गीउ न राखा गोई ॥
जो करतार पन्थ सो फीरे । लोह फाद तेन के गल हीरे ॥

होइ कै सुमन हाथ कहं,बांध न गीउँ लगाइ।
बहुत न छोड़ा चाहिये, बैठसि हियँ तवाइ ॥८८॥

मुख ससि है ससि है घस माहा। बरु ससि है ता मुख को छाहा॥
ऐसो बदन वही कह छाजा । अपने हाथ अमृत साजा ॥
जेहि सनमुख भा सिर्जनहारा। तजा सुक्र सविता उजियारा ॥
सिर्जनहार ओर मुख लावा । रवि ससि अथवन हारा पावा॥
नास बदन की छाई होई । ससा रकत जो लावइ कोई ॥

सिरिस छाल सित जीरा,स्याम तिलहि जल घाल।
पीसि मलै छाई पर, नास होइ ततकाल ॥८९॥

मुखपर अधिक स्याम तिल सोहा। रति तिलोत्तमा को मनमोहा॥
भलो चिबुक पर सेद सोहाई । वह जल बिनु जग प्यास न जाई
विद्रूम रग अधर धन केरा । है मधु को तेहि बीच बसेरा॥

खाइ कहौ की मधु है सोई । की विद्रुम की मानिक होई ॥
ललित अधर औ रद उजियारा। है जैसे ईंगुर औ पारा ॥
दाडिम बीज दसन कहौ, की मोती लर होइ।
को है नषत अंजोरे, तेहि बरनै सब कोइ ॥९०॥

एक दिन अधर तेहिक भा घायल। घाव रदन सो तापर आयल ॥
अधर दसन सो कहा सुनाई । हसिते होइ करसि बरियाई ॥
हौ मैं लाल लाल सब चाहैं । अधिक गुलिक सो लाल सराहै॥
लाल जो तीन भांति का होई। जो जानै जानै पै सोई ॥
मेघ असम तैं हिम तेहि साखा। सीतल तास को का बिस्वासा॥
कपटी छली होसि तैं, तोसौं को पतियाव ।
महा सुधा संग छाडे, लगत गरब को घाव ॥९१॥

रदन कहा का आप सराहे । नहि बखान को अन्त निबाहे॥
जो तै लाल अहौ मैं मोती । सोरह बरन होत ससि गोती॥
मेघ असम को सीत भलो है । सीत चहै जो मनुप भलो है ॥
रुपवन्तिन के गर महं ठाऊ । पाये सम महि मावउँ साऊ॥
पिता सिन्धु ससि बन्धु हमारा। निसअधियार जेहिक उजियारा
तैं सूखा स्रोनित हसि, कवन लेई तुव नाउँ ।
जो पहिले भूषन मरं, होइ न मेरो ठाउँ ॥९२॥

तै ईंगुर अस मै जस पारा । पारा सोई गुर अवतारा ॥
तैं साखा मे मूल अमोला। का मोहि साथ बाद मैं खोला॥
बहुते बन्धु सघातिय मेरे । एकै बन्धु सघातिय तोरे ॥
बोला अधर बहुत चलि जाहीं। एक सघाती बिछुरत नाहीं ॥
मैं सुत अहौ देवाकर केरा । जेहि बिन प्रीथी होइ अधेरा॥
पिता दीप है दिन को, मैं रजनी को दीप ।
को पारै सरवर होइ, अस पित तनै समीप ॥९३॥

रसना अमी भरी धन केरी । सुरतिय जेहि बचनन की चेरी॥
रसना औ रसना है एकै । तब रसना जब रसना फैंकै ॥
जो न करहु सो कहिये नाहीं । भली नहो मन सो मत जाहीं॥
जेई निद्रा रसना पर लीन्हा । बन्धु मास लेइ भोजन कीन्हा॥
झूठ न कहु कबहू जिभ्या सो । परजा है करता सबही को ॥

स्वाद तजै जो रसना, घात न सुधरै जाहि ।
भूज सोंठ औ हरदी, मिर्च पीस मल ताहि ॥९४॥

सरवन है प्यारी को भला । सत्त बचन सुन भा निर्मला ॥
बक्र सरवन को बेध जो भयेउ । बेग भयानक सबद न गयेउ ॥
स्रवन नयन सो उत्तम होई । पहिले सबद सुनावै सोई ॥
धन के नैन अहैं कजरारे । वाके मान सुरा मतवारे ॥
नैन सोई जेहि लाज समाने । देख लजारू छुवत लजाने ॥

नासिक सुन्दर की रहै, करत अधर रस पान ।
दुइ साँसा जासो चलैं, एक ससि के एक भान॥९५॥

दिन भर धन ससि सासा लेई । व्याध सरीर न आवइ देई ॥
निस कह लेत भान की सासा । यह उपकार सकल दुख नासा॥
है धनु सौह भौह कर खावे । बेधा सबै न कोउव बाचे ॥
बरूनी बान धनुक है भौहें । को तेहि दिस चितवै होइ सौहें॥
अलक फनी जेहि काटा सूवा । सहस फनी मो नीक न हूवा॥

भाल दुइज को चन्द है, सीस बहुत है गोल ।
केस रात मुख ससि समां, तारे गुलिक अमोल॥९६॥

सुनि मानिक हीरा पर लोभा । बिसरी मन्द रमा की सोभा॥
भा मन मुकुर मन्द निर्मला । भयेउ बखान ताहि मिस कला॥
छाई मन मो छाई जाको । दिष्ट न परै गुपुत छुकताको॥

चित्तहु आइ उपर सौं कहा । पिता तुम्हे कारन दुख सहा ॥
तुम जीयत वह सहै कलेसू । अब तुम चलहु आपने देसू ॥
पित्रन के उपवर्ग नित, भागीरथी सपूत ।
विष्णुपती लै आये, सहि दुख कष्ट बहूत ॥९७॥
थोरे दिन का मानिक प्यारा । चित्त पवन दुइ सर तेहि मारा ॥
रसना घाव लाग भा घायल । बैठा उदास रमा पह आयल ॥
कहा सँकेत भयेउ वह ठाऊ । अपने जनम भुम्मि अब जाऊ ॥
यह सुख राज न अब मोहि छाजा। मोहि कारन दुख देखै राजा ॥
माता मोहि कारन नित रोवै । दुख सहि मुख आसू सो धोवै॥
येही काल उडि जातेऊं, पच्छ होत जो मोहिं ।
दरसन मोर पाइ कै, परमद उपजत ओहि ॥९८॥
हान बहुत माना मैं मन मा । जेइ माता दुख सहि कै जनमा ॥
सो मोहि काज कष्ट नित सहई । उर बिहराय रात दिन रहई ॥
धन वह सुत जो आयेउ तहा । मात कया धरती मो जहा ॥
रहा वह ऊट के ऊपर धरा । मात समुझि धरती गिरि परा॥
हाथ पाव सो बाधा रहा । लुथहू गिरा बिथा दुख कहा ॥
सुखमों रहत औ सुख सों, सुद्ध न मात क लेउं ।
लेखा दिन करतार कहं, कवन उतर मैं देउं ॥९९॥
बीते रात प्रात जब भयेऊ । गगनराय के आगे गयऊ ॥
पहिले प्राज्य बखान सुनावा । फेर गवन की बात जनावा ॥
गगन कहा यह देस हमारा । है तोहार औ सब घर बारा ॥
कहा पयाना अबहि पियाना । सपत रस मानस न अघाना ॥
चलन तबै जब चलन तुम्हारी । लखि अघाइ तब चलन हमारी॥
राज पाट औार सैना, तुरै ऊंट सुंडाल ।
है तुहार सब बेलसहु, भा करतार दयाल ॥१००॥

मानिक कोमल बात निसारा । सीस नयन पर कहन तुम्हारा ॥
तुम हमार सब आदर कीन्हा । पूजी दीन्हा कुसिय लीन्हा ॥
पै मानुष जो आये देसी । मात पिता के अहैं सँदेसी ॥
पिता आतमा उत्तम सुखी । मोहि आतमज कारन भा दुखी ॥
मातु रोइ चखु खोवै चाहत । उठै कराहन काया दाहत ॥

अवनि देस मोहिं दीजे, करउं पयाना देस ।
मात पिता से भेंट कहँ, भयेउँ बाबुरो भेस ॥१०१ ॥

गगन कहा मानिक कर कीन्हा । मानिक रमा गवन कै दीन्हा ॥
दीन्हा बहुत तुरै औ हाथी । चेरी बहुत रमा की दासी ॥
करत पयान आतमा पूरू । आइ निकट भा रहा ने दूरू ॥
मानिक के अहुक की बामा । आना पवन पिता के पासा ॥
हर्षित भयेउ आतमा हीया । जनु मितंत जिउ पाएँ जीया ॥

लोगन आइ जनावा, आवत मानिकचन्द ।
गोहन लेहे रमा दुइ, सकल हरष को कन्द ॥१०२ ॥

सुनि राजा आनन्दित भयेउ । आनै कहँ आगे चलि गयेउ ॥
नगर लोग मानहु जिउ पावा । रहसि रहसि घर सो सब धावा ॥
मानिक पाव पिता के परा । हिर्दे लाइ पिता सेहि धरा ॥
करुना रस तें रोयन दोऊ । भए सजल अम्बुक सब कोऊ ॥
आसू ढारे सो रहसाने । दोऊ हिर्दे कमल बिकसाने ॥

सहित वधावर नगर कहँ, आए दोऊ भूप ।
नेछावर मानिक गुलिक, दीन्ह देखि सुत रूप ॥१०३॥

रमा रमा सम मन्दिर माही । पायेउ बास रहा दुख नाही ॥
मानिक आयेउ माता मियरें । भै अनद माता के हियरें ॥
सावित्री के नैन जुडाने । तन मन प्रान बहुत रहसाने ॥

धन सो जेइँ यह जगत बनायेउ। पुत्र बिछोहा फेर मिलायेउ॥
नदी एक सुत हारै कहा। हारा मात तेहिक दुख सहा॥
तनु जब चाइ नदी सोँ, डारा ऐसे ठौर।
सावित्रिहि तेहि दीन्हा, दुग्ध न अँचवा और॥१०४॥

दिस दस पाच बीत सुख माहीं। सबै मिटे पवन कहँ नाहीं॥
गयेउ आतमा आगे सोई। जासो काज ब्याह कर होई॥
ब्याह करै की बात जनावा। अज्ञा ब्याह रीत कै पावा॥
औ कहि आयेउ अब मैं जाऊ। जनम भुम्मि निर्मलपुर गाऊ॥
जाइ वहा यह बात जनावउँ। ब्याह रीत कारज पर धावउँ॥
अज्ञा दीन्ह आतमा, पवनहि भयेउ हुलास।
चित्र मागि कै लीन्हा, आयेउ मानिक पास॥१०५॥

सून सदन कै चित्र देखायेउ। देखि चित्र तेहि मुरछा आयेउ॥
जब भा चेत भयेउ अनुरागी। काया आग प्रेम की लागी॥
रूप रमा तेहि चित सो भूला। हीरा रूप फूल मन फूला॥
कहा पवन मोहि लेचलु तहा। निर्मलपुर हीरा है जहा॥
भूलैं एतो दिन मैं खोवा। मिर्ग छाहि अरुफानेउ लोवा॥
मैं अपराज्ञ न जाना, है ऐसो वह रूप।
रीझेउँ मैं प्रतिबिम्ब पर, तजि कै देह अनूप॥१०६॥

पवन कहा अब जनि अगुताहू। नियरैं भयेउ तोहि लगि ब्याहू॥
काहू सो मन मरम न कहऊ। मानुप मो मानुप अस रहऊ॥
साचो जीउ तोर अकुलाना। जलधि कवडल बीच समाना॥
अब अस गहिकै आपुहि राखहु। काहू के सँग मरम न भाषहु॥
सूरी चढ़ा भेद जेइ भाषा। याचा सो जेइ मन मो राषा॥
मैं अब जाउँ अगाऊ, चित्त तुम्हारे साथ।
अगुब होइ लै आइहैं, होइ मूल तोहि हाथ॥१०७॥

पवन पयान पवन सम कीन्हा । निर्मलपूर आइ सुध दीन्हा ॥
रहसा राजा रहसिन रानी । सब रनिवास रूप रस सानी ॥
रहसी हीरा रहेउ न धीरा । हुकुल न आवै हुलसि सरीरा ॥
रहसी सखिया सँग की चेरी । अलबेली बेलो चम्बेली ॥
राजा रहसि बियाह पसारा । होन लाग सब मंगलचारा ॥
नेवता लोग कुटुम्ब सब, रचा चित्र सब ठाउँ।
घर घर मोद हुलास भा, वह निर्मलपुर गाउँ॥१०८॥
उहा आतमापुर महँ राजा । ब्याह पसारा बाजन बाजा ॥
सोगी भयेउ रमा कर जीऊ । सवत लियाइहि मोहिंपरपीऊ॥
परगट हँसै गुपुत महँ रोवै । यह चिन्ता सो रैन न सोवै ॥
कहै सहेलिन सो हो सजनी । रजनी बीच करत दुख बजनी ॥
दूसर होत पीउ कर व्याहा । सवत सत्रु मोहि ऊपर चाहा ॥
सखी बुझावैं हो लली, दासा पिय की तोहि।
रानी बूझा चाहिये, सेवा कीजे वोहि ॥१०९॥
मानिक साथ कटक दै राजा । व्याहन भेजा बाजन बाजा ॥
मारग कठिन काटि कै गयेऊ । चित्त चतुर अगुवा तेहि भयेऊ॥
निर्मलपूर देखि हरखाने । सब मनमानिक रूप समाने ॥
धवराहर चढि हीरा देखा । रीझ रहा धन जीउ सरेखा ॥
मानिक कटक बरात रँगीली । देखि रही मन रीझि छबीली॥
भा बियाह गठबन्धन, हीरा मानिक संग।
एक ठाउँ दोऊ भये, अरुझाने रस रंग ॥११०॥
आगे कथा न भावै पारउ । ऊँका नींद नींद किमि मारउ ॥
जस हीरा मानिक वर पावा । घर घर संग अनद मनावा ॥
बस रानी तोहि कुअर पियारा । वेग मेलावैं सिर्जनहारा ॥

इन्द्रावति जब सुना कहानी । अधिकी भई बेयाकुल रानी ॥
कहा सखी सो तीसर रजनी । कहि न फेर कहानिय सजनी ॥

अधिक कहानी के सुने, बाढ़त बिरह बियोग।
अब तो अलख दयाल होइ, आप मिटावे सोग॥११॥



[१६] बिरह अवस्था खण्ड

धन सो धन जेहि बिरह बियोगू। प्रीतम लाग तजै सुख भोगू ॥
नेह बीज मन धरतिय बोवै । रैन न सोवै दिन कहँ रोवै ॥
धन जेहि जीउ होइ अनुरागी। वारै प्रान सो प्रीतम लागी ॥
तजै भोग सुख सुमिरन नाहीं । जागै निसि कहँ सोवइ नाहीं॥

धन सों जन धनमन तेहिक, जाके मन दोहाग।
परै दोह की आग सो, मानस भोंसै दाग ॥१॥

रोइ दीप सुत डारै खोई । अभिलाषिन अनुरागिन होई॥
इन्द्रावति सुकुवार कुमारी । भार बियोग परा तेहि भारी॥
प्रेम सरीर बेयाध बढ़ाया । दूबर पीत भयेउ धन काया ॥
पान न खाय न पीवै पानी । भूख पियास भुलायेउ रानी ॥
व्याकुल भई रात दिन रोवै । बदन करेज रकत सो धोवै ॥
प्रेम आग तन काढ़िय जारा । मारै चाहा मन को मारा ॥

भइउ दूबरी रानी, भै बिबरन तन रंग ।
बैरिन होइकै लागेउ, व्याध अंग के संग ॥२॥

दुबेल भइउ व्याध सो नारी । बल घटि गा भा जीवन भारी॥
चित्त ध्यान प्रीतम पर राखा । साखा प्रेम बढ़ेउ अभिलाखा॥

वैरागिन कीन्हा वैरागू । अनुरागिन कीन्हा अनुरागू ॥
सुमिरै सोवत बैठी ठाढी । मन असमर्थ अवस्था बाढी ॥
प्रेम झकोर भयेउ तेहि सीसू । बैरी बूझै निस रजनीसू ॥

सुक्ख भयेउ दुख दायक, सुध मति रहेउ न साथ ।
परी जगत प्रानेसरी, जडता केरी हाथ ॥३॥

सुन्दर बाक मनाक न भावै । गगन चाक उद्वेग सतावै ॥
बिरह आग सो भै उर दाहू । धन ससि कहँ भा मन्दिर राहू ॥
भावर डाय न सिच्छा मानी । छिन छिन कहै आन की बानी ॥
उन्माद सो रोवइ हँसई । आसू धरती मोती खसई ॥
जियत रहइ पेयान के बाहा । ना तो होत मरन पल माहा ॥

धन कहँ अंतरपट भयेउ, गगन ऊँच महि नीच ।
छाडि सकल धधा कहँ, परि गुन कत्थन बाच॥४॥

वह रावल जग मित्र नवेला । मन परान कहँ कीन्हा चेला ॥
वह बिदग्ध सुकुमार पियारा । रूप गगन सविता उँजियारा ॥
चिन्ता कथन बीच धन परी । चिन्ता करै घरी औ घरी ॥
केहि उपकार दरस वह पावउ । केहि उपकारे के ढिग धावउँ ॥
होत भलो होतिउँ जरि छारा । देह चढावत रावलु प्यारा ॥

बडो भाग सारंगी, रहती प्रीतम पास ।
मोहि कलेस बिछुड़न को, है प्रछन्न परकास ॥५॥



[१७] ओपद वर्नन ।

हाटक रंग पियारिय काया । विरह वियाध पित्र रंग पाया॥
दूवर भै दूभर जिउ भयेउ । वियिया विलंरूप होइ गयउ ॥
एक दिन मन्द जरानी रानी । सबके मन महँ सोच समानी ॥
नारिय एक धरा धन नारी । कहा पित्त जर है तोहि प्यारी॥
दुख तन महँ जानत सब कोई । बाय पित्त औ कफ सो होइ ॥
नसा चलैजा काग गत, पित्तहु ते पहिचान ।
मेंडक रकत मार कफ, बाय जोंक गत जान ॥१॥
जो तीतर लावा गत होई । सन्नपात सो जानहु सोई ॥
चलै धीम जो नसा पियारी । जानहु सीत देह दुख भारी ॥
मुक्ख कटुक जो रहै तुम्हारा । पित्त जान दुख आय पसारा ॥
सूखै अधर नयन पियराई । मुर्छा दाह पित्त सो पाई ॥
जो खासी औ स्वासा होई । कफ सो कहैं बयद सब कोई ॥
मुख मीठा तासो रहै, होइ भूख कर नास ।
होइ दुग्ध धधि तह्नु सों, प्रगटै फागुन मास ॥२॥
जो प्यारी मुख फीका होई । जानहु अहै बाय सो सोई ॥
होइ बाय सो रूखी देहा । निंदरा नासै उपन सनेहा ॥
तुम्हैं पित्त जर काया धरा । लै चन्दन औ पितपापरा ॥
सोठ उसी निर्लोचन लीजे । मोथा सँग करि सगे कीजे ॥
काढ़ा करिकै पीजे प्यारी । तजै पित्त जर देह तुम्हारी ॥

कटुक तिक्त के खाये, रहे अनल के पास ।
पित्त बढ़ै औ परगटै, तुला विर्ष के मास ॥३॥
कन्या तुला मेष विर्ष माही । पित्त बढ़ै यह मिरथा नाहीं ॥

कुम्भ मीन महँ कफ औनरई । मारुत राज मास पट करई ॥
मिथुन कर्क औ सिंघ मझारा । बढै बिछै धनु मकर बयारा ॥
उपजत बाय बत्त के सार्धे । हिक्का छींक बवै के बाधे ॥
चिन्ता किहे रयन के जागे । सोत सरीर साझ के लागे ॥

अजमोदा चितरकना, पतरज बायभिरंग ।
सेंधा सोंठ त्रफला, नासहिं मारुत अंग ॥४॥

मोथा नीब चिरायत बासा । पीतपापरा पित कहँ नासा ॥
तज जावित्री लौंग सोपारी । कफ काया से देहि निसारी ॥
जो जर देह पित्त सो होई । मुर्छा त्रिषा बढावइ सोई ॥
ववन अरुच औ ऊभै सासा । होत होइ जब कफ जर नासा ॥
मोथा औ पटोल दल आनो । त्रिफला औ त्रीकुटा सयानो ॥

नीब की छाल चिरायता, आनै फेर गिलोय ।
सकल टाक भरिकै कढा, पियै नास जर होय ॥५॥

उपजै देह बाय जर जाको । होइ कम्प जमुहाई ताको ॥
मोह भरम औ मुख कड़ुआई । औरो गाथ होइ अधिकाई ॥
अभया सोठ चिरायत कना । सोचर मिर्चहि चूरन बना ॥
मारुत जर यह चूरन हरई । प्रात समै जो भोजन करई ॥
तीन देवस ताई हो प्यारी । देहु न ओपद जानि दुखारी ॥

बहुत न सोऊ देवस कहँ, थोर न रैन मझार ।
खाहु न उदर भरे पर, पियहु न निस कहँ बार ॥६॥

एक सखी पूछा तेहि ऐसो । त्री दुपजर को ओपद कैसो ॥
सीत ताप और रस जर केरा । का ओपद है मो मन हेरा ॥
कहा होइ जो त्री दुप तापा । सूखै जी अदाह औ झापा ॥
मोथा गुर्च शिवापा परा । कुटकी और उसीरनि धरा ॥

फेर रकत चन्दन कह लीजे । टाक टाक भर काढा कीजे ॥
तीन देवस लग पीजे, त्रौ दुख को जर जाय ।
सोचर अजमोदा शिवा, रस जर देइ मिटाय ॥७॥
यह तीनो रसजर के नेती । पीस पिये तपतोदक सेती ॥
गुमा सोठ गुर्वे औ कना । जलसो पियैं सीत कह बना ॥
पीपल हरैं औ आवरा । चितरक सैंधा ऊपर धरा ॥
चूरन करि कै जलसो पीये । जाइ सरब जर सुख सो जीये ॥
होइ छुधा तब भोजन कोजे । राखि छुधा भोजन तजि दीजे ॥
ऐसो करहु निरंतर, होइ न कबहू दुक्ख ।
औपद येही बडी है, भोग करहु औ सुक्ख ॥८॥
एक कहा कीजे हो प्यारी । बाय पित्त कफ जनम बिचारी ॥
कहु पर्क कीर्त्ति वाय पित केरी । औ असलेषम की हैा चेरी ॥
कहा वाय को जेहि अब तारा । बहुत बचन है भापन हारा ॥
पच इन्द्र तेहि हाथ न रहई । कहै न जोग बचन सो कहई ॥
देखै जोग न जो कछु होई । ता कह अवस बिलोकै सोई ॥
अभिमानी निर्दाया, छोटे ताके नैन ।
ताहि करम पसु ऐसें, करैं सदा दिन रैन ॥९॥
जाको जनम पित्त मैं होई । होइ चतुर औ ज्ञानी सोई ॥
काहू जन को कहा न करई । ब्रेग कोप मन मह अवतरई ॥
ताको सरन ताकि जो आवै । बोट देइ रै ऊपर धावै ॥
खाय पिअै पर चाहुत राखै । मधुर खटाई लटुता चाखै ॥
तेहि दुगन्ध सेद सो धावै । औ बेगे बिर्याई आवै ॥
अरुन अनल सोवत मों, देखै बहुतै सोइ ।
करम सिंघ औ कपि को, परगट तासो होइ ॥१०॥
असलेखमी जनम है जाको । दायायन्त सील है ताको ॥

काज बीच धीर सो होई । सब पर दाया राखै सोई ॥
मात पिता औ गुरु की सेवा । करै सदा मानै जस देवा ॥
दुखित न होइ लाज से सोई । क्रोधहि रहै दुखी जहँ होई ॥
स्याम केस दीरघ चखु ताके । मवद बचन अम्रित रस वाके ॥

कुसुम विलोके सोवत, देखै हरियर घास ।
करम मयूर चकोर को, करै सदा गुन रास ॥११॥

बोली तब इन्द्रावति रानी । लाभ की बात कही तुइ ज्ञानी॥
कहु फिर भेद कपट तोहि नाहीं। कैसे रहिये पटरितु माहीं ॥
कहा हेमन्त होइ जब प्यारी । खाहु सोठ होइ अज्ञाकारी ॥
मिर्च और बैदेही खाहू । जाडा लगे अगिन ढिग जाहू ॥
निसदिन पियहु ताल को नीरा। मर्दन कीजे तेल सरीरा ॥

कीजे येही सिसिर मों,जाड न लगै सरीर ।
शिवा खाहु पीपल सँग, पियहु ताल को नीर॥१२॥

मधु सँग अभया खाहु पियारी । ऐसे रहहु बसन्त मो बारी ॥
औ बसन्त मो प्रान पियारी । लीन्हेहु ठाव जो छाया धारी॥
चन्दन कुमकुम लाउ सरीरा । पिउ दिन रैन कूप को नीरा ॥
हँसि मनोरमा परा नेसरी । बैठ सुभग सँग लै सुन्दरी ॥
सुनिये मधुर राग औ बाजा । भोजन तीतर लावा छाजा ॥

ग्रीपम रितु जब आवै, पित्त राज सब होइ।
कैसहु फिरे न धूप मों, ज्ञानवन्त जो कोइ ॥१३॥

बहुत बिर्छ सो छहा जहा । कमल बिछाइ बैठु घन तहा ॥
सीतल फूल कमल कर होई । जो लीन्हा सुख पावइ सोई ॥
गुड सँग अभया भोजन कीजे । मधुर राग सरवन कहँ दीजे ॥
बरपा रितु महँ मारुत राजा । घोरहि जेवन जेउब छाजा ॥

धौराहर पर रहहु पियारी । निद्रा दिन भर राखहु मारी ॥
तपतोदक सीतल कै, पियहु हरै सब रोग ।
चन्दन औ घनसार कह, लाउ होइ सब भोग॥१४॥
धूप बीच यह समय न जाहू । सेंधा साथ अमृता खाहू ॥
जब जग बीच सरद रितु होई । पित्त को राज कहै सब कोई ॥
यह रितु रकत देह सो लीजे । औ उपकार छोर को कीजे ॥
पहिल पहर निस हो छबि रासा। धौराहर पर कीजे बासा ॥
गगन तरे सोइब भल नाही । खाइ शिवा सँग चातुर खाहीं॥
सात देवस रितु मों रहै,तब आगम रितु लेहु।
छाड काज एहि रितु को,वहि रितु पर चित देहु॥१५॥
कहि सब बात गई सब नारी । मरमी साथ कहा धन प्यारी ॥
जा के देह प्रेम दुख होई । ओषद करै न पारै कोई ॥
सुखी प्रेम के दुख का दुखी । प्रगट दुखी गुपुत है सुखी ॥
जा कहँ कुष्ट प्रेम का होई । गिरै न देइ कीट कहँ सोई ॥
जब मन औ जिभ्या पर आवै । होइ अधीर प्रीतम गोहरावै ॥
आधा सीस पिराइ जो, धरै बैद सो गोइ ।
मिटै नहीं ओषद सो, प्रेम पीर जोहि होइ ॥१६॥
रहा सनेह बिछे तर दोही । भै उदवेग हिर्द मो वोही ॥
अपने मन कहँ अन्त बुझावा । रे मन तोहि यह जीवन भावा ॥
मोहि भारी दूभर भा जिवना । जिवना हाथ रकत नित पिवना॥
चक्रवाक नित रहइ बिछोवा । मैं निसदिन यह,जिवनित रोवा॥
गगन सिंघ मोहि सिंघ समाना। ताको बिछे बिछे मैं जाना ॥
जलज न काढै पावउं, रहेउ न कछुहु उपाय ।
अब घट जोउ देत हौ, जलज सिन्धु मो जाय॥१७॥

चित्त प्रीत मो मूरत लावा । तासो आपन बिथा सुनावा ॥
परेउ प्रान मन ठूढी कूआ । उठत करेजा सो मित धूआ ॥
दिन भा आग धूम भै रयना । मन भा सिन्धु मेघ भये नयना ॥
मो मन मीन फँदो है प्यारी । वोहि बेसर लट मत्स्याधारी ॥
तोहि मूरत को पूजनहारा । है यह ब्राह्मन जीउ हमारा ॥

जगत देवहरा पीन्ह नित, ब्राह्मन जीउ हमार ।
पूजत है परचिन्त तजि, मूरत लिहें तोहार ॥१८॥

होत प्रभात प्रभञ्जन बहेऊ । कुअर सँदेस पवन सो कहेऊ ॥
जा कहु पवन विचारी साथा । रहे न धीरज नेहिय हाथा ॥
अब यह जीवन भलो न लागै। जात सिन्धु दिस प्रान तेयागे ॥
मन सो आस घरत है सोई । अन्त देवस सजोगी होई ॥
सकल कहा जो भावित छाजा । बूडे चला सिन्धु दिस राजा ॥

बन्दन कीन्ह चरन धरि, समुझायेउ बुधसेन ।
पै न फिरा समुझाये, चला जलधी जिउ देन ॥१९॥

आइ परा गुरुनाथ गोसाईं । पन्थ बीच दुस्सर की नाईं ॥
रूप देखि राजा पहिचाना । चरन परा बहु भाति बखाना ॥
कहा नाथ को पन्थ देखावा । आगमपूर तुम्हैं लै आवा ॥
राजा कहा गोसाइय दाया । पायउ अगुआ तब मै आया ॥
सकल आपनो बिथा सुनावा । सुनि गुरुनाथ बहुत समुझावा ॥

तेरो जोग न पूजहै, जो बोचै जिउ देहु ।
आगमपूर आइकै, कवन लाभ तुम लेहु ॥२०॥

फेर सनेह बसेरा दीन्हा । आप गवन राजा पहँ कीन्हा ॥
उहा बयार सँदेस सुनावा । इन्द्रावति कहँ मुर्छा आवा ॥
सुरँग सुपेती ऊपर रानी । मुरुछी धाई सखिय सपानी ॥

हा हा कहि दै अंग उठावैं । है है हाक लगाइ जगावैं ॥
लै गुलाब हिम बालक चन्दन । लावहिं इन्द्रावति सुन्दर तन ॥
भयेउ न चेत रतन कहँ, किरेन अनेक उपाय।
जीउ हाथ नहिं जाके, को तेहि सकै जगाय ॥२१॥
ताकहँ कहा मोक हम जाना । सो सरीर के रूप भुलाना ॥
जीउ बाज यह कला न डोलै । परै उपल होइ मन्द न बोलै ॥
जीउ सरीर बीच जो चीन्हा । सो ससार जनम फल लीन्हा ॥
जग मो चित्र दीप भा सोई । इर बयार सो ताहि न होई ॥
घरी एक पर जागी रानी । सखिन कहा काहे मुरुझानी ॥
कहा सीस घुमरत रहा, दहु याही केहि भाउ ।
रहा न जीउ हाथ मों, मुरछानिउं एहि ठाउं ॥२२॥
जग चखु रतन जोत वह बाला । अँचवा उन्नमाद भै प्याला ॥
सुनि धाई रूपम्भा धाई । आइ अदभ्र ताहि समुझाई ॥
समुझु पियार चिन्त नेवारी । चिन्ता सो बाढ़ै दुख भारी ॥
तैं प्यारी बारी राजा की । हर्षित रहु तोहि सपत बबा की॥
नइहर महँ का चिन्ता चीन्हें । आपन भेस चिन्त की कीन्हें ॥
गई आप रूपम्भा, प्यारी कहँ समुझाइ ।
सुना बात धाइकै, आपन मरम छिपाइ ॥२३॥
चेता देखि कुअर कहँ आई । इन्द्रावति सो कुसल जनाई ॥
मालिन इहा कुअर दुख भेंटा । उहा नाथ जगपति कहँ भेटा ॥
चीन्हत रहा नाथ कहँ राजा । आदर भाव बहुत उपराजा ॥
भयेउ नाथ जगपति दरपना । नाथ मुकुर जगपत मन बना ॥
दरपन होत मरम सुख सूझा । राजा दुखित नाथ कहँ बूझा ॥
पूछा अहो गोसाईं, किजै कीन्ह केहि लाग ।
दरसन मिला तुम्हारो, बड़ी हमारी भाग ॥२४॥

दे असीस बोला गुरुनाथा । जुग जुग ऊग भाग को साथा ॥
जो कीया सो पूछहु मोहीं । आयन वचन सुनायउ तोही ॥
पिछे तर्रं जो रावल भेमू । कालिंजर को अहै नरेमू ॥
है कुलीन कुल घर को दीया । धरनिष्ठी दाया मे हीया ॥
राज दीप नित भयेउ पतगू । आएउ छाड़ राज रस रगू ॥

है कुलीन भूपत सुत, कालिञ्जर को राय ।
राजा आज्ञा चाहिये, मोती काढै जाय ॥२६॥

राजा बात नाथ कर माना । राखा आदर विनै बखाना ॥
आज्ञा दीन्ह निसारहि मोती । है ताकहँ जो साहस होती ॥
रहसेउ नाथ कुअर पहँ आयेउ। मुदित अनन्द सँदेस सुनायेउ ॥
नाथ चरन राजा गहि परा । नाथ हाथ दाया सो धरा ॥
दाया कै आसीष सुनावा । राजा कुअर सभापन पावा ॥

दै असीस राजा कहं, मोती आवै हाथ ।
औ उपदेस वचन कहि, गयउ तहां सो नाथ ॥२७॥

अमर जिया सोइ मर जीया । मन समुद्र मोती जो लीया ॥
रे मरजिया कहा करु मोरा । है यह जग मो जीवन थोरा ॥
बैठि जलधि मो जलज निसारो। प्रान प्रीतमा ऊपर वारो ॥
प्रेम समुद्र मरजिया सोई । जाको जिउ की लोभ न होई ॥
लाभा लागि सो ता महँ डूबै । जो मोती हेरत नहि ऊबै ॥

जोगी जोग समुद्र को, प्रेमी हित जल रास ।
मथि मोतो काढत है, तन पूजत है आस ॥२८॥



[१८] मोती खण्ड ।

मोती काढ़ै कारन राजा । चला सिन्धु दिस बाजन बाजा॥
सग चले आगमपुर लोगू । कहँ सुरुज है चन्द सँजोगू ॥
यह भय सखिन जनावा तहा । विरह बीच इन्द्रावति जहा ॥
धन को जिउ अधरन पर आवा। महादेव कहँ बहुत मनावा ॥
है महेस जो राजा जोगी । काढ़ै मुकता होइ सँजोगी ॥

तौ तोहार मैं पूजा, करउं मँडप मों आइ ।
होइ दयाल गौरिपति, कीजे आज सहाइ ॥१॥

कुअर समुद्र तीर जब आयेउ । खेवक कहँ वेगहि हँकरायेउ ॥
बिनै बहुत खेवक सो कीन्हा । प्रीत सुभाव दान तेहि दीन्हा ॥
खेवक राजहि नाव चढावा । सकल लोग करतार मनावा ॥
रे दाता यह मोतिहि पावै । जीउ समेत नीर कहँ आवै ॥
है यह उदधि महा हत्यारा । तुम दाया सो लायेहु पारा ॥

बहुत कहँ जेहि प्रेम है, तेहि भावत जिउ देत।
अब जिउ वारै मित्र मग, तब सुख जीवन लेत॥२॥

जाकों प्रीत मित्र की पूरी । भा मनसूर चढा वह सूरी ॥
प्रीतम जाको चीरा हीया । दीन्हा जीन हिया भा दीया ॥
बिनु दुख सहे मिलत सुख नाहीं। मधु सुख अहै इक दुख माहीं ॥
प्रेमी रात सभैं बन ठाऊ । खोजै आग सुने हित नाऊ ॥
जो पसु कहँ दस बरष चरावा । अत कामना मन कर पावा ॥

जो चाहै सोई करै, करता जाको नाऊं ।
डारि कूप मों अंत कहँ, देइ सिंघासन ठाउं ॥३॥

राजकुअर सो खेवक बोला । मरम अपार सिन्धु को खोला॥

जगपति पोतिय बटा डारा । जहा मुस्मिहन सिन्धु मझारा॥
पै जत राजा काढ़े आयेउ । बूड़ेन बटा काहु न पायेउ ॥
डुबकी खाइ न काहुन्ह पावा । हूय समुद्र म जीउ गँवावा ॥
सोहि अस बूझि परत यह साऊ। बटा भयेहु सो दूरेह ठाऊ ॥

होइ भाग जो दाहिन, अलभ्य दसा पर होइ ।
तौ दधि डुबकी खाये, हाथ म आवै सोइ ॥४॥

सुनिकै राजा उतर सुनावा । सोहि निज देत उदधि महँभावा॥
पावउ मुकता पूजै आसा । न तो जिउ जाइ जीउ के पासा॥
जिउ पच ऊपर जो जिउ देऊ । फेर न मरउँ मिलन रस लेऊ ॥
ना चाहत हैा कूसल पेमू । जाइ जो आइ रहै सग पेमू ॥
अन्त मरन होइहै जग ठाऊ । कम न मरै आगेहँ मरि जाऊ॥

है थाती इष्टा कर, है जो जिउ तन साथ ।
चाहत रहेउं दरस लै, सैांप देउं तेहि हाथ ॥५॥

सेवक कहा न होहु निरासा । आसा है धीरज के पासा ॥
हेरन हारा पावन हारा । है यह कहा सुरुज उँजियारा ॥
जेहि कारज को बन्द दुवारा । खोलन हार अहै करतारा ॥
जेहि चाहै मगु पर लै आवै । भूजी भप सो पन्थ देखावै ॥
जा कहँ पन्थ लगावै नाही । चालिम बरप फिरै बन माही॥

जा कहँ पुत्र पियारा, जग मो बिछुडा होइ ।
ता कहँ बसन बास है, प्यारा मेरवै सोइ ॥६॥

चिन्ता सेवक हिये समानी । परी सरोबन अम्बर बानी ॥
कमला अहै आदपति बारी । ताको है मुकता रखवारी ॥
जब कोउ राजा काढ़ै आवहि । बटा आन ठावँ लै लावहि ॥
कमला सो जब दाया होई । तब मोती कहँ पावइ कोई ॥

सुनि सेवक राजा सो कहा । अधिकैा अभिलाषी होइ रहा ॥
कहा कहा कमला सों, दाया प्रगटै आइ ।
अब उपाय कछु नाहीं, बूड़य अहै उपाइ ॥७॥

तलि सन वाव झकोरा वही । औघट जाइ नाव लगि रही ॥
ऐसो वही झकोर बयारा । सेवक नाव न फेरैं पारा ॥
नाव दूर आखी सो गई । मानहु गुपुत सिन्धु सो भई ॥
लोगन जाना बूड़िय नैाका । लिखा न मिटै महीप करै का ॥
यह समुद्र मो बाच न कोई । का राजा का जोगिय होई ॥
आगमपूर नगर मो, किहेन पुकारा जाय ।
ना जानों केहि दिस गये, सेवक औ यह राय ॥८॥

प्रीतम मरम सुनत धन प्यारी । ऊभ सास लै असुक कारी ॥
कहा सखिन सो मोहि बिष दीजे । खाइ मरउँ एतो जस लीजे ॥
रे जिउ हसि तैं कुटिल कठोरा । कसन चलसि जहँ साजन मोरा ॥
अरे जीउ दाया तोहि नाही । रहन तोर दूभर जग माही ॥
अरे मीचु लै आइ पराना । मोहि तजि साजन आप पराना ॥
देतिउं काढ़ कयासों, प्रान होत जो हाथ ।
याज प्रान मन वल्लभ, प्राज छिअ जिउ साथ ॥९॥

बोली धीरा सखिय सयानी । हो न अधीरा मन मो रानी ॥
ता कहँ सुमिर जीव जो दीन्हा । जगत रहा नाही है कीन्हा ॥
एकै ठाव जो चार बिहगा । मारहु कूचि करहु एक सगा ॥
जो चाहै करतार जिआवै । चारिव पखी कहँ बिलगावै ॥
सिन्धु लहर सो का नहि होइ । कोउ बूड़त तट लागत कोई ॥
यह बिश्वास न कीजे, झूठ अन्त कहँ होइ ।
जो यह आइ पुकारा, साचु न जानत सोइ ॥१०॥

इन्द्रावती कहा सुनु धीरा । वह जिउ है मैं अहउँ सरीरा ॥
जीउ वोही यह जीउ हमारा । वह जिउ सो है जीवनहारा ॥
जिउ बिनु कैसे जीवइ काया । जब लग काया तब लग छाया॥
यह काया परवारे जाहीं । जेहि काया की छाया नाहीं ॥
जाकर रहेउ जीउ सो काया । ताकर प्रगटै कहवा छाया ॥

सखी मोहि समुझावहू, धीरज बांधि न जाइ ।
अब कैसे प्रीतम मिलै, दीन्हा समुद बहाइ ॥११॥

सुमिरु पियारी सिर्जन हारा । देइ मिराइअ प्रीतम प्यारा ॥
मानुष मरि धरती मो जाई । माटी होइ हाड छितिराई ॥
फेर जिआवै ताकहँ सोई । भूला अचरज बूझ जो कोई ॥
आदि मनुष माटी सो साजा । बहुर बुन्द सो कुल उपराजा ॥
चालिस बालक ताकहँ दीन्हा । सकल सिष्ट पर उत्तम कीन्हा ॥

बोन्तिस अक्षर तापर, भेजा सिर्जनहार ।
तेहि करता कहँ सुमिरहु, मेरवै मित्र तोहार ॥१२॥

गइल सखी तहँ बहिल बयारा । धन पूछा कहँ मित्र हमारा ॥
कहा न झँखिये रामा हियरें । मित्र ग्रीउँ नस तें है नियरे ॥
आवन आवा देहु बिमारी । आवैं प्रीतम सेज तुम्हारी ॥
हरपट झफल मित्र तुम्हारा । पट उठाइ करु है उँजियारा ॥
साखो कीजे सब गुन लहई । साखो परमद कुञ्जी अहई ॥

है समीप वह प्रीतम, बरुक तुम्हारे पास ।
बेगें मिलिहै तुम कहँ, राखो हियरें आस ॥१३॥

इहा छमित धन पीरा भयेऊ । उहा नाव भवघट बहि गयेऊ॥
प्रेम आग राजा कर गाढी । उपर बढाइ समुद्रहि डाढी ॥
जारा अस जल रास सरीरा । जरिकै खार भयेउ तेहि नीरा ॥

सिन्धु सुता से मरम जनायेउ। मोहि प्रेमी छिप्रान जरायेउ॥
जो वह सीपज आज न पावइ। तासु हुतासन मोहि जरावइ॥
छाडि देहु रखवारी, तौ मोती वह लेइ।
नातो प्रेम हुतासन, मोहि न बाचै देइ ॥१४॥

तब कमला मोहन लै चेरी। देखा सूरत राजा केरी॥
कहा अहउँ मैं इन्द्रावती। तोहि मधुकर कारन मालती॥
भा मानस तोहि कारन सोगी। मोतिय लाग न बूडइ जोगी॥
आइउँ यह नित प्रान पियारे। चलहु कलिजर साथ तुम्हारे॥
तोहि मिल भयेउ निकेत सँकेतू। भयेउ नरक मोहि नाक निकेतू॥
नाव वही जिउ बांचा, मिलेउ उदधि को तीर।
तजि मुकता को काढ़वो, चलिये प्रेम सरीर ॥१५॥

सुनिकै बूझा दरस भिखारी। होइ होइ यह कमला प्यारी॥
रूप न है इन्द्रावति केरा। है कमला सन मेरो हेरा॥
कहा कवल दूसर है मोरा। ताके रग रग नहि तोरा॥
इहा कहा पगु धारइ रानी। लज्यावन्ति लाज की सानी॥
ना वह चरन न लंक न हाथा। ना वह नैन न भौंह न माथा॥
लाज भरा तेहि लोचन, इहां न आवइ सोइ।
तैं छल भेस धरै हसि, यह सब छल गति होइ॥१६॥

कमला आवन मरम छिपावा। अति सतवन्त कुअर कहँ पावा॥
कहा कामना पूरन होई। तोहि सम नेहो रहा न कोई॥
दै असीस कमला चलि गयेऊ। आस कुअर के हिर्दै भयेऊ॥
पुनि खेवक खेवै पर आवा। मोतिय ठाउ नाव कहँ लावा॥
सुमिरि कुअर करता कर नाऊ। होइ मरजिया गयेउ तेहि ठाऊ॥
नूर मोहम्मद जाहि मन, होइ महा अनुराग।
बूडै गहिर समुद्र मों, अपने प्रीतम लाग ॥१७॥

जैसे बुन्द समुद्र समाई । एकै होइ न तनु बिलगाई ॥
तैसे निपै मरजिया मयाना । डुबकी खाइ समुद्र समाना ॥
राहा नहि ममता के साथा । परा गुलिक बटा तेहि हाथा ॥
लै उतिरान नाव पर आवा । मरिकै मनहु फेर जिउ पावा ॥
बूड़ै प्रेम सिन्धु जो कोई । मितु समुद्र न बूड़ै सोई ॥

मन अनन्द सो खेवक, खेइ लगायेउ तीर ।
आयेउ कुंअर नगर मों, हुलसे सकल सरीर ॥१८॥

राजा सो सुमिरन सुधि गई । मन मो प्रान प्रीतमा भई ॥
जाको सुमिरन निसदिन कीन्हा । सोई हियेहि बसेरा लीन्हा ॥
मानस भयेउ प्रीतमा ठाऊ । भूलि गयेउ सुमिरन औ नाऊ ॥
आपुहि जब वह मूरत जाना । सपने को मूरत पहिचाना ॥
औ यह सकल जगत कहँ पाया । जल दरपन सपने की काया ॥

वोहि जिउ की काया सों, आपुहिं पायेउ छांह ।
घट बढ पायेउ आपमों, नहिं पायेउ तेहि मांह ॥१९॥

जगपति आप सीप सुत लीन्हा । पुनि तेहि सौंपि कुअर कहं दीन्हा ॥
बोलेन आगमपुर के लोगू । है यह मोती रतन सँजोगू ॥
इन्द्रावति मन मो हुलसानी । हुलसे कुच कञ्चुकि सकरानी ॥
मुख पर छबि बाढी अधिकाई । गइ पियराइ भई ललताई ॥
भयेउ परमदा परमद भेषा । गै दुख भै सुख जै सुख देषा ॥

छूटेउ बिरह अवस्था, ससि तें रजनी सार ।
निसमुख पयेउ दुखद को, भा दिन मुख उँजिआर ॥२०॥

इन्द्रावति मन सखिन हकारा । बिहँसि सखिन सो बात निसारा ॥
महादेव सम देव न दूजा । पूजा काज करहु तेहि पूजा ॥
छिये मण्डप सीतल बेरा । घाम तपै कुसुमाकर केरा ॥

सखिन बात रानीं कर माना । फुलवारी सब कीन्ह पयाना ॥
सब मिलि फूल चुनै पर भईं । लैकै फूल मँडप कहँ गईं ॥
रानी फूल चढावा, महादेव के सीस ।
पूजा रहा सो कीन्हा, दीन्हा सखीं असीस ॥२१॥

जैस मयक ईस के माथा । तस रविकन्त रहै तोहि साथा ॥
जस गौरी इस्सर कहँ प्यारी । तस पियप्यारी होसि दुलारी ॥
जस सिव सिवा जीव काया सम । तस जिउ काया तुम औ प्रीतम॥
कहै न पीउ जाहि बलिहारी । मात पीठ सम पीठ तुम्हारी ॥
कह पोकरै साठ जन कहीं । जेवन देइ दोप तब नहीं ॥
बिछुरन बात न भावै, रहै तुम्हारे साथ ।
सेंदुर सदा सोहाग को, रहै तुम्हारे माथ ॥२२॥

पूजा महादेव की पूजा । पूजा काज रहा नहिं दूजा ॥
तब इन्द्रावति आनँद माहीं । आई घर चढि रथ उपराहीं ॥
चन्द रहा चन्द्रारि मझारा । मुकुत मिलेउ कौमुदी पसारा ॥
छूटेउ ब्याध ब्याह सुनि परा । मन आनन्द हुमे भा हरा ॥
छूटा बयाह परन को गाढा । अधिक रूप इन्द्रावति बाढा ॥
उपजेउ इन्द्रावती मन, मोद सकल सुखकन्द ।
उमड़ेउ उर निर्जर नदी, दीन्ह कलोल अनन्द॥२३॥

रहसि रहसि सब सखिय सयानी। आवहि जाहि जहा वह रानी॥
देहिं असीस बखानहि सोभा । तोहि सोभावन्ती सम को भा ॥
बहुत कलेस सहा तुम प्यारी । अब सुख आयेउ राजकुमारी ॥
जापर प्रीत अमृरत केरी । ता ऊपर है बिपत घनेरी ॥
अत विपत सहि सम्पत पावै । भोगसुखद तेहि दरस देखावै ॥
बहुत सहा तुम संकट, अब नियराना सुक्ख ।
रहसु पियारी नियरें, आयेउ सुख गा दुःख॥२४॥

[१८] व्याह खण्ड ।

धन्य ध्य ह जासो धन प्यारी । होइ कंत संग खेलन हारी ॥
होइ सोहागिन प्रीतम पावे । पिय ढिग जाइ कै उ निहुरावे ॥
माजें वढठि सरीर बनावै । पिउ रस लेइ पीउ रस पावै ॥
निर्मल होइ होइ सुकुवारू । मानो फूल को करइ अहारू ॥
माजे मह पर चिन्त नेवारै । निज प्रीतम को जाप सवारै ॥

सत्त सहित धन जो धरै, प्रीतम के अनुराग ।
प्रीतम अपने हाथ सो, धन कहं देइ सोहाग ॥१॥

निर्प सयम्बर लगन धरावा । सब काहू कह नेवत पठावा ॥
भयेउ अनन्द अगमपुर नगरी । भइ सुद चरचा नगरी सगरी ॥
बाजै लाग बियाहुत बाजा । जन परजन मन परमद् बाजा ॥
रचा चित्रसो मन्दिर द्वारा । लगेउ होन सो मंगल चारा ॥
सुभ माँडव छापन उपराहा । जासो होइ सुवर सिर छाहा ॥

ससि वदनी सब कामिनी, गावैं मंगल चार ।
लीन्ह अनन्द बसेरा, जगपत सदन मझार ॥२॥

इन्द्रावति माजे मंह भई । चेता मालिन नियरें गई ॥
पूछा हियें लजानिय नाही । कैसें रहिये माजेय माही ॥
कहा रहो मन निर्मल कीहें । चित प्रीतम प्यारे पर दीहें ॥
मन सो दूसर चिन्त नेवारी । पिउ पर ध्यान लगावहु प्यारी ॥
निस दिन मन को खेत बनावहु । पिय की प्रीत को बीरै लावहु ॥

अलप अहारिहु जीयै, सुमिरहु पिय को नाउं ।
रहो अकेली रात दिन, प्यारी मांजे ठाउं ॥३॥

माजे मे न्द्रावति रानी । आइ असीसहिं सखिय सयानी ॥

देहि असीस सखी हित प्यासी। रमा निरन्त्र रहै तोहि दासी॥
हो प्यारी बिलसहु पिय प्यारा। पिय सेरवत है सिर्जन हारा॥
जा सजोग चहा तुम रानी । भेंट तेहिक अब आइ तुलानो॥
ब्याहु नसेनी मिलन सदन को। मिलै सिघर अब मिलन सजन को।

सुख अनन्द सो रानी, बिलसहु पिया सजोग।
भये कन्त सजोगिनि, आवै कर सुख भोग ॥४॥

सखिन असीस बचन सुनि रानी। कहा पिता घर रहिउ भुलानी॥
खेलैा कोड़ में देवस बितायेउ। कुछहू प्रीतम मरम न पायेउ॥
खेलहि बीति गई लरिकाई । बाढ़ेउ दरप होत तरुनाई॥
भूलिउ खेल सखी के साथा । चढ़ेउ गगुन कर मानिकहाथा॥
गुन नहि एक त्रास मोहि हियरें। कैसें होब कन्त के नियरे॥

हैां अजान श्रो निर्गुनी, ज्ञान रूप वह पीउ।
हाथ छूछ गुन ज्ञान सो, सखी सोच मह जीउ ॥५॥

मोहि गुन बुद्धि सखी है नाही। यह नित सोचत हैा मन माहीं॥
जेहि गुन बुद्धि हाथ मह होई। तापर प्यार करै सब कोई॥
रहत न बुद्धि पियें मद हाथा। या नित दोप लाग मन साथा॥
सत्रु चतुर जो जिउ कर होई। है भल मूढ़ मित्र सो सोई॥
गुन सो मानुप होत पियारा। गुन कर गाहक है संसारा॥

विप कह अमिय करत है, है ज्ञानी जो कोई।
मूरख जन के हाथ सो, अमृत विप सम होई ॥६॥

मानमती यह सखिय बिचारी। बोली सुनिये राज दुलारी॥
यह जग बीच अहो रूपवन्ती। पिय जेहि रीझा सो गुनवन्ती॥
तुम पर अस रीझा पिय सोई। चाहा एकै बार एक होई॥
पै यह छट औ आउ तुम्हारी। धरा बियोग बीच तेहि प्यारी॥

गुनि मति काँति सहज औ रूपा। सब तोहि रीझ कन्त गुन भूपा।
प्रीतम भै का भै हिये, तोहि नित बाउर पीउ।
तो लट औ अधरन मों, प्रीतम मन औ जीउ ॥७॥
रतन जीत पुनि बात निसारा। भयेउ रतन सो मम अवतारा।
एक सोच मोहि आवत सजनी। तासो सोचत हो दिन रजनी।
पिय औगुन लावै मोहि रामा। मानुष जन मन तेरो बामा।
मानव मानुज उदर सो होई। मनुज उदर बिनु मनुज न कोई।
पितु को परमद अमु जब आवै। मात उदर तब नर भो पावै।
जनम मोर अस नाहीं, सखी सोच मैं लेउं।
पिय ऐगुन जो लावै, कैान उतर मैं देउं ॥८॥
कहा सखी कछु सोच न कीजे। ध्यान अमूरत ऊपर दीजे।
तोहि करतार रतन सो कीन्हा। कर मह रतन ज्ञान कर दीन्हा।
जो करना कह करवेइ होई। हो तेहि कहै होइ तब सोई।
बिर्ध पुरुष औ बन्ध्या नारी। तासो सुत पायन सत धारी।
बाज पिता सो बालक कीन्हा। अमृत बचन जीभ मो दीन्हा।
कीन्ह बिमल माटी सों, बहुर बुन्द तेहि कीन्ह।
तासों रकत मास करि, हाड फेर जिउ दीन्ह ॥९॥
अलख अमूरत सिर्जन हारा। मूरत जगत अलेख सवारा।
तेहि छाजत मिर्जै जस चाहै। दोऊ जग आपुहि करता है।
जनक जननि बिन सिर्जै पारै। जासें चाहै जनम सँवारै।
आद पिता के पिता न माता। ऐसें सिर्जा वह जिउ दाता।
प्रीतम तोहि गुन ऐसो लोभा। लखै न ऐगुन देखै सोभा।
मित्र मित्र को ऐगुन, पहिचानत गुनमान।
तेरो सकल अवस्था, गुन बूझै पिय प्रान ॥१०॥

दायावन्त है कन्त तुम्हारा । है अपराध छिपावन हारा
जो गुनवन्त अहै जग माहीं । सो ऐगुन हेरत है नाहीं
जेहि गुन सो गाहक गुन केरा । जेहि ऐगुन सो ऐगुन हेरा
आपुहि बीच जो ऐगुन पावा । सो न कहा अपराध परावा
जो अपराध छिपावइ कहा । जोग बसन ता के तन रहा

जो मुख पर ऐगुन कहै, महा मित्र है सोइ ।
ताको मित्र न जानिये, ऐगुन राखै गोइ ॥११॥

राज कुवर जब मोतिय पावा । सात सखा कह नेवत पठावा ॥
निर्तक रहे जीउ उन पाये । धाये सकल अगमपुर आये ॥
सात मित्र राजा कह भेंटा । दरसन बिछुरन सकट मेटा ॥
राजा के कालिञ्जर ठाऊ । मित्रपराक्रम प्रेम तेहि नाऊ ॥
रहा बहुत दिन सो परदेसा । आये नगर धनी होइ भेसा ॥

देखि सून कालिंजरै, मरम कुंवर को पाइ ।
रहि न सका राजा बिनु, लीन्ह जोग चित लाइ ॥१२॥

सुनि के राज कुंवर को जोगू । भा जोगी त्यागा सुख भोगू ॥
प्रेम के साथ लगी बैरागी । रावल भेस लिहैं मारगी ॥
आगम सचर रावेन पाऊ । आगमपुर के भयेन बटाऊ ॥
सीस जटा धरि खप्पर हाथा । आये मिले राज के साथा ॥
भेंटेन प्रेम राय कह राजा । भा मन मुदित मोद उपराजा ॥

भयेउ जोग को राजा, राजा वह गन माह ।
जगपत दाया द्रुम को, सब सिर आयेउ छांह ॥१३॥

सीतल छाहा पावइ सोई । जो तप किहैं जगत मह होई ॥
जेहि मन करता की हर भारी । तेहि नित लागै दुइ फुलवारी ॥
दोऊ बीच दुइ झरना बहइ । सब फल फले दोऊ मह रहई ॥

औ सूंघर नारी तेहि ठाईं । बनी रतन मोती की नाईं ॥
दूसर फल भल को है नाहीं । भल कोमल फल दोउ जग माहीं॥
जो आवै करता दिस, एक भलाई साथ ।
वोही भलाई के सम, दस आवै तेहि हाथ ॥१४॥
कुंवर पास क्रीपा चलि आयेउ । जगपति दुकूल समेत पठायेउ॥
आइ कुवर सग क्रीपा बोला । क्रीपा रस मै भाषित बोला ॥
अहो लला जत साधेउ जोगू । तत अब मानहु परमद भोगू ॥
धरु सारगी गहु क्रीपानू । उद्वित भयेउ मनोरथ भानू ॥
कन्था काढहु पहिरहु बागा । जोग मुकुट धरी बाधहु पागा॥
काढहु माला जोग को, पहिरहु मानिक हार।
दैव दिष्ट सनमुख भयेउ, होहु तुरंग सवार ॥१५॥
काढत माला कन्था राजा । चकचूहत मन मो उपराजा ।
माला गनि सुमिरेउ वह नाऊं । काढत छोह भयेउ तेहि ठाऊं॥
जोग चिन्ह वह कन्था पाया । कढ़त उपेजेउ करुना माया ॥
क्रीपा बूझि कहा हो राजा । नत कन्था मन माला छाजा ॥
जोग न पूजै नजै न जोगू । पूजा जोग लेहू अब भोगू ॥
जल में दूहद आप गा, मारै मोद तरंग ।
दुख को बासर बीतेऊ, अब सुख दिन को रंग ॥१६॥
दुकुल अहै मानुष की सोभा । चीर बाज सोभाधर को भा ॥
बिनु गुन काया अम्बर चालें । काठ कि खरग अहै परयालें ॥
तप औ जोग के आहुति चेरा । करु पवित्र अम्बर तन केरा ॥
बस्तर लेहु भोग के जोगू । जोग जोग अब है गल भोगू ॥
सुमिरन पूजा है तब ताइ । जब लग नहि निथै मन ठाईं॥
है सब बस्तर मनिमय, मन मो करहु अनन्द ।
पहिरहु लखि कै सोभा, लाजै रवि औ चन्द ॥१७॥

सखि एक होइ सचेत पुकारा । धरती उवा सुरुज उजियारा ।
एक कहा मानुष नहिं होई । यह सुर भेस धरे है कोई ॥
एक कहा रजनीपति आही । मेहर अवहिं न छँका ताही ॥
एक कहा यह सोभा धारी । जगत कलेवर जिउ है प्यारी ॥
जेहिं जस रहेउ दिष्ट औ ज्ञानू । तैसा देखा कीन्ह बखानू ॥

कुंवर सनेह सकल मन, उपजेउ रूप विलोकि ।
लोचन चितवन मगु सों, एक न पारै रोकि ॥२५॥

सखिन बचन सुनि कै वह रानी । समुझा आगम सोच समानी ॥
कहा सखिन सो प्रीतम प्यारा । है मोहि सग लगावन हारा ॥
भयें बियाह गवन पुनि होई । नइहर के बिछुड़ें सब कोई ॥
परदेसी की लालप अहई । कहा एक थल पर थिर रहई ॥
परदेसी है कन्त हमारा । देस चलै को रायै पारा ॥

रहनो अन्त न होइहै, नइहर देस मँझार ।
परदेसी है सहचरी, लोना पीउ हमार ॥२६॥

कहेन सोच रानी केहि लागें । यह दिन है हम सब के आगें ॥
हम रोये जनमत ससारा । जनम देस कित रहन हमारा ॥
नइहर नगर अन्त नहिं रहना । सीखु सोइ जेहि सासुर लहना ॥
जनम निबाह भलो पिय पासा । बिनु पीतम न लहै कबिलासा ॥
मिलै नरक जो दरसन पीको । नरक भलो बैकुंठ न नीको ॥

मिलै तहां हो प्यारी, नइहर देस पियार ।
जेहि अस्थान बसेरा, चाहै पीउ तोहार ॥२७॥

जब बनबास राम कहँ भयेऊ । सीता सती गोहेन महँ गयेऊ ॥
सदन नरक भा पिय बहुरातें । बन बैकुंठ भयेउ तेहि जातें ॥
पिय बिनु फीका सुरग जीका । पिय गोहन नीका सुख तीका ॥

जो प्रीतम सँग प्रीत लगावा । सो दोउ जगत बीच सुख पावा॥
अज्ञा माथे ऊपर लीन्हा । पिय कर अज्ञा भेट न कीन्हा॥
पीउ जहा है सुख तहां, जहां न प्रीतम होइ ।
तहां सुखद को दरसना, कहा विलोकै कोइ ॥२८॥
धनि बरात द्वारे जब आयेउ । अमल ठाउ बइठै कह पायेउ॥
बइठेउ कुवर पाट उपराहा । ऊपर सीतल साखी छाहा ॥
सुर नर देखि आसिषा देहीं । निरखैं रूप रहसि फल लेहीं॥
जे तो सुख तजि साधा जोगू । वे तो अलख दिहा सुख भोगू॥
थोरे दिन का कुवर सलोना । लोना अम्बुक कीन्हेउ टोना॥
रूपवन्त राजा कुंवर, सकल बरातिन मांह ।
सुन्दरता पति होइ रहा, मान पाट उपरांह ॥२६॥
जेवन बने सहस परकारा । जेवैं नित भा निर्प हकारा ॥
बइठे लोग आइ सब तहा । दीन्ह ठउर जेवै नित जहा ॥
भोजन केतो सुन्दर होई । उदर भरे पर खाय न कोई ॥
त्रिषा छुधा पर अववै खाई । तब जल जेवन करै भलाई ॥
छुधावन्त कह देहु अहारा । देइ नाक फल सिरजन हारा॥
कहत न पारै रसना, सत पकवान बखान ।
सै सवाद एक कवर मों, मिलै खात पकवान ॥३०॥
बराबरी सो करइ न पारा । बराबरी सूरज ससि तारा ॥
जत जग बीच भले पकवानू । रहे सकल कित करउ बखानू॥
बरनत रसना लोनी होई । जानै सो भच्छै जो कोई ॥
बिनै किहेन राजा के लोगू । है पकवान न तुम सब जोगू ॥
जो पवित्र भोजन करतारा । दीन्ह तुम्हें सो करहु अहारा ॥
जेवै लागे जेवनहिं, ले दाता को नाउं ।
एक कवर में पावैं, सै सवाद तेहि ठाउं ॥३१॥

भा अहा जब बाजन बाजा । राजिन चला बियाहै राजा ॥
तूर दमामा बाजै लागे । अम्बर गये सबद सुर जागे ॥
माडौ के तर कुवर पहूं चा । रहा गगन लग माडौ ऊंचा ॥
हरषि गीत नारी सब गावै । घर घर सो सब देखै आवै ॥
पर त्रिय दिष्ट परत भल नाहीं। तैनइ पर पूतच नवराही ॥

रहा उदित होइ रूप सों, दूलह भान समान।
वोहि समै मांडौ तर, आयेउ चन्द्र छिपान ॥२२॥

उभरसम कह्व देखत नियरें । रम्भा नीरज अपने हियरें ॥
लाज मयक देखि सकुचाना । परगट होइ नाहि बिकसाना ॥
तन तन सो तो रहा वियोगू । मन मन सो तो रहा सजोगू ॥
दुइ मन प्रीत रीत सो जानै । अपने नेह जो मन मो आनै ॥
रवि दूलह मुख परगट कीन्हा । ससि दुलहिन मुख पर पट लीन्हा

पढ़ेन वेद बामन सब, वर कन्या के नाउं ।
रहेउ पर्न नैरित्त जो, भयेउ सफल तेहि ठाउं ॥ २३॥

भा बियाह कन्या बर साथा । आयेउ सुख को मानिक हाथा॥
भयेउ कुवर जगपत को प्यारा। सब काहू मिलि आइ जोहारा॥
दाया सो आगमपुर देसू । ढारा छाह कुवर के सीसू ॥
जैसो राज त्याग तप कीन्हा । वैसो अलख भोग सुख दीन्हा॥
पायेउ बहुत दास औ दासी । सेवक भये अगमपुर वासी ॥

भयेउ नगर वासी कहं, कुंवर प्रान को प्रान ।
सबतें जोरेउ मित्रता, कुवर सनेह निधान ॥२४॥

रहिन सखी सुन्दर जह ताईं । इन्द्रावति के नियरे आईं ॥
सकल सखी मिलि दीन्ह असीसा। प्रीतम छाह रहै तोहि सीसा ॥
इहइ लाभ बियाह मो होई । तोहि लाभ हरषित सब कोई ॥

जुग जुग रहै सोहाग तुम्हारा। चाहै तुम कहु कन्त पियारा ॥
तोहि गुन ऊपर रीझा रहई । कोमल बात प्रीत की कहई ॥
सदा रहै तोहि बस महं, करता के परताप ।
तोहिं पिय को सुमिरन रहै, पियहिं तुम्हारो जाप ॥३५॥
अधरन मो मुसुकानी रानी । होइ अभिमानी बोली बानी ॥
है मोहि रूप बिमल उजियारा। बस मह रहै सो प्रीतम प्यारा ॥
ऐगुन भये न रूठै देऊ । तनु मुसुकाय हाथ कै लेऊ ॥
अमन होइ करउ असमानू । प्रीतम देइ हाथ मह प्रानू ॥
पाहन समा कठोर जो होई । करउ सिंगार होइ जल सोई ॥
अब किछु चिन्ता है नहीं, प्रीतम भा मोहि हाथ।
अंमन कबहु न होइहै, नित रहि है मोहि साथ॥३६॥
सखियन अगुरी दांतन दाबा । प्यारी गरब न हम कहु भावा ॥
मैं न भली मैं भल जो भाषा । तेहि करतार दूर कै राखा ॥
अगिन सीस जो ऊपर करई । देखहु उनत नीच होइ परई ॥
माटिय सीस नीच कै परई । तबहि अनेक लाभ सो भरई ॥
नयन आप कह देखत नाहीं । सूझि परा तेहि सब जग माहीं॥
सो डूबा जो भाषा, मै जग सिर्जनहार ।
पार भयेउ जेइ जाना, है एकै करतार ॥३७॥
प्रीतम आपन नाहिय प्यारी । अहै समुद्र लहर सो भारी ॥
सेवा नाव चढै जो कोई । पार समुद्र सो उतरै सोई ॥
नाव चढत सुमिरै एक नाऊ । कहै उतारहु मोहि सुभ ठाऊ॥
करता आयसु बोहित पायेउ । तबहि समुद्र के ऊपर धायेऊ ॥
पिय सो गरब न कबहू कीजे । आपे सुभायें ऊपर लीजे ॥
गरब बात तुमत बोलिउ, करता करै न कोप।
फिरु प्यारी अभिमान सो, ऐगुन होइ न लोप ॥३८॥

कि घट काज फिरा जो कोई । मनु घट काज न कीन्हा सोई ॥
खुला दुआरा है तब ताईं । रवि न उअै पच्छिम जब ताईं॥
आवही फिरा मानै करतारा । जब लग खोल फिरै को द्वारा ॥
हम मद पियब तियागा प्यारी । पै तुम्हरी अँखिया मतवारी ॥
हम कहँ खीच सुरा हिम आनैं । त्राहि कहैं हम नैन न मानैं

इन्द्रावति समुझा वचन, धरती लायेउ भाल ।
तुम करतार जगत के, दाता दीयनदयाल ॥३९॥

ए प्यारी सुमिरत हौ तोहीं । दरसन बेग देखावहु मोहीं
धन आनन्द राज सुख आही । एकै दाया दरसन चाहो
बहुत वियोग सुरा मैं पीया । सजोगी मद चाहत हीया ॥
सजोगी प्याला अब दीजे । अधर सुधा मतवाला कीजे ॥
आज ठौर आयन मो देऊ । होइ निसक अग भरि लेऊ ॥

मोहिं संजोग सलील को, है प्रीतमा पियास ।
अनुकम्पा कै दीजे, पूजै मन की आस ॥४०॥

भइउ सपूरन आधी कथा । मानहु ज्ञान सिधु मे मथा ॥
तीन सहस चौपाइय भई । देखु आइ फुलवारिय नई ॥
पुनि आगें जो सुख सो रहऊ । तीन सहस चौपाइय कहऊ ॥
हौ अबही थोरे दिन केरा । बात बहुत दिन कर मैं हेरा ॥
विद्या ज्ञान बहुत जेहि होई । अर्थ छिपाने बूझै सोई ॥

नूर महम्मद यह कथा, अहै प्रेम की बात ।
जेहि मन होई प्रेमरस, पढै सोइ दिन रात ॥४१॥



पहिला भाग समाप्त ॥